UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182436
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—556—13-7-71—4,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 / B83J Accession No. P. G. H1991

Author विष्णुदत्त 'तरंगी'

Title जय काश्मीर । 1957

This book should be returned on or before the date last marked below.

जय कश्मीर

जय कश्मीर

विष्णुदत्त 'तरंगी'

•

भूमिका लेखक :

जनरल के. एम. करिअापा

दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

१६५१

०

अमरनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, कनाट सरकस, नई दिल्ली, में मुद्रित व प्रकाशित.

पूछ रहे क्यों इतिहासों से
कैसी रही मरण परिपाटी,
खेले जहां प्राण पर सैनिक
वही तीर्थ है हल्दी घाटी.

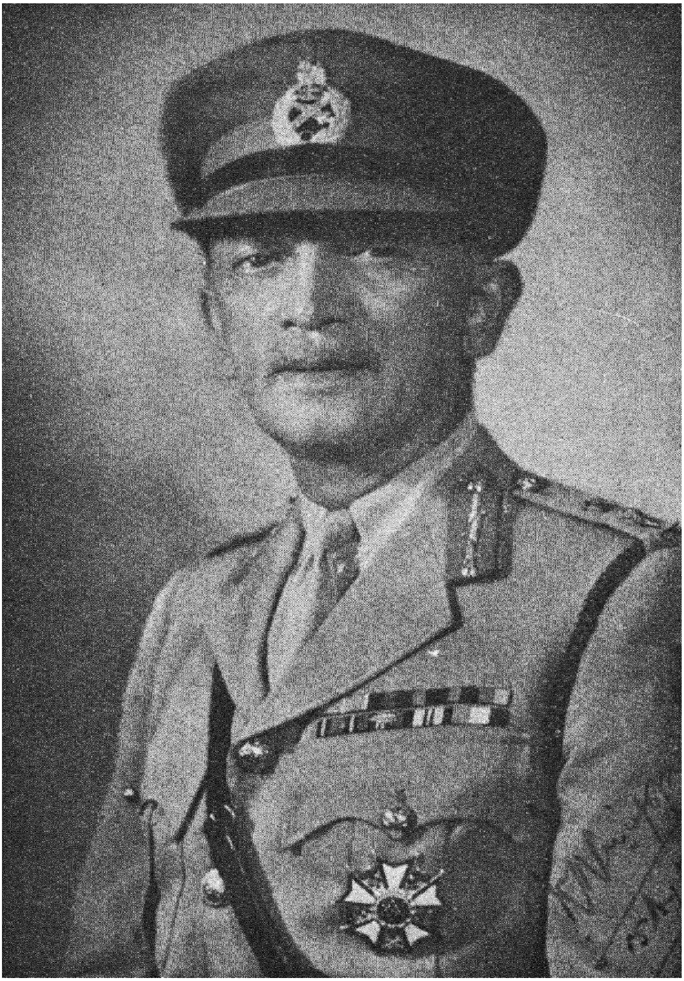

जनरल के. एम. करिआपा

COMMANDER IN CHIEF
सत्यमेव जयते

ARMY HEADQUARTERS,
NEW DELHI.

मुझे यह जान कर खुशी है कि पं. विष्णु दत्त मिश्र 'तरंगी' ने कश्मीर में भारतीय सेना की वीरता के सम्बन्ध में एक काव्य लिखा है. 'जय कश्मीर' नामक यह पुस्तक कश्मीर के युद्ध का कोई सिलसिलेवार इतिहास नहीं है. यह तो हमारे स्थल और हवाई सैनिकों को प्रेरित करने वाले साहस तथा युद्धकाल में उनकी वीरता तथा बलिदान की गाथा है.

कश्मीर की लड़ाई हमारे जवानों की बहादुरी का एक और नमूना था. साथ ही स्वतन्त्र भारत में यह उनकी वीरता की पहली परीक्षा थी. कवि ने सजीव काव्यमय भाषा में बताया है कि हमारे जवान किस प्रकार उस कसौटी पर खरे उतरे. कितने ही अफसरों और सैनिकों ने लड़ाई के मैदान में वीरगति पाई. जननी जन्मभूमि की सेवा के लिए युद्ध में मर मिटने वाले इन वीरों के नामों को आगे की पीढ़ियां हमेशा बड़ी कृतज्ञता के साथ याद रखेंगी.

कवि ने यह ठीक ही किया है कि राजनैतिक उलझनों से दूर रह कर केवल लड़ाई की घटनाओं का हाल लिखा है. देशभक्ति की भावना से भरे हुए किसी भारतीय युवक द्वारा लिखी हुई यह अपने ढंग की पहली पुस्तक है. मुझे आशा है कि इसका खूब प्रचार होगा.

K M Cariappa

जनरल,
कमांडर इन चीफ,
आर्मी.

२६ अगस्त १९५१

निवेदन

जिसकी हर तरंग के पीछे समुद्र का सामर्थ्य है, वह रत्नाकर भारत नव मानिक मणियो से जननी जन्मभूमि का युगयुग शृंगार किया करता है. जननी जन्मभूमि के वर बांकुरों की प्राण-सुरभि की ही यह महिमा है कि मुझ सरीखा पंगु काव्य-सामर्थ्य का संबल पा सका.

सहज शौर्य और सहर्ष बलिदान की भारत की अजर अमर परिपाटी भूस्वर्गा कश्मीर के रनखेतो मे फिर प्रज्वलित हुई. भारत के गणराज्य को गरिमा को रक्षा के लिए भारत के कोने कोने से सपूत आ जूझे. भारत के राष्ट्रीय ऐक्य को कश्मीर के युद्ध ने रक्त-चंदन से चर्चित कर दिया.

ऐसी यशस्विनी कथा को काव्य परिघा मे स्थापित करना, कम से कम मुझे तो सहज कार्य प्रतीत नही हुआ. वीर काव्य परंपरा के जितने भी ग्रंथ हिंदी मे वर्तमान है, वे मैदानों, किलों और पहाड़ियों की लड़ाई का ही वर्णन करते है. कश्मीर की प्रकृति तो हिमाद्रि प्रकृति है. इस कारण कवि के सामने कोई ऐसी परंपरा नहीं थी, जिस से वह रनखेतों की सुगंधि पूर्व आचार्यों से प्राप्त कर सकता. हिमाचल की पार्श्व भूमि मे युद्ध का उल्लेख केवल पौराणिक कथाओं मे ही मिलता है. अतएव अनेक नए शब्दो, मुहावरों का घड़न और प्रयोग भी इस पुस्तक मे पाया जायगा. उद्गम रूपवान भले ही न हो, दर्शनीय तो होता ही है.

आयुधों की दृष्टि से यह कथा निराली है क्योंकि मशीनजीवी युद्ध पर यह प्रथम काव्य है. भारतीय सेना अंग्रेजी कमान से भारतीय कमान मे आई है. अतएव फौज मे अनेक अंग्रेजी शब्द और प्रयोग रूढ़ हो गए हैं, जैसे मार्टर 'माटर' हो गया है, होविटजर 'हौजर' हो गया है. मैंने यथासंभव प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया है. मेरा प्रयत्न यह रहा है कि युद्ध चित्रण मानवीय तल पर हो, जिसमे जन-पौरुष की झांकी हो. अगर मैं आत्मनिवेदन का किसी तरह अधिकारी हूं, तो वह केवल यही है कि यह काव्य महान आदर्शों का जय घोष है.

भारत के प्रधान मंत्री श्री. जवाहरलाल नेहरू प्रारंभ से ही कवि को सतत प्रोत्साहित करते चले आये है. शेरे कश्मीर शेख अब्दुल्ला को इस पुस्तक के प्रकाशन मे निजी दिलचस्पी है. 'जय कश्मीर' की प्रथम पांडुलिपि कवि ने शेख साहब को भेट की थी. वह पांडुलिपि कश्मीर के राष्ट्रीय संग्रहालय मे है.

घनाक्षरी के भीष्म पितामह आचार्य सनेही ने इस पुस्तक को पैनी दृष्टि से परिमार्जित किया है. पं० बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री. श्रीनारायण चतुर्वेदी और श्री. ब्रजलाल बियाणी न अपने बहुमूल्य साहित्यिक परामर्श से पुस्तक निखारने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया. कहानी और उपन्यास लेखक के नाम

से तो हिंदी जगत श्री. रामचंद्र तिवारी से सुपरिचित है, लकिन उन्होंने 'जय कशमीर' के कवि को जिस सूझबूझ और परख से अनुप्राणित किया है, उसका मैं सदैव कृतज्ञ रहूंगा.

केन्द्रीय सरकार के शिक्षा सेक्रेटरी डा. ताराचंद ने इस पुस्तक की पांडुलिपि का अवलोकन कर उपयोगी परामर्श दिए. भारत के नए आदर्शों की जो धारा इस काव्य में बही है, उसके मार्ग स्रष्टा वे ही हैं. मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री पं. रविशंकर शुक्ल, गृह मंत्री श्री. द्वारिकाप्रसाद मिश्र, निर्माण मंत्री श्री. रामेश्वर अग्निभोज, बिहार के अर्थ मंत्री डा. अनुग्रहनारायण सिंह, उत्तर प्रदेश के मंत्री चौधरी चरणसिंह, केन्द्रीय मंत्री श्री. श्रीप्रकाश एवं श्री. सत्यनारायण सिन्हा, राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री. जयनारायण व्यास और मध्यभारत के मंत्री श्री. श्यामलाल पांडवीय ने इस पुस्तक मे जो योगदान दिया है, उसका आभार मैं सहर्ष स्वीकार करता हूं. नागपुर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री. कुंजीलाल दुबे, हिंदू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर श्री. गोविंद मालवीय और हिंदी परिषद तथा द. भा. हिंदी प्रचार सभा के प्राण श्री. मातुरी सत्यनारायण ने लेखक को प्रोत्साहन दिया. 'जागृति' संचालक श्री. मिहिरचंद्र जी धीमान का कवि कृतज्ञ है, जिन्होंने कवि को उसके नैराश्य के क्षणों में संबल दिया.

काव्य के अनुरूप चित्र ढूंढ़ने का कार्य सहज नहीं था. इस पुस्तक मे काव्य के उपयुक्त चित्रों का चुनाव करने के लिए करीब ३० हजार युद्ध चित्र देखे गए. केवल इसी कार्य मे तीन मास लगे. भारत सरकार के रक्षा विभाग के प्रति लेखक अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता है. अपनी असुविधाओं की चिंता न कर ले. क. श्री. स्त्रीनिवासन सहायता के लिए सदैव तत्पर रहे.

पुस्तक के कलेवर मे जो कलापूर्ण चित्र हैं, उन्हे तरुण शिल्पी यशवंतसिंह परमार ने बनाया है. मुखपृष्ठ का कलापूर्ण चित्र भी उन्हीं की कृति है.

स्वतंत्रता दिवस
१५ अगस्त ५१

विष्णुदत्त 'तरंगी'

Hin.

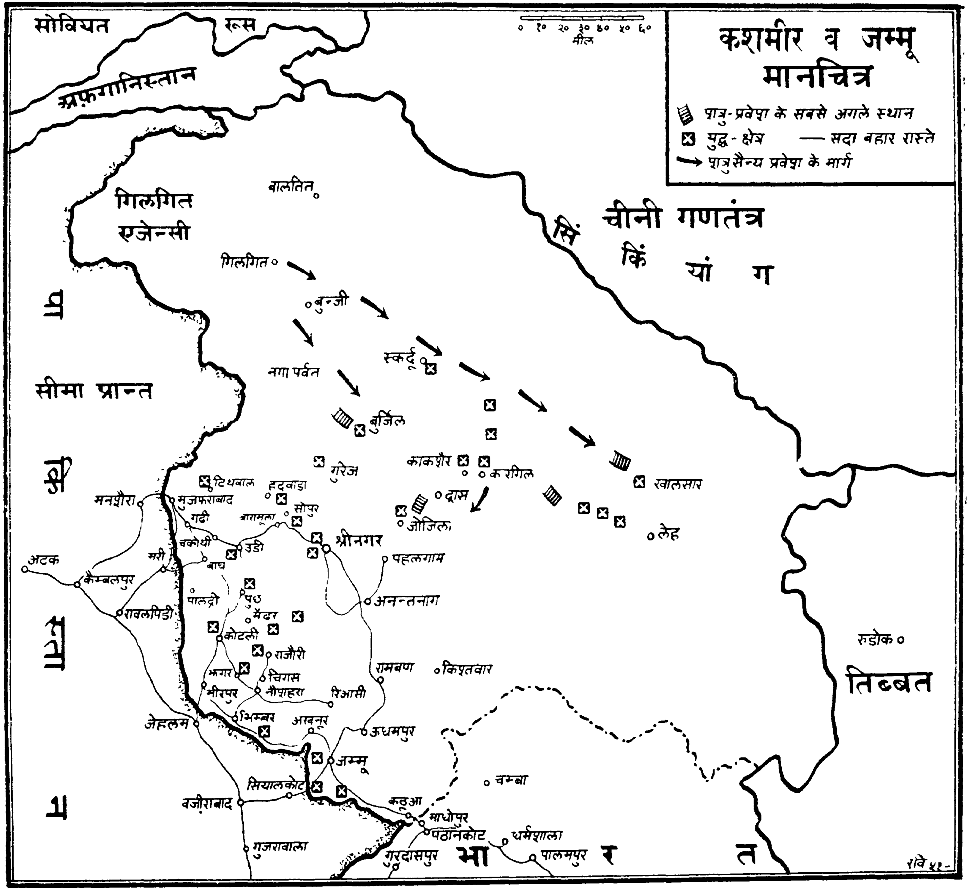
कशमीर व जम्मू
मानचित्र
शत्रु-प्रवेश के सबसे अगले स्थान
युद्ध-क्षेत्र
सदा बहार रास्ते
शत्रु सैन्य प्रवेश के मार्ग
० १० २० ३० ४० ५० ६०
मील
सोवियत
रूस
अफ़गानिस्तान
गिलगित एजेन्सी
बालतित
गिलगित
बुन्जी
नगा पर्वत
स्कर्दू
बुर्जिल
गुरेज
काकशैर
करगिल
द्रास
जोजिला
खालसार
लेह
चीनी गणतंत्र
सिं किं यां ग
सीमा प्रान्त
पा कि स्ता न
टिथवाल
हदवाड़ा
मुजफ़राबाद
गढ़ी
बारामूला
सोपुर
श्रीनगर
पहलगाम
मनशैरा
चकोथी
उड़ी
अटक
मरी
बाघ
कैम्बलपुर
पालन्द्री
पुंछ
अनन्तनाग
रावलपिंडी
मेंढर
कोटली
राजौरी
भिंगार
चिंगास
मीरपुर
नौशहरा
रिआसी
रामबण
किश्तवार
रुडोक
तिब्बत
जेहलम
भिम्बर
अखनूर
ऊधमपुर
जम्मू
सियालकोट
चम्बा
वजीराबाद
कठुआ
माधोपुर
पठानकोट
धर्मशाला
गुजरावाला
गुरदासपुर
भा र त
पालमपुर
रवि ५२-

कश्मीर-युद्ध-कथा

१५ अगस्त १९४७ को काल चक्र में झकझोले झेलने के बाद यह प्राचीन देश अपनी संस्कृति की समग्र गरिमा और अद्वितीय पौरुष परंपरा के साथ छाती तान कर संसार के रंगमंच पर फिर अपने पूर्ण प्रकाश के साथ अवतरित हुआ. रक्त और आंसुओं की एक आंधी आई, कोमलहृदय कश्मीर के दामन पर खून के धब्बे, उसकी वह करुण चीत्कार !

निर्बल की क्रूर से और धरती की बलात्कारियों से रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान और होम, इस देश के धरती पुत्रों का सनातन धर्म है. कश्मीर संकट मे था. १५ अगस्त १९४७ को भारत दो राष्ट्रों मे विभक्त हो चुका था और विभक्त हो चुकी थी उसकी फौज. इतने बड़े देश के अग्निदाह को शांत करन में वह जुटी पड़ी थी. — उस अमूल्य धरोहर को संभालने वाले हाथ कांप रहे थे, किन्तु भारतीय सैनिक की संगीन का तेज अडिग हो सावधान था.

देश के विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान की नीयत कश्मीर हड़पने पर लगी हुई थी. अपने सारे दांव पेच खाली जाते देख अंत में २० अक्टूबर १९४७ को पाकिस्तान की सहायता और इशारे पर लुटेरों की एक बड़ी भारी फौज ने यकायक कश्मीर पर जोर का धावा बोल दिया. कश्मीर राज्य की मुट्ठी भर सेना इस अप्रत्याशित आक्रमण से छिन्न भिन्न हो गई. पाकिस्तानियों ने लूट, मार काट, व्यभिचार, और हत्याओं का तांता बांध दिया. हजारो नर नारियों, शिशुओं, अबोधों और असहायों को निर्दयता के साथ मौत के घाट उतारते हुए लुटेरे डोमेल-बारामूला सड़क से श्रीनगर की ओर तेजी से लपकते बढ़े. आनन फानन मे कश्मीर का तख्ता पलटने लगा. जब तक बाहरी संसार वहां की स्थिति समझे बूझे, तब तक कबाइलियों के दल बारामूला पहुंच कर श्रीनगर की चढ़ाई की तैयारी करने लगे.

ऐसे संकट की घड़ी में महाराजा कश्मीर ने कश्मीर को भारतीय गणराज्य मे सम्मिलित करने और पाकिस्तानी लुटेरों से राज्य की रक्षा करने की प्रार्थना की. कश्मीर के एक छत्र जन नेता शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने इस प्रार्थना का पूर्ण समर्थन किया.

भारत ने कश्मीर को लुटेरों के पंजों से बचाने का निश्चय किया.

तब कश्मीर ने भारत को पुकारा और तब भारत ने कश्मीर की पुकार का वही उचित उत्तर दिया गया था जो रण-बांकुरों को देना चाहिए.

२६ अक्टूबर ४७ की रात इस महान देश के इतिहास में सदैव स्मरण रहेगी. इस रात को इस महान देश ने फिर अपने अतीत गौरव और वर्तमान उत्कर्ष की चकाचौंध छबि देखी. हम जानते थे कि हम एक ऐसा

कदम उठा रहे हैं जिसमें इस देश के लिए बड़े बड़े खतरे उत्पन्न हो सकते हैं. श्रीनगर दिल्ली से वायुमार्ग से पांच सौ मील दूर था. किसी को यह पता न था कि उस रात या दूसरे दिन प्रातः काल श्रीनगर किसके कब्जे में होगा. संसार के इतिहास में कशमीर का युद्ध उन विरल अकस्मात युद्धों में से था, जिनमें बिना किसी तैयारी के, शत्रु की गतिविधि को बिना जाने पहिचाने, केवल अजेय आत्मबल के भरोसे हमारे जवान जूझ गये और युद्ध का जयघोष बोल दिया. सारे भारत की कंपनियों के वायुयान रातोंरात दिल्ली इकट्ठे हो गये. सुबह के झुटपुटे मे कर्नल दीवान रणजीत राय की कमान में "जय हिन्द" बोल पहला दस्ता वायुवाही हो गया.

कुछ घंटों बाद ही जब स्फटिक श्वेत बर्फ पर सूर्य की स्वर्णिम किरणें नाच रही थीं, तब भारत के हवाबाज श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उतर रहे थे. इस समय कशमीर लुटेरों के कब्जे में तेजी से जा रहा था. पांच हजार का शत्रुओं का लशकर श्रीनगर से केवल ३५ मील दूर बारामूला मे था और केवल एक कंपनी (करीब २२० सिपाही और ६ अफसर) उसका मार्ग रोक रही थी.

बारामूला और श्रीनगर के बीच ३५ मील पक्की सड़क ही थी. मोटरों से यह रास्ता केवल सवा घंटे का था.

आन की इस घड़ी मे भारती सपूत कर्नल राय ने देखा कि यदि किसी तरह बारामूला से शत्रु श्रीनगर की वादी मे घुस आया, तो खेल खत्म हो जायगा. पर क्या दो सौ जवानों से ५००० को वह रोक सकेगा? जब योद्धा किसी आदर्श के लिए साहस का बीड़ा उठा लेते हैं, तब एक एक जवान सवालाख का हो जाता है. तीन दिन पहिले उड़ी में ऐसी अभूतपूर्व घटना घट चुकी थी. कशमीर-राज्य-सेना के प्रधान ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह ने केवल १५० जवानों के भरोसे इसी लशकर का रास्ता रूंध रखा था दो दिनों तक. १५० आदमी ५ हजार के लशकर को रोके रहे, जब तक एक भी जवान जिंदा रहा, शत्रु का कदम नहीं बढ़ सका.

कैसे थे वे अडिग पुजारी जिन्होंने हंसते हंसते प्राण उत्सर्ग किये— उनके उत्सर्ग के पुण्य यज्ञ होम के धुएं बारामूला-श्रीनगर सड़क पर मंडरा रहे थे और उनकी छातियों की दीवाल के पीछे भारतीय हवाबाज श्रीनगर मे फौजे उतार रहे थे.

बारामूला के डांड़ों पर होने वाला युद्ध भारत के शौर्य का प्रथम चमत्कार था. दो सौ जवान पांच हजार के लशकर से जूझ रहे थे. दिन भर लड़ाई होती रही. एक एक जवान अपूर्व शौर्य से लड़ा. कर्नल राय ने स्वयं वीर गति पाई, लेकिन हर एक सैनिक मातृभुमि के प्रति अपना कर्त्तव्य पूर्ण करता हुआ डटा रहा. धीरे धीरे कर्नल राय के जवानों मे से अधिकांश ने वीरगति पाई और शत्रु का लशकर २७ अक्टूबर की संध्या को श्रीनगर से केवल साढ़े तीन मील दूर रह गया, परन्तु संध्या होते होते वायुयानों से और कुमुक आ गई और रातोंरात हमला करके भारतीय सैनिकों ने दुशमन को २३ मील पीछे ढकेल दिया.

पर शत्रु की ताकत कम न थी. एक सप्ताह तक बारामूला के डांड़ों पर खांड़े की धार पर हमारे वीर सैनिक शत्रुओं के दल बादलों को रोके रहे. श्रीनगर की रक्षा भारत की आन की रक्षा थी. फिर भी शत्रु तादाद मे हमसे दस गुना था — लुटेरों के और दस्ते उनमें आ मिले थे. वह बढ़ ही रहा था. धीरे धीरे श्रीनगर का हवाई अड्डा केवल आध मील दूर रह गया. इस नाजुक घड़ी में ३ नवम्बर १९४७ को मेजर सोमनाथ शर्मा की कमान में कुमाऊं रेजीमेण्ट के करीब ३०० जवान घमासान में कूद पड़े.

मेजर सोमनाथ शर्मा ने "करो या मरो" का बीड़ा उठाया. मेजर शर्मा जानते थे कि वे काल के अखाड़े में उतर रहे हैं, लेकिन बलिदानी तो अजेय रहते हैं. कर्तव्य के लिए प्राण होम का गर्व ले मेजर शर्मा और उनके कुमाऊं के जवान हवाई अड्डे के बाहर बादगाम में दस्युओं के दल पर जा टूटे. घमासान का रन पड़ा. चार घंटे तक धुआंधार होता रहा. शत्रु सबल था, लेकिन मेजर शर्मा कुमाऊं के जवानों के साथ युद्ध ठानते ही गये.

मेजर सोमनाथ शर्मा और उनके जवानों ने अपूर्व शौर्य से दुशमन के भाले की अनी मोड़ दी. वीर कमांडर सोमनाथ ने रणभूमि में वीर गति पाई. बादगाम के इस युद्ध ने श्रीनगर के हवाई अड्डे को सुरक्षित कर दिया.

लेकिन श्रीनगर के लिए युद्ध जारी था. सरदार पटेल और रक्षा मंत्री सरदार बलदेव सिंह ने स्वयं श्रीनगर जा कर स्थिति का अध्ययन किया. इसी बीच मे पंजाब से ९ हज़ार फुट ऊंचे बनिहाल दर्रे को पार कर भारतीय बख्तरबन्द गाड़ियों (आर्मर्ड कारों) का दस्ता २०० मील का भंयकर सफर पार कर ५ नवम्बर ४७ को श्रीनगर मे दाखिल हो गया. मेजर जनरल कुलवंत सिंह ने सम्पूर्ण युद्ध की कमान अपने हाथ में ले ली.

७ नवम्बर को शेलटनाग का ऐतिहासिक युद्ध लड़ा गया. शेलटनाग श्रीनगर से करीब ७ मील दूर है. दुशमन यहां श्रीनगर-विजय की सज्जा संवार रहा था. ब्रिगेडियर एल० पी० सेन इस युद्ध के कमांडर थे. ब्रिगेडियर सेन के जवानों ने रातोंरात बख्तरबंद गाड़ियों के साथ दुशमन को घेरा. सवेरे की पौ फटते फटते ही वे दुशमन पर तीन ओर से टूट पड़े. ऊपर से भारतीय विमान दुश्मनों को भूनने लगे. मछलियां जैसे जाल मे फंस जाती हैं, वैसे ही शत्रु के लशकर की गति हुई. बारह घंटे रणभूमि में तोपों की गड़गड़ाहट रही. इस अचानक तितर्फा हमले से दुश्मन की कमर टूट गई, और सांझ होते होते रणभूमि अपनी लाशों से पटी छोड़ कर शत्रु भाग निकला. हमारी फौजों ने श्रीनगर से १७ मील दूर स्थित पट्टन पर उसी रात कब्जा कर लिया. सवेरे होते ही फिर भागते हुए दुश्मन का पीछा करते करते हमारे जवान ८ नवम्बर ४७ को बारामूला में दाखिल हो गये. दुश्मन भागता ही रहा और १४ नवम्बर को भारतीय सैनिक फिर उड़ी मे दाखिल हो गये.

भारतीय फौज के पराक्रम ने निश्चय ही श्रीनगर को संकटमुक्त कर दिया.

लेकिन कशमीर प्रांत अब भी संकटग्रस्त था. ५०० से भी अधिक मील के मोर्चे पर शत्रु धंसता चला आ रहा था. दक्षिण मे जम्मू से लेकर उत्तर में टिथवाल और पूर्व मे बालटिस्तान तक वह बढ़ रहा था. कशमीर की भूमि का हजारों वर्ग मील का इलाका शत्रु के कब्जे मे जा चुका था.

वैसे तो कशमीर पर हमला करने वालों के लिए प्रचलित शब्द "लुटेरा" है पर वास्तव में वह पाकिस्तान की ताकत के चट्टे बट्टे थे. न केवल उनका संगठन फौजी था, वरन सैन्य संचालन भी. उनके पास वही शस्त्र और साधन थे, जो किसी आधुनिक फौज के पास होते हैं. दुशमन के इन लशकरों में थे सीमाप्रांत के कबाइली, जहां पर जन्म से ही बच्चे को राइफल पकड़ाई जाती है, कशमीर राज्य सेना के भगोड़े सिपाही, पूंछ और पाकिस्तान के भूतपूर्व सिपाही तथा पाकिस्तान की सेना के सिपाही और अफ़सर. पेशावर की सड़कों में हार पहिना कर जहादी धर्मयुद्ध (जहाद) के लिए विदा किये जा रहे थे. अनुमान है कि २० अक्टूबर को ५०० मील पर धावा करने वाले लुटेरों की तादाद एक लाख से अधिक थी.

कशमीर में एक आधुनिक युद्ध हो रहा था. खांड़े की कसौटी पर भारत अपने आदर्शों की रक्षा करने में आरूढ़ था, जब कि हमें स्वतंत्र हुए मुश्किल से दो महीने ही हुए थे.

दुश्मन को हम केवल श्रीनगर से उड़ी जाने वाली सड़क के किनारे ही पीछे खदेड़ सके थे. शेष कश्मीर में वह पाकिस्तान की सीमाओं से धड़ाधड़ आ रहा था. भारतीय फौज ने बारामूला में शत्रु द्वारा जैसा नर-संहार देखा, उसका स्मरण कर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं. २४ अक्टूबर ४७ को ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह ने जैसा कठिन रन ठानकर उड़ी में लश्कर को रोका, उससे शत्रु क्रुद्ध हो गया. जब वह बारामूला पहुंचा तो उस नगर की समृद्धि उसने मिस्मार कर दी. बिना किसी भेदभाव के बाल वृद्धों का वध, नारियों का बलात्कार व अपहरण और हत्या, संपत्ति की लूट, मकानों में आग! बारामूला की भूमि निरीह और अबोधों के रक्त और आंसुओं से सन गई. इसी क्रूर काण्ड को बर्बरों ने "जश्न" या खुशी का उत्सव कहा. नैशनल कान्फ्रेन्स के कुछ वीरों ने लुटेरों का सामना किया. लेकिन जहादी तो खून के प्यासे थे. उन्होंने नेशनल कान्फ्रेन्स के नेता २४ वर्षीय मकबूल शेरवानी को ईसा की तरह काठ से बांधकर तिल तिल करके काट डाला, पर उस बहादुर ने भारत के साथ मिताई का जो कौल लिया था, उसमें जरा भी बंक नहीं आया.

यद्यपि हमने श्रीनगर को संकटमुक्त कर लिया, पर दुशमन का घेरा कशमीर की घाटी में तंग होता जा रहा था. चारों तरफ त्राहि त्राहि मच रही थी. ऐसे ही समय मे ४० हजार शरणार्थियों को अपनी सुरक्षा मे लिये हुए ब्रिगेडियर प्रीतम सिंह ने पुंछ (पुस्तक में पूंछ) मे प्रवेश किया. उनके साथ मुश्किल से ६०० सिपाही थे. पूंछ मे पैठते पैठते दुशमन ने इस सब काफिले को चारों तरफ से घेर लिया. ३००० वर्ग मील का इलाका पूंछ के रिसाले और भारतीय सेना के निकटस्थ कुमुक केन्द्र के बीच मे था.

६०० जवानों के बल पर पूंछ की दस वर्ग मील जमीन मे प्रीतम सिंह ने कदम रोप दिया.

पूंछ का घेरा भारतीय इतिहास मे भारतीय सैनिकों के शौर्य, धैर्य और साहस की ऐसी कहानी है जिसके सामने थर्मोपोली या तोब्रुक महासिरा भी हेच है. इसलिए कि पूंछ का घेरा सफलतापूर्वक उठाया गया. एक वर्ष तक पूंछ की इस दस वर्ग मील जमीन मे भारत की शान आन का विजय केतु फहराता रहा. शत्रु ने ७ हजार जवानों की कुरबानी दी, पर पूंछ नगरी अजेय रही.

स्वतंत्रता के नवप्रभात मे जननी जन्मभूमि की मान रक्षा का कौल प्रतापी ब्रिगेडियर प्रीतम सिंह ने उठाया. रात दिन ६ हजार स्वयंसेवकों की मदद से सात दिन तक उस तंग वादी मे हमने संसार का सबसे अद्भुत हवाई अड्डा तैयार किया. ब्रिगेडियर प्रीतम सिंह ने शरणार्थियों मे से स्वयंसेवक सेना तैयार कर ली. पूंछ ने चुनौती स्वीकार कर ली. सौ सौ मील उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में सभी ओर दुश्मन घेरा डाले था, लेकिन जो जीवित रहने का बीड़ा उठा लेते है, उन्हे कौन माई का लाल जीत सकता है?

२१ नवम्बर ४७ को पूंछ घिरा और ८ दिसम्बर को भारतीय वायु सेना के उपप्रधान एयरवाइस मार्शल मुकर्जी, एयर कमोडोर मेहर सिंह द्वारा चालित दो-सीटा वायुयान से पूंछ मे उतरे. १० दिसम्बर को पहिला डकोटा पूंछ मे उतरा. यद्यपि भारत से वायु संबंध हो गया, लेकिन पूंछ फिर भी शिकंजे में था. पूंछ की घाटी का क्षेत्रफल केवल १० वर्ग मील था, इसके चारों ओर गोल चक्कर मे ६ से ८ हजार फुट तक ऊंची पहाड़ों की श्रेणियां थीं. इन पहाड़ों के एक घेरे के पीछे दूसरा पहाड़ों का घेरा था और उसके पीछे तीसरा. भीतर के घेरे के पहाड़ हमारे हाथ में थे और बाहिर के दो घेरों के ऊंचे पहाड़ दुश्मन के हाथ में. इन पहाड़ों पर वह १० सेर का गोला पांच मील तक फेकने वाली दूरमार तोपें चढ़ा लाया. इस कारण हवाई जहाजों का पूंछ में उतरना हर समय तो संभव नहीं था, किंतु पूंछ को लड़ते हुए अस्तित्व कायम रखना था.

ब्रिगेडियर प्रीतम सिंह ने एक वालंटियर सेना बनाई और दूसरी ओर उन्होंने पूंछ की जीवन रक्षा के

लिए दुश्मन के इलाके से छापे मार कर रसद की कमी को पूरा करने की योजना लागू कर दी. फौज के दस्तों की हिफाजत में स्वयंसेवक खड़ी फसलें काट कर लाने लगे. दुश्मन चौकन्ना होगया. रसद के लिए युद्ध आरंभ हो गया. कितनी भिड़न्तें हुईं — एक बार तो हमारे ६० आदमी खेत काटने के युद्ध मे मारे गये, पर पूंछ ने जीवित रहने का संकल्प कर लिया था.

शत्रु की छाती में पूंछ बरछे की तरह धंसा था. वह पूंछ को जिन्दा नहीं रहने देना चाहता था. वह और बड़ी दूरमार तोपें ले आया जो २५ पौंड का गोला साढ़े सात मील तक फेंकती थीं. १० मार्च ४८ को आखिरी भारतीय डकोटा पूंछ से चला ही था कि हवाई अड्डे पर दुश्मन के गोले पड़ने लगे. रात को शत्रु ने २०० गोले हवाई अड्डे पर फेंके. हमारे पास पूंछ में दूरमार तोपे नहीं थी, जिनसे कि हम जवाब दे सके. वायु सेना ने बहुत चेष्टा की, लेकिन दुश्मन कुछ ऐसे ढब से डटा था कि उसकी तोपों ने हवाई अड्डे को अपनी मार मे ही रखा.

पूंछ का वायु संबंध भी कट गया, पूंछ पूरी तौर पर घिर चुका था.

भारतीय सेना के पास दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने वाली तोपे तो थीं पर उन्हे पूंछ म उतारा कैसे जाय? हवाई अड्डे पर गोले बरस रहे थे. एक महीने तक दुश्मन की नजर बचाकर उतरने की सारी कोशिशे बेकार गई.

तब भारतीय साहस के सजीव सपूत एयर कमोडोर मेहर सिंह ने बाजी बदी.

२१ मार्च ४८ की रात को धुंधले प्रकाश मे मीलों ऊंचे उड़ते हुए चार डकोटा हवाई जहाज पूंछ रवाना हुए. दुश्मन ताक ही रहा था कि कब हमारे हवाबाज उतरने की कोशिश करे और वे गोले दागे. लेकिन मेहर सिंह के कौशल का उसको क्या पता? जब तक तीन हवाई जहाज ऊपर ही उड़ते रहे, तब तक चौथा हवाई जहाज गुपचुप अंधेरे मे ही पूंछ मे उतर गया. जब यह हवाई जहाज लौट कर ऊपर आया, तो दूसरा उतर गया. दुश्मन यह समझता कि हवाई जहाज मंडरा ही रहे हैं. पर अंधेरे मे अदम्य साहस से भारतीय हवाबाजों ने बड़ी दूरमार तोपे उतार दीं. इन तोपों से हमने दुश्मन को इतना खदेड़ दिया कि उसके गोले हवाई पटरी तक नहीं पहुंच सके.

पूंछ के लिए युद्ध जारी था. शत्रु ने बहुत चेष्टा की पर पूंछ की दस वर्ग मील जमीन उसके लिए काल की हाट बन गई. कुंठित शत्रु ने ताकत बटोरी और पूंछ के घेरे के नौवें मास म ब्रेनगन, मशीनगन, माउनटेनगन हाविटजर, मार्टर, पच्चीस पाउंडर लेकर दस हजार पठानों ने पूंछ पर धावा बोला. पर पूंछ की मेड़ और सीमा हनुमान की पूंछ की तरह प्रीतम सिंह ने बांधी थीं. लहरों पर लहरों की तरह कितने हमले हुए, लेकिन पूंछ के रक्षक अडिग रहे. पूंछ के डांड़ों पर दुश्मन की लोथों के अम्बार थे. २६२८ शत्रु पूंछ को सर करने के यत्न मे मारे गये और ३८७६ घायल हुए.

पूंछ मे भारतीय जीवट की फिर एक नई जोत जगी—पूंछ के रक्षक सब तरफ से घिरे थे, लेकिन उनकी पैनी संगीनों ने शत्रु को बार बार रौंद रौंद कर कुचल दिया. जनरल करिआपा ने पूंछ को जोड़ने का बीड़ा उठाया. ३ हजार वर्ग मील बीहड़ पहाड़ों में शत्रु को अनेक युद्धों में परास्त करते हुए ब्रिगेडियर यदुनाथ सिंह की कमान में बढ़ते बढ़ते, भारतीय फौजे २० नवम्बर ४८ की रात को पूंछ से कुछ ही मील दूर रह गईं. उनके बीच मे ६ हजार फुट ऊंचा पहाड़ मीर गाजी था, जिस पर दुश्मन मजबूती से कायम था. जाड़े की शीत कटीली हवाओं में बरफ़ पर रेंगते भारतीय सैनिक चोटी पर चढ़ गये. सुबह के झुटपुटे में दुश्मन के संतरी ने पुकारा "कौन?" भारतीय जवान ने कानाफूसी करके कहा—"अपने आदमी हैं." संतरी का तभी जवान ने संगीन से काम कर दिया. हमारे जवान संगीने चढ़ा कर शत्रु पर टूट पड़े. शत्रु भाग खड़ा हुआ.

२१ नवम्बर ४८ को ठीक एक वर्ष बाद पूंछ का घेरा टूट गया. घेरा टूटते ही पूंछ का रिसाला घमसान में जुट गया और दूर दूर तक दुश्मन का सफाया कर दिया.

पूंछ जैसी घटनायें भारतीय इतिहास में विरल हैं. भारतीय फौजें चुप नहीं थीं. अक्टूबर ४७ में जब हम कश्मीर पहुंचे, तब जाड़े का मौसम आ चुका था. हम यकायक अकस्मात्-युद्ध में कूदे थे, जब कि शत्रु पूरी तैयारी के साथ चढ़ा था. ठीक बड़े दिन को २४ दिसम्बर के सवेरे ६ हज़ार की शत्रु पलटन ने झंगर पर धावा बोला और ३ हज़ार ने नौशेरा पर. झंगर में मुश्किल से १०० भारतीय सैनिक थे और नौशेरा में ब्रिगेडियर उसमान के पास हज़ार से अधिक आदमी नहीं थे. झंगर का पतन हो गया पर नौशेरा को उसमान के जवानों ने बचा लिया. सर्दी और बढ़ी और झड़पें होती रहीं. २० जनवरी ४८ को कड़कड़ाते जाड़े मे जनरल करिआपा, और मेजर जनरल कुलवंत सिंह नौशेरा पहुंचे. १ फरवरी ४८ को उत्तर में दो बटालियनों से हमला बोला गया. दुश्मन बड़ी हिम्मत के साथ लड़ा लेकिन भारतीय जवान उन पर तगड़े पड़ते गये. दस बजे तक वह १५० मरे और २०० अधमरे छोड़ भाग निकला.

इस आकस्मिक आक्रमण से शत्रु के दांत इस प्रकार खट्टे हुए कि उसने नौशेरा को जीतने के लिए ६ फरवरी ४८ को १५ हज़ार के लशकर के साथ धावा बोल दिया.

कश्मीर की लड़ाई का यह सबसे बड़ा युद्ध था. सुबह के झुटपुटे मे ४-५ हजार के लशकर ने नौशेरा के दक्षिण से, ३-४ हज़ार ने उत्तर से, नौशेरा के दांये बांये बाजू पर और ५-६ हज़ार ने सामने से भंयकर शस्त्र-सज्जा के साथ चढ़ाई करदी.

पहिले हल्ले मे जैसे दुश्मन के लशकर की लहर हमारे एक ओर के मोर्चे मे ५० गज तक धंस आई. एक एक जवान रन में जूझ गया. किर्चें, कृपाणे और खुकरियां खेल उठीं. नंगी तलवारें लिये हुए पठानों पर हमारे जवान संगीनों से टूट रहे थे.

तोपें आग उगल रही थीं. भारतीय लड़ाकू वायुयान शत्रु पर धुआंधार बमबारी कर रहे थे, लेकिन शत्रु चीरता चला आ रहा था. बाजी कांटे पर सधी थी.

तभी भारतीय तरुणाई के प्रचण्ड साहस के रूप मे नायक यदुनाथ सिंह खाइयों में से ब्रेनगन चलाता हुआ बाहर कूदा. रुद्र जैसा भयंकर वीर यदुनाथ उस घमासान में कौंध गया. उसका एकएक साथी मारा जा चुका था. नौशेरा की बाजी के जीत हार के द्वंद्वज क्षणों में महाकाल के रूप मे ५०० की टुकड़ी पर अकेला यदुनाथ चढ़ बैठा--और ऐसा चढ़ा वह रण बांकुरा कि दुश्मन हौसला खो बैठा, हार जीत मे बदल गई. कुछ ही मिनटों के बाद जब ब्रिगेडियर उसमान ताजी कुमुक के साथ जूझता हुआ बढ़ा, तो यदुनाथ सिंह का वीर शरीर पड़ा हुआ था और उसकी छाती मे ग्यारह ग्यारह गोलियां छिदी हुई थीं.

ब्रिगेडियर उसमान अपने जवानों के साथ सीधा रन में कूद पड़ा. दो घंटे तक ऐसा भीषण युद्ध हुआ, भारतीय सैनिक कुछ ऐसी आन बान शान से लड़े कि शत्रु जन और शस्त्रबल होते हुए भी मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ. हजारों कबाइली मैदान में पड़े थे और हजारों सिसक रहे थे. दुश्मन भाग रहा था, हमारे हवाई जहाज और जवान उसका पीछा कर रहे थे. उस दिन और रात भागते हुए शत्रु को बीनबीन कर भून कर भारतीय जवानों ने शत्रु के गरूर की अनी तोड़ दी. दो हजार दस्युओ की लोथें रण खेतों में पड़ी थी-- घायल शत्रु हजारों की तादाद में दूरदूर तक अधमरे पड़े थे.

नौशेरा की विजय स्वतंत्र भारत के पराक्रम की प्रथम कीर्ति है. ब्रिगडियर उसमान ने जिस अभय और साहस से इस रण का संचालन किया, वह युद्ध कला की एक नई कलाकृति है. इसलिए कि नौशेरा में न केवल रन खेत की लड़ाई जीती गई, वरन आदर्शों की भी. इस युद्ध के फलस्वरूप ब्रिगेडियर उसमान

"नौशेरा के सिंह" कहलाए.

कुछ महीने बाद झंगर के घमसान में ब्रिगेडियर उसमान नें वीर गति पाई. देश ने राष्ट्र के वीर सपूत को अपने हृदय में स्थान दे वीर सैनिक को अमर बना दिया.

नौशेरा की पराजय और पूंछ के सफल घेरे ने जम्मू क्षेत्र मे शत्रु की आक्रमण धारा भोथरी कर दी, पर वह निराश नहीं था. कशमीर की वादी के उत्तर में टिथवाल, गुरेज, कारगिल, स्कार्डू फतह करता हुआ, वह लद्दाख की राजधानी लेह के सामने आ खड़ा हुआ. ४०० मील से अधिक लंबान के मोर्चे पर वह आक्रमण कर रहा था. ऐसे इलाके में जहां बारह मास बर्फ़, और पहाड़ों की कम से कम ऊंचाई दो मील थी. श्रीनगर को उत्तर और पूर्व से घेरा जा रहा था. लेह के फतह होते ही ३० हजार वर्ग मील प्रकृतिधनी इलाका शत्रु के कब्जे में जाने का खतरा था.

नकशे में जरा लेह की स्थिति देखिये. लेह लद्दाख सूबे के पठार पर करीब ढाई मील ऊंचाई के इलाके में बसा हुआ है. भारत की सीमाओं में लद्दाख का एक मात्र इलाका है, जो कि बुद्ध के रंग में रंगा है. उसे "छोटा तिब्बत" कहा जाता है. तथागत ने लद्दाखियों को जीवन में वह गरिमा दी है कि लद्दाख में कोई अपराध नहीं होता और न वहां जेल है और न थाना. इस सीधे सरल, सत्य और अहिंसा में परम विश्वासी देश में शत्रु की खबर सुनकर कशमीर वादी के सेनाध्यक्ष मेजर जनरल थिमाया (पुस्तक में थिमैया) का चिंतित होना स्वाभाविक था.

इसलिए कि लेह की रक्षा संस्कृति की रक्षा थी. बुद्ध और गांधी से अनुप्राणित यह पावन भूमि वह है जहां से सिंधु अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ करती है. लेकिन यह सब इलाका २५ हजार फुट ऊंचे पहाड़ों से ऐसा घिरा है, जैसे कि प्रकृति ने स्वयं उसे गिरिशृंग कोट दिये है. बारहों मास बर्फानी इस इलाके को पहुंचने के दो ही मार्ग थे, पहिला मार्ग तो श्रीनगर से प्रारम्भ होता था, जो जोजिला की १३ हजार फुट ऊंची घाटी को पार करते हुए द्रास होते हुए लेह पहुंचता था. यह रास्ता २३० मील लंबा था और इसमें केवल ४० मील मोटर सड़क थी, और शेष रास्ता बीहड़, पगडंडी, लेकिन इस रास्ते का द्वार जोजिला घाटी थी, जिस पर शत्रु काबिज था. दूसरा रास्ता पंजाब में मनाली कस्बे से प्रारम्भ होता था और यह मार्ग भी वक्र था—सारे के सारे दो सौ मील. साधारणतः दोनों मार्गों से लेह आठ सप्ताह के पहिले नहीं पहुंचा जा सकता था. लेह में भारत के कुल २ अफसर और १५ जवान और उधर शत्रु लेह से १४ मील दूर पर इकठ्ठा हो रहा था. लेह संकट में था.

तब भारतीय पौरुष के उज्ज्वल सपूत मेहरसिंह ने बर्फानी चोटियों के अनजाने पथ से होकर लेह को वायुमार्ग से जाने का निश्चय किया. आज तक संसार के वायु यात्रा के इतिहास में ऐसी साहसिक उड़ान नहीं हुई. पांच मील ऊंचे पहाड़ों की चोटियों से निर्मित पगडंडियों में से गुजरकर रास्ता निकाल ले जाना, अपौरुषेय पराक्रम की घटना है. लेह को अगर बचाना था, तथागत की पवित्र भूमि की यदि रक्षा की जा सकती थी, तो उसका एक मात्र उपाय वायु मार्ग था.

लेकिन कैसा औघड़ है, अघड़ वह लेह का वायु मार्ग, पहाड़ पर पहाड़, बर्फ पर बर्फ, बर्फ की ही आंधी, बर्फ के ही आकाश और उसके बीच में बर्फीले पहाड़ों की घाटियों में. अंधकार और अंधकार! संसार में अनेक वायुमार्ग खांचे गये, पर कैसा दुरूह, दुर्द्धर्ष, वक्र, बंक, कुटिल वायुमार्ग मेहरसिंह ने खांचा. जननी जन्मभूमि के परीक्षा के क्षणों में मेहरसिह की वायुगामी जवानों ने लेह के अंधकारमय भविष्य में प्रकाश का सूर्योदय फैला दिया.

२४ मई ४८ को जनरल थिमाया के साथ मेहरसिह ने पर्वतों के राजा हिमालय के २३ हजार फ़ुट ऊंचे गिरि चोटियों को चीरते हुए लेह के लिए उड़ान भरी. पांच मील की ऊंचाई पर हवा इतनी विरल हो

जाती है कि सांस लेना कठिन है. लेकिन जब ईश्वर किसी से कोई बड़ा काम कराता है, तब वह उसे उतनी शक्ति भी दे देता है. आक्सीजन भी नहीं थी, लेकिन इससे क्या? मेहरसिंह ने उड़ान भरी, पौरुष को जैसे दैव ने पंख दिए. जीवन और मौत के सघन क्षणों में झूलते हुए आखिर भारतीय वायुयान आकाश की छाती को चीर कर लेह में उतर गया. भारतीय वायुसेना और राष्ट्र के इतिहास का यह गर्व दिवस था.

जनरल थिमाया ने लेह की हालत देखी. वायुमार्ग से फौजें ११,५०० फ़ुट की ऊंचाई पर स्थित इस अड्डे पर उतरने लगीं—जहां हवाई जहाजों के इंजिन बंद नहीं किए जा सकते क्योंकि बंद होते ही वह बर्फा जायं और फिर न चलें. फिर भी २५ हजार फ़ुट की ऊंचाई पर हवाई जहाजों से ढोढो कर फ़ौज और सामान धड़ाधड़ लेह मे पहुंचाया जाने लगा. लद्दाखियों के स्वयं सेवक तैयार हुए. स्वतंत्रता की रक्षा के लिए तथागत के पुजारियों ने राइफल संवारी. दुश्मन लेह के द्वार पर था.

११ जुलाई ४८ को लेह पर आखिर शत्रु ने चढ़ाई बोल ही दी. तोपों, पहाड़ी तोपखानों, माटर, हाविजर से लैस हो एक हजार से अधिक शत्रु ने लेह की ओर धावा बोला, पर उनका रास्ता चट्टान की दीवाल की तरह गुरखों ने रोक दिया. शत्रु का हमला यद्यपि व्यर्थ कर दिया गया, पर वह घात में था. भीषण अंधड़ अंधाड़े के जिस वायुमार्ग से लेह का संबंध था, वह मौसम की मौज का शिकार था. इसलिए जरूरी था कि लेह से स्थल संबंध कायम किया जाय.

जैसा कि हम पहिले कह चुके है कि लेह को दो ही स्थल मार्ग है—एक जोजिला घाटी हो कर श्रीनगर से और दूसरा मनाली हो कर पंजाब से. मनाली का रास्ता तो हमारे कब्जे मे था, लेकिन ऐसा दुरूह था कि वह वायुमार्ग से भी अधिक अविश्वसनीय था. वह घने जंगलों और बीहड़ का मार्ग था. अतएव लेह से जोजिला घाटी हो कर ही मार्ग स्थापित करना आवश्यक था. इसलिए भी कि जबतक जोजिला घाटी पर शत्रु का कब्जा है, कभी भी वह कश्मीर की वादी मे उतर सकता है.

उत्तरी ध्रुव जैसे इस सर्दीले प्रदेश मे, जाड़े का मौसम आ रहा था. जाड़े मे जोजिला जम जाती है और फिर उसे कौन लांघ सकता है? और यदि जोजिला पर कब्जा न हुआ, तो शत्रु जाड़े मे लेह विजय के स्वप्न देख सकता है.

जोजिला भेदी जायगी—वह जोजिला जिसका नाम ही "बर्फ़ानी अंधड़ का दर्रा" है. श्रीनगर से ६४ मील उत्तर पूर्व में यह दर्रा, संसार के उन भयानक मार्गों में से है, जहां प्राण हथेली पर ले बढ़ना पड़ता है. जोजिला की घाटी, श्रीनगर की वादी और लद्दाख की वादी के बीच का मुख्य द्वार है. इस घाटी मे १३ हजार फ़ुट से १६ हजार फ़ुट ऊंचे पहाड़ों के बीच तंग और अंधाकुप्प रास्ते है, जहां हर समय बर्फ की बारिश, बर्फ के तूफानों के अंधड़ और बर्फ के चट्टानों के हिम प्लावन का राज्य है. मीलों लंबी और मीलों ऊंची इस घाटी को खुश्की के मौसम मे भी पार करना कठिन है.

ऐसी जोजिला को भेद करने का बीड़ा जनरल थिमैया ने उठाया. १३-१४ सितम्बर ४८ को सिख, गुरखों और मरहठों ने जोजिला को लड़ते लड़ते भेद जाने का धावा बोला. हिम के गलाव कीचड़ और चट्टानों मे रेंगते, रौंदते मरहठे जोजिला के मुख्य प्रवेश द्वार से केवल ३० गज दूर ही रह गये थे कि दुश्मन अपनी पूरी ताकत से धुआंधार करने लगा.

दुश्मन चट्टानों, खोहों, मोड़ों मे ऐसे ढब और ढंग से डटा हुआ था कि न तोपें उसकी हानि कर सकती थीं न वायुयान. जोजिला संगीनों की नोक से न भेदी जा सकी. दुश्मन चोटियों गिरि कंदराओं मे जमा था.

लेकिन जोजिला भेद कर हमें लेह पहुंचना था.

तभी भारतीय जवानों ने अपने साहस और सूझ बूझ से संसार की रण रंजना के इतिहास मे एक नया

उदाहरण पेश किया. टैंकों में सवार जवान जोजिला भेदेंगे. केवल टैंक एक मात्र उत्तर दे सकते थे, दस्युओं को, जो जोजिला के आंचल में अछूते बैठे मार्ग अवरुद्ध कर रहे थे. पर क्या १६ हजार फुट की ऊंचाई तक टैंक पहुंचाये जा सकेंगे? और टैंकों को जोजिला तक लाने वाली सड़क क्या इन गिरि श्रृंगों की छाती में खांची जा सकेगी?

असंभव को संभव बनाते हुए मेजर तुंगराज की सपरमैना पल्टन जोजिला-बेध के लिए सड़क तैयार करने में जुट गई. शीत ऋतु के आने में केवल ६ सप्ताह थे और इन्हीं ६ सप्ताहों में उत्तुंग श्रृंग की चट्टानों को आरे की तरह चीर कर, तुंगराज के जवानों को मार्ग बनाना था. सपरमैना जुटे--बर्फ में दिन और रात! संसार की युद्ध कला मे एक नया अध्याय जोड़ा जा रहा था. वह ऊंचाई जिसे केवल वायुयान ही भेद सकते थे, टैंकों से भेदने की तैयारी हो रही थी. ३ मील की ऊंचाई पर हिमाच्छादित पर्वतों में टैंक--टैंक के आविष्कारकों को भी यह पता न था.

दक्खिन में जम्मू से सात टैंक गुपचुप चल पड़े. जम्मू से चलतेचलते वे २६० मील का रास्ता पार कर बाल्ताल पहुंचे और चार मील में ३००० फुट ऊंची सर्पाकार सड़क पर लुढ़कते, उभरते--अक्टूबर ४८ के दूसरे सप्ताह रामबन का जर्जर पुल लांघते हुए टैंक जोजिला के आंगन में आ खड़े हुए. २० अक्टूबर को जोजिला भेद की पहली तिथि निश्चित हुई. लेकिन उस रात धुआंधार बारिश और बर्फ़ पड़ती रही, कुहरा बादलों ने श्वेत जोजिला पर भी गहरे अंधकार की चादर डाल दी. प्रकृति जैसे जोजिला की रक्षा पर तुली थी.

पर सिंहों के रास्ते कहीं रोके जा सकते हे? जोजिला भेदी जायगी और दिन दहाड़े भेदी जायगी.

१ नवम्बर ४८ को बादलों से झुके और हिम पात से गरजते वायु मंडल में, भारत के टैंक जोजिला भेद करने के लिए चल पड़े. बर्फ के भीषण अंधड़ अंधाड़े आ रहे थे. हमें पता नहीं था कि जोजिला से टैंक निकल भी सकेंगे या नहीं.

घर्र्घर्र् कर के टैंक जोजिला में घुस पड़े. हिम की कीच, गलाव, खाइयां और खंदकें पार करते हुए टैंक जब जोजिला में धंसे, तो दुश्मन हक्का बक्का रह गया. आग के बादल टैंकों पर टूटने लगे, लेकिन वे लौह दैत्य? उन पर क्या असर! और तभी टैंक की तोपें गड़गड़ा उठीं. गिरि कंदराओं में टैंकों की मारामार से शत्रु के छक्के छूट गये. तोपों की गड़गड़ाहट के छाते के नीचे भारतीय सैनिक किर्च चढ़ाये जोजिला में धंसने लगे.

अजेय जोजिला की छाती को चीरते हुए टैंक बढ़ रहे थे और उनका सरदार था पटियाला का वफ़ादार वचनसिंह. दोपहर होते होते पौरुष और साहस के कदमों पर सिसक रही थी--घाट घाटियों की पट-रानी--जोजिला.

जब शत्रुओं ने भागकर अपने कमांडर को खबर दी कि जोजिला में भारतीय टैंक चढ़ आए हे, तो उसने कहा--"असंभव, तुम लोग झूठे हो. जोजिला में टैंक फरिश्ते भी नहीं ला सकते, कहीं ऐसा हो सकता हे?"

शत्रु के कमांडर का यह अविश्वास अधिक समय तक कायम नहीं रहा होगा, क्योंकि जिस ड्रास में बैठा वह यह अविश्वास प्रकट कर रहा था, उसी ड्रास में वही टैंक हिम प्लावन में गरजते हुये जा धंसे और गुरु नानक का जन्म दिवस सिक्खों ने ड्रास विजय कर मनाया. कश्मीर वादी के सेनापति जनरल थिमैया अभूतपूर्व विजय के उत्सव में स्वयं शामिल थे.

जोजिला के युद्ध में शत्रु के करीब ४०० सिपाही मारे गये और करीब ३०० घायल हुए. हजारों तो तीन मील की ऊंचाई पर टैंक का नाम सुनते ही भाग गये.

ड्रास से करगाइल और खलात्सी से दुश्मनों का सफ़ाया कर २६० मील का संसार का सबसे ऊंचा मार्ग

पार कर वही टैंक लद्दाख की राजधानी लेह में दाखिल हो गये, जहां सारा लद्दाख सजल कृतज्ञता के नयनों से भारतीय जवानों के अभिनन्दन को उपस्थित था.

जोजिला की विजय से भारतीय फौजों ने १० हजार वर्ग मील का इलाका शत्रु के जबड़े से खींच लिया, ३० हजार वर्ग मील के लद्दाख को सुरक्षित किया और मध्य एशिया से आने वाले प्राचीन व्यापार मार्गों को निरापद कर कश्मीर की जीवन मंदाकिनी पूर्ववत बहा दी.

यह है जोजिला भेद की कथा.

जोजिला भेद से श्रीनगर की रक्षा के लिए जो लौह पंक्ति भारतीय फौज तैयार कर रही थी, वह फिर भी पूरी नहीं हुई. उत्तर पूर्व से तो शत्रु को हटा दिया गया, वह उत्तर पश्चिम से श्रीनगर की तरफ घुसने के लिए वह बड़ी सैनिक चेष्टायें कर रहा था. यह चेष्टायें सफल हो रही थीं, क्योंकि जिस समय हम जोजिला भेदने की कोशिश कर रहे थे उसी समय शत्रु गुरेज की वादी में जमा हो रहा था और बढ़ते बढ़ते वुलर झील के इलाके में त्रकवाल तक पहुंच गया था, जहां से श्रीनगर ३५ मील और बारामूला केवल २० मील दूर था. जाहिर था कि शत्रु श्रीनगर और बारामूला पर हमला कर श्रीनगर-उड़ी सड़क पर काबिज़ होना चाहता था.

श्रीनगर और बारामूला फिर संकट में थे. सबसे पहले तो भारतीय वायुयानों ने सामूहिक उड़ानों में शत्रु के लशकर की ऐसी खबर ली कि शत्रु तितर बितर होकर गुरेज की घाटी में पक्के मोर्चे बनाकर श्रीनगर पर चढ़ाई का सरंजाम सजाने लगा.

लेकिन भारतीय फौज के इंजीनियरों का कौशल देखिए कि उन्होंने ११ हजार फुट की ऊंचाई का सिर नीचा करते हुये त्रकबाल तक जीप का रास्ता बना दिया और भारतीय दस्ते उत्तरी ध्रुव जैसे इस भयावह शीत और डरावने पहाड़ों के इलाके में रन संगर को ठानने के लिये चल पड़े. १३ हज़ार फुट ऊंची राजधान घाटी में भारतीय रिसाले ने लड़ाई का जय घोष बोल दिया.

गुरेज की वादी १२ हजार फुट की ऊंचाई में स्थित है और उसका क्षेत्रफल भी मुश्किल से १५ वर्गमील होगा. इसी वादी में से होकर कृष्ण गंगा नदी बहती है. गुरेज वादी के दोनों ओर समानान्तर १२ हजार से १५ हजार फुट ऊंचे पहाड़ हैं, जो बारह मास जमे रहते हैं. गुरेज की लड़ाई आर्कटिक की लड़ाई थी और सच तो यह है कि भारत के अंचल में हिम में पहला युद्ध गुरेज की घाटी में ही लड़ा गया. गुरेज के सामने १२८७५ फुट ऊंचा शेटे पहाड़ और उसके बाद १४२१८ फुट ऊंचा केसर पहाड़ विकराल बांहें पसारे खड़ा था और उसके पीछे गुरेज की वादी में कृष्ण गंगा मंथर गति से बहती जा रही थी.

आसमान जैसे फट कर उसी रात को बरसना चाहता था, जब कि पानी में लथ पथ, बरफ के अंधड़ अंधाड़ों में थपेड़े खाते हुए, आंतों के दांत कंपा देने वाली शीत में भारतीय जवान इन ठेठ सीधे पहाड़ों पर रेंग रेंग कर चढ़ने लगे. बर्फ के भीषण तूफानों में खुकरी और संगीनों के प्रकाश में आधी रात के अंधाकुप्प में २७ जून को भारतीय जवानों ने तीन चोटियों पर झंडे फहरा दिये. २८ जून को प्रातःकाल दुश्मन की गोलियों की बरसात को चीर कर भारतीय सेनायें गुरेज में घुस गईं. शत्रु भाग खड़ा हुआ. हिमाचल से लेकर नंगा पर्वत तक शत्रु निर्बीज हो चुका था.

गुरेज की विजय जीवट और क्षमता की विजय थी.

आखिर जब यह मार्ग भी दुश्मन के लिये अवरुद्ध हो गया, तब शत्रु ने आखिरी "करो या मरो" का कौल उठाया. लेकिन भारतीय फौजों ने शत्रु को इकठ्ठा होने के पहले ही तितर बितर कर दिया. १० और ११ हजार फुट के ऊंचे पहाड़ों को लांघते हुए भारतीय फौजों ने टिथवाल पर कब्जा कर लिया. नायक करम-सिंह को टिथवाल युद्ध में वीरता के अभिनन्दन में परमवीर चक्र प्रदान किया गया.

कश्मीर युद्ध की यह कथा है. ५०० मील से अधिक मोर्चे पर भारतीय सेनाओं ने अपने अभूतपूर्व पराक्रम से कश्मीर की भूमि को दस्युओं से मुक्त किया. भारतीय फौजों ने युद्ध की पाठ्य पुस्तकों की अनेक धारणाये झूठी कर दीं. इससे भी अधिक ऐतिहासिक बात यह कि भारत के भिन्न प्रान्तों की तरुणाई प्रकृति की वक्रताओं को ओढ़ती हुई, अपने पौरुष के झंडे दुश्मन के पराजित हृदय मे गाड़ने में समर्थ हुई. १० हजार वर्ग मील इलाका हमने मुक्त किया और ५० हजार वर्ग मील भूमि निरापद. भारतीय सेना ने सावधान किया-- अपने सभी गुप्त और प्रत्यक्ष शत्रुओं को--कि धर्मान्धता से भारत विजय का इतिहास अब दुहराया नहीं जा सकता.

महाकवि कल्हण ने राजतंरगिणी मे पुण्य भूमि कश्मीर की महिमा गाते हुए लिखा है:

"जहां निष्कलंक देवि प्रतीची ममता घटों से सुषमा अमृत उंडेल रही है.

"जहां धरती की आत्मप्रज्वलित आग अनेक बाहुओं से बलिदान अर्चना सहर्ष स्वीकार करती है.

"ऐसी है वह पवित्र पुण्य कश्मीर भूमि, जिसकी अजेय आत्मा को शक्तिबल से विजय नहीं किया जा सकता.

"बंधु, कवि की क्या बड़ाई. जिसने कश्मीर नहीं जाना, उसने प्रकाश नहीं पहिचाना."

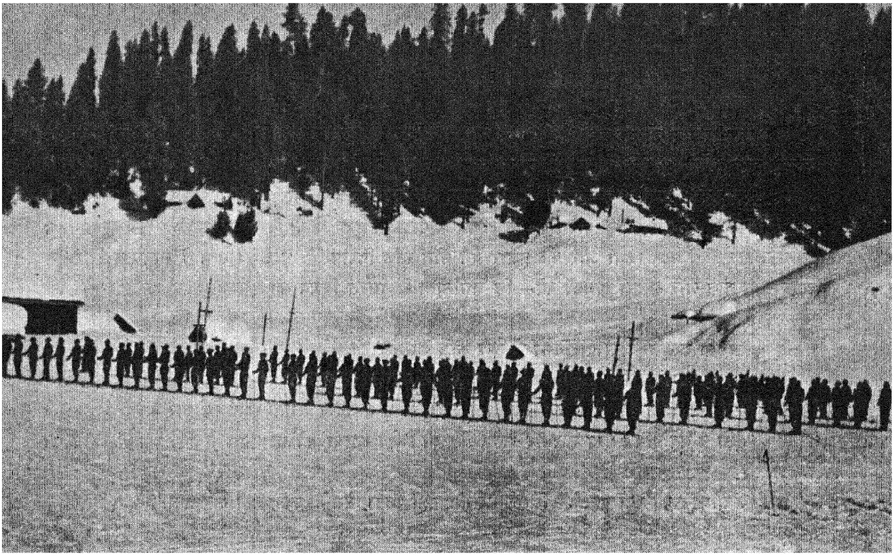

स म र्प ण

हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

प्रलय की घटा पै, चढ़े जो सिकन्दर,
विजय की छटा पै, बढ़े जो पुरंदर,

कसौटी मरण जो, कढ़े स्वर्ण-दर्पण,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

उन्हीं के सनातन सगे पग अभय के,
उन्हीं के हृदय तीर्थ, भारत विजय के,

लगा रक्त रोली, चढ़े जो शरासन,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

कढ़े वज्र से जो, बढ़े काल घाटी,
लड़े काल से जो, चढ़े काल छाती,

मरण की सवारी, विजय के सिंहासन,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

भगीरथ अड़े जो, भगीरथ लगन के,
पवन सुत उड़े जो, प्रभंजन भुवन के,

लहू की त्रिवेणी, अमिय प्राण तर्पण,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

उन्हीं के जगे नाम जौहर समर के,
उन्हीं के पुजे तीर्थ, पत्थर कबर के,

विजय की कसौटी, समय के सुदर्शन,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

उन्हीं से नदी पथ, उन्हीं से किनारे,
उन्हीं से जगें दीप, चंदा, सितारे,

उन्हीं की जवानी, उन्हीं मा समर्पण,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

जगें जिंदगी दीप, जिनके दरस से,
भरी मृत्यु की मांग, जिनके परस से,

प्रकृति से सनातन, पुरुष से पुरातन,
हुए मातु अर्पण, उन्हीं को समर्पण.

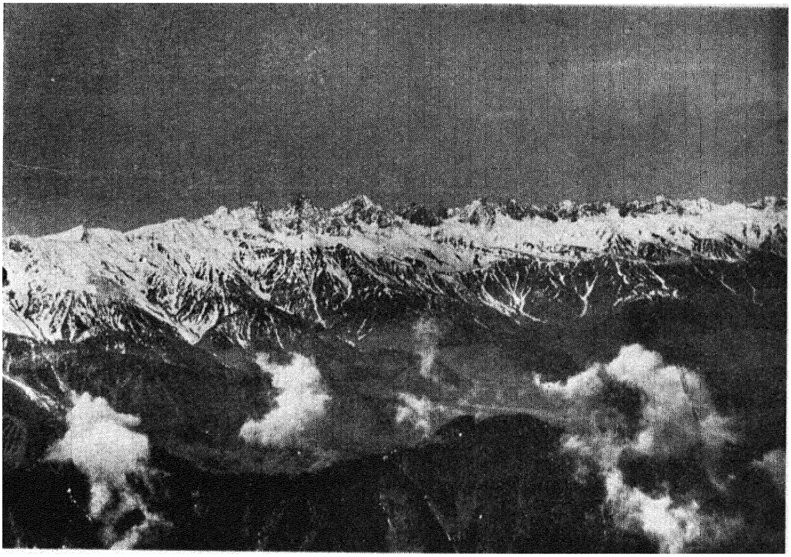

छंद १.

गीत हैं अतीत कौन, गायक ये जानो कब,
कोविद चितेरो कौन सृष्टि रूप रांचो रे?

कौन जान पायो शशि शेखर के मान प्रान,
शैलजा के गेह कौन वीतराग नाचो रे?

मानस सरोवर में जीवन को राज हंस,
विधि रावरे की कौन कर्म रेख खांचो रे?

मेरे मन नीड़ में बिराजो सोई नीलकंठ,
पांखी परदेसी कब मीत भयो सांचो रे?

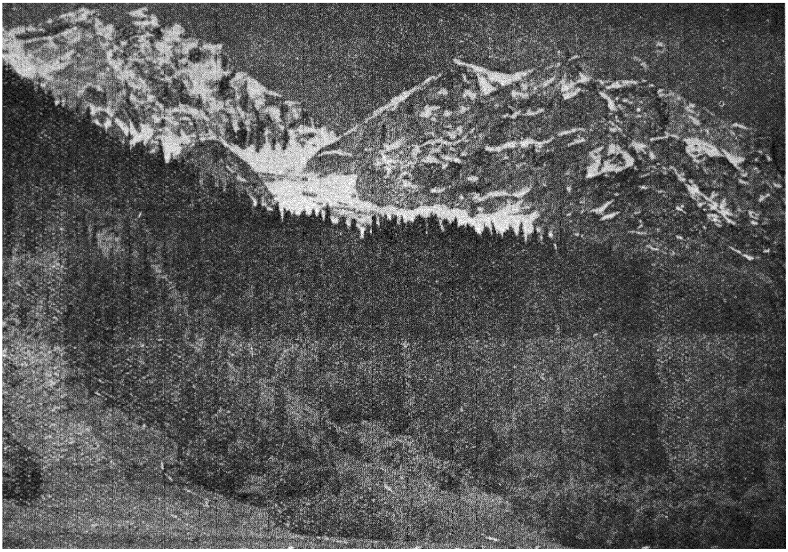

छंद २.

उड़ उड़ जात आयु-नीड़न से नीलकंठ,
मृत्यु लाड़ली की लाज जीवन के ब्रीड़ में.

आशा अभिलाषा चक्र, जीवन व मृत्यु भेद,
जगत बिकानो मोह नागरी के क्रीड़ में.

छलना सुहागिन के चेरे सब प्रेरे फिरें,
मृत्यु रागिनी की गूंज जीवन के मींड में.

भाग्य के हिमाचल पै चंचल नचौ न नाथ,
मेरे नीलकंठ! आ बिराजो मन नीड़ में.

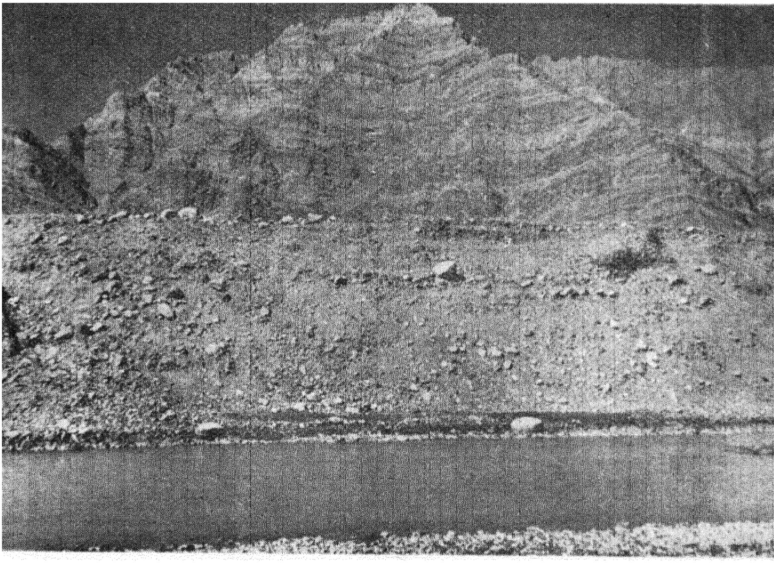

छंद ३.

अग जग नाशवान, यौवन ये नाशवान,
मृत्यु के स्वयंवर में तू ही अविनाशी रे!

मृत्यु को प्रवास काल, जीवन को एक नाम,
युग के विधाता भले, युग के उदासी रे!

भाग्य और कर्म के दुकूल बहे गंगधार,
सृष्टि के त्रिशूल बसे, जीवन की काशी रे!

मनुआ मतंग तोर डारत मृणालनि लौं,
आहु रे मृणालनि के, भौंरे बनवासी रे!

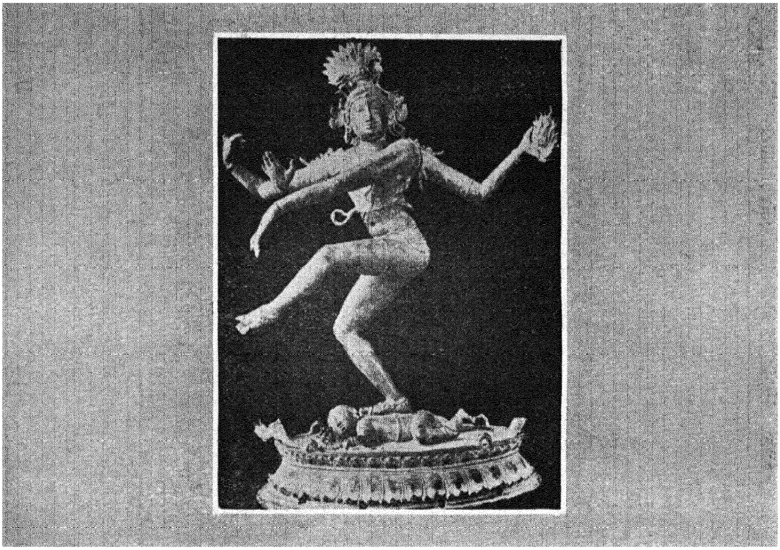

छंद ४.

जुग जुग देवासुर जूझें रन जीवन में,
फेरें मरजादा पत सीता, ध्रुव स्वामिनी.

धरणी के प्राण कढ़ैं, तेगा तप तेज अड़ैं,
मातु के सपूत चढ़ें, ज्वाला जलप्लावनी.

चांदनी पराक्रम के प्यासे पग यौवन के,
भोले के जटानजूट भायी वरदायिनी.

पाप की विनासनी, शहीदन की रक्तगंग,
तांडव की तान पै, दहाड़ सिंहवाहिनी.

छंद ५.

गोरी, रसभोरी रूप सहज ठगौरी आली,
अचल बसंत विधि दीन्हीं है सुहागिनी.

इन्द्र दीन्हों मुकुट, फणीन्द्र दीन्हीं मणिमाल,
प्रकृति नटी ने भेंटी, यौवन सुदामिनी.

नलिन में ब्रीड़ा जहं, कलिन में पीड़ा जहं,
झूम झूम रूम झूम, डोलत मृणालिनी.

तापस सुहावनी जो, आठों याम चांदनी सो,
धरनि की स्वर्ग, कश्मीर भूमि भावनी.

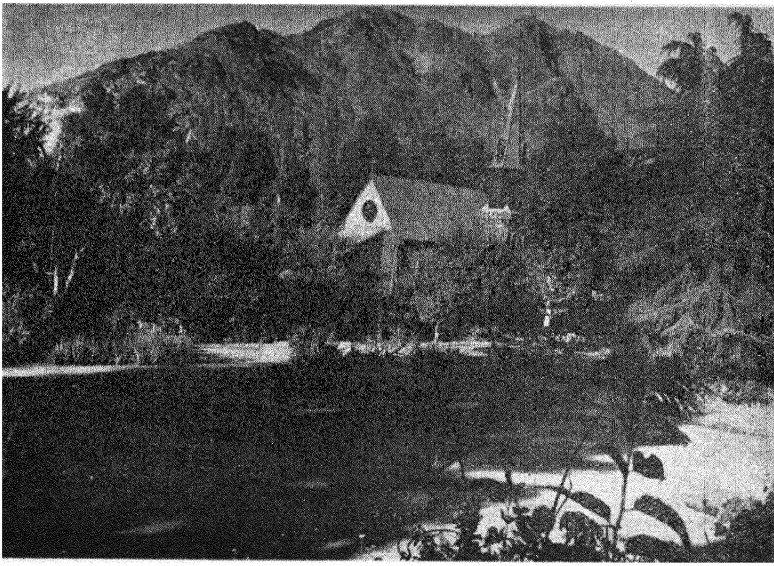

छंद ६.

विहग विहंगिनी किलोल करैं डार डार,
कली कली आरती उतारतीं तितलियां.

पुष्प-मकरंद-छंद, छंद में अनंद जहं,
कुंज कुंज गुंजन, सुरंग पगीं पखियां.

सैन करें मैना, सगनौती भरैं नीलकंठ,
लिपटि लतान करैं, हौले हौले बतियां.

प्रकृति रमी है ऋतुराज कशमीर रंग,
लोचन सुलोचन, सनेह भरी छतियां.

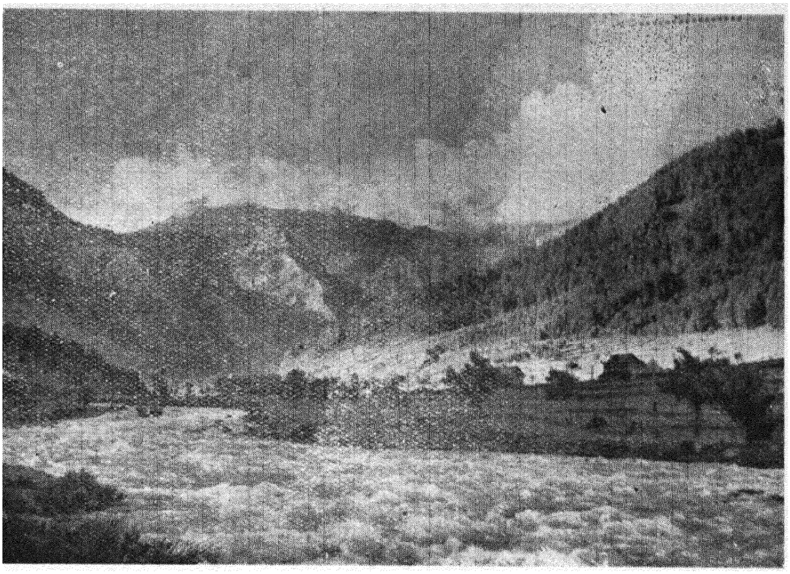

छंद ७.

कण कण पूजित पवित्र कशमीर भूमि,
पावक सी पावन हिमाद्रि नटी सद्य-स्नात.

मृगमद सुरभि, छके हैं चंचरीक चित्त,
मन कर्म वचन पुनीत हर प्रीत पात.

नेह प्रतिनेह है कसौटी जहं जीवन की,
नेह अमराई बहै नेह नदी सप्रपात.

जीवन परीचित सो भारती अजर गोद,
तचक डंसेगो कौन, रचक अमरनाथ.

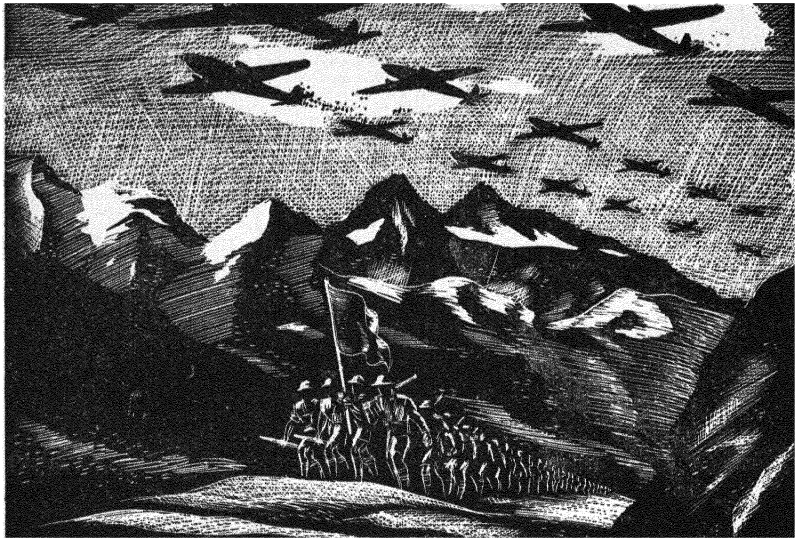

छंद ८.

तैसो कशमीर एक बार हो अधीर कहो,
आये आततायी, रब! छाके मदहाला में.

अछत कलीन देस, रौंदें बटमार दस्यु,
भौंरन में नाव, फंसे प्रान अग्नि ज्वाला में.

धर्म, शर्म, मींज, सीझ, लूटत सतीत्व शील,
लाज रही कांप, आस जगत भुआला में.

द्रुपद सुता की बात, भारत प्रमानी फेरि,
वीर बढ़ जात, जैसे चीर रंगशाला में.

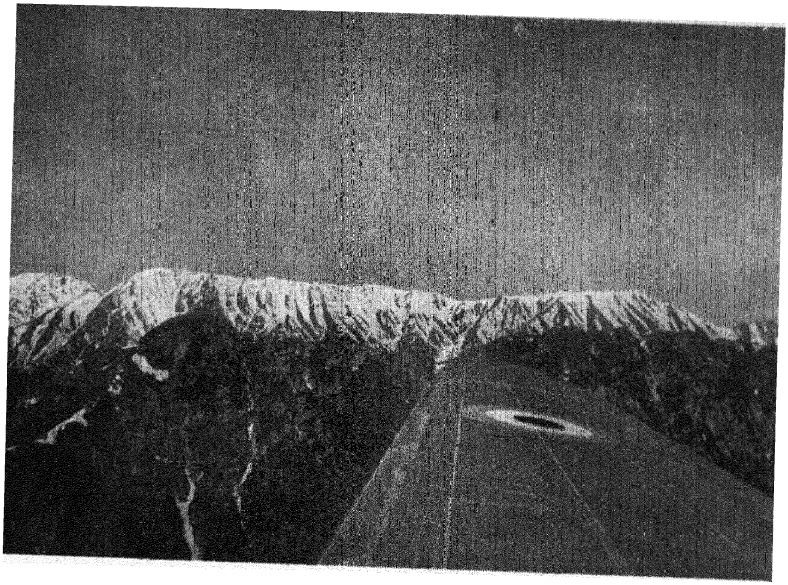

छंद ६.

आंधी अधरत्तन में, धाय चढ़े पौन-पूत,
उंगत कृशानु भानु, जैद्रथ के मेघ ओट.

भारत पुकार प्रगटानो पुनि चक्रपाणि,
चकाचौंध चौंकें, चिचयावैं रिपु ओट ओट.

शत्रुन पै गाज से गिरे रे नभ चीर चीर,
अंधक सिराने दस्यु भागत हैं लौट लौट.

लांघ सिंधु जैसे कपि छार छार लंक करी,
लांघत पठान कोट, जीतत पठान कोट.

छंद १०.

क़दम बढ़े ही जात, पौरुष अड़े ही जात,
आततायी युद्ध त्याग छांड़त हैं कोट कोट.

बोलो बढ़ हल्ला, जब चौक़स मुसल्लह ज्वान,
खुदाबख्श हिंदबख्श, शत्रु कहैं लोट लोट.

कर्नल कमांडवान मेजर सिपाही पस्त,
एक न थिरानो सो, बचावै प्रान ओट ओट.

लांघ सिंधु जैसे कपि छार छार लंक करी,
लांघत पठान कोट, जीतत पठान कोट.

छंद ११.

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. U.

बैरिन के वृन्द वृक व्याघ्रन से वक्ष चढ़े,
भूमि सतीसार की डुबाई सद्य खून में.

लूटत खसोट ग्राम नगर जरावैं जोम,
जंग के जहादी जिद्द जन्नत जनून में.

लोलुप-लिबास बर्बरित न भेद कछु,
आंधरे जहादी इतिहासी क्रूर हूण में.

मूठी भर ज्वानन से रूंध्यो राज-इन्द्र द्वार,
खून के पियासों को डुबायो गर्व खून में.

छंद १२.

उड़ी की लड़ाई मदि मारी फौज जोमियों की,
एक हो हजार डटैं दाटि के उचाट में.

धरि धरि मारैं, चीतकारैं दल बैरिन के,
फारि फारि डारैं लोथ पाटैं बाट बाट में.

कटकि कटाक कट्टट, झटकि झटाक झट्टट,
पटकि पछाड़ैं काल-वारिधि के घाट में.

बूंटन मसौटे हठ, आलम जहादी शठ,
अंबर लौं मुंडन की रास मौत-हाट में.

छंद १३.

पटकि पछाड़े काटे सुभट जहादी जूथ,
फाड़ फाड़ फेंके केतु घूर्मित घमंड के.

काल के अखाड़े काल-तेगे तेज धीरन के,
खेल खुले खांडे खग्ग चंडिनी के, चंड के.

आखिरी सिपाही लड़ो आखिर की स्वांसन लौं,
गरज गरज वीर धरणि अखंड के.

उड़ी के शहीद धन्य! शौर्य-प्राण धन्य! धन्य,
तीर्थ नव्य भारत के भव्य बाहुदंड के!

छंद १४.

चमक रंगीली चकचौंध किर्च कौंध उठी,
लाल लाल लौहमयी लोहित छटान पै.

गुड़ड़ गुड़ड़ गुम्म, तड़ड़ तड़ड़ तड़,
रैफल को राग बढ्यो कंपित चटान पै.

भारत को तोप-कंठ तड़क तड़क उठे,
वासव को बज्र जैसे शैल की घटान पै.

धमक धमक धम्म लोथन पै लोथ चढ़ैं,
रुधिर को धाराधार शंभु की जटान पै.

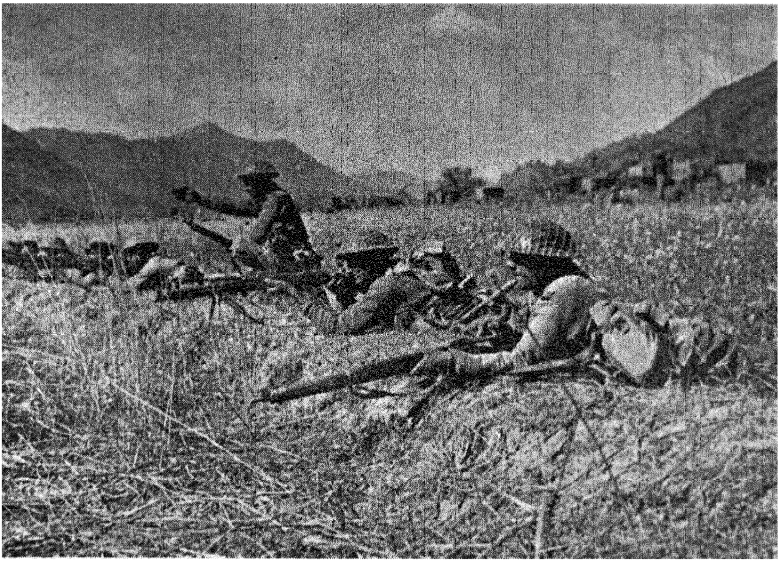

छंद १५.

सिंह सिंहगढ़ के अड़े रे भीम छाती रण,
प्राण कढ़ जायें, जायें, शत्रु कढ़ पावै ना.

खांडे के उजाले बीच यौवन परीक्षा-पर्व,
कौन ऐसो ईसा जौन सूली चढ़ धावै ना.

हंसत हथेली शीश, चढ़त चरण अम्ब,
अडिग पुजारी भेंट भेंट के अघावै ना.

अंतिम सिपाही लड़ो आखिर की स्वांसन लौं,
अंगद को पांव अड़ो, पाछे हट पावै ना.

छंद १६.

खड़क खदेड़े खल संगर बवंडर से,
अस्त्र शस्त्र छोड़ि छोड़ि खेत सो पलावैं हैं.

भारत भुजाली मर्म माखन सों सिक्त सेत,
लोहू को तिलक पूज, हाथ जोड़ धावैं हैं.

देह तजैं प्रान और प्राण करें देह-द्रोह,
ऐसी मारामार कोऊ पार नहीं पावैं हैं.

दस्यु दिल-दुर्ग के कंगूरन की चोटी चढ़े,
भारत प्रतापी के पताके फहरावैं हैं.

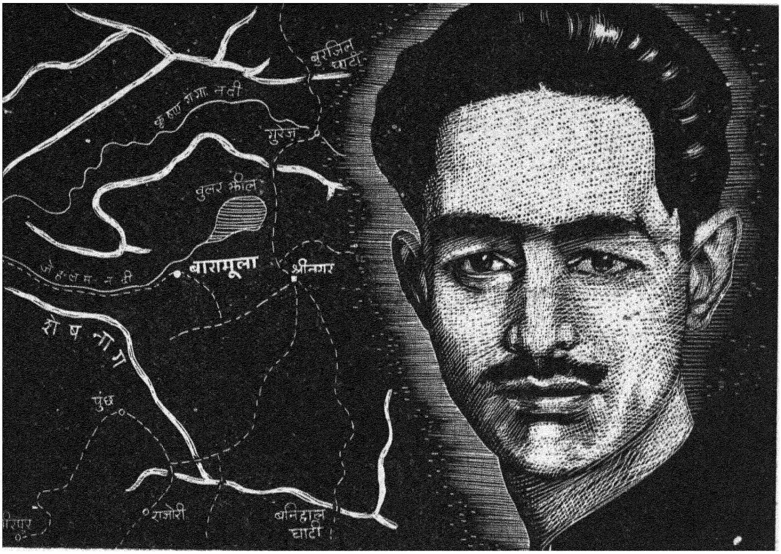

छंद १७.

युग लौं रहेंगे याद नारकीय नाच गान,
लाज के डकैतों और धर्म कुलशूला के.

पाप के पिशाच के निशान बढ़े पुण्य भूमि,
नेजे छेद मारें जो अबोध शिशु झूला दे.

सूली पै चढ़ो रे फेर काठबद्ध ईसु यहां,
साहस सहास धन्य मीर मकबूला के.

दोजख ने शर्म से छिपाई आंख मूँद मूँद,
याद हैं जहादियों के 'जश्न' बारामूला के.

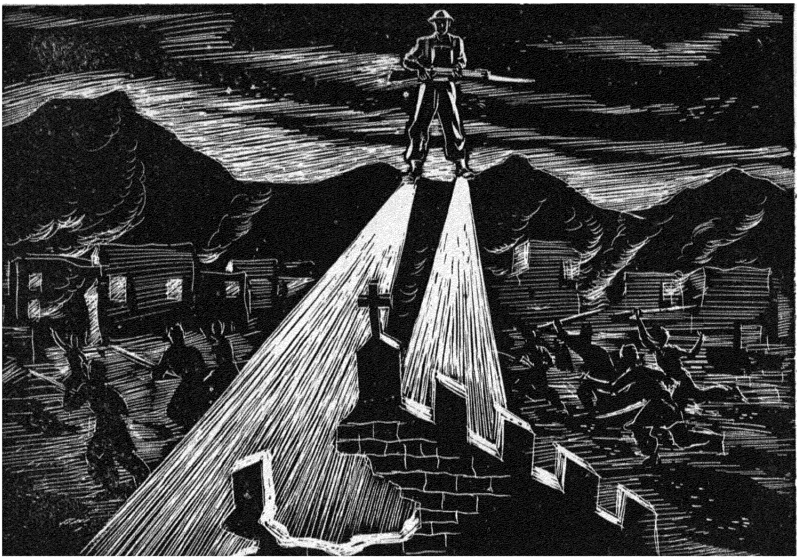

छंद १८.

भारत सपूत 'राय,' शत्रु सैन टूट पड़े,
दस्युन के दुर्ग हिले हल्ला रणजीत के.

औचक चकित चक्र, सूझे न जहादी-वंश,
होश के हवास औ, भरोसे गये दीद के.

काल से बचावै कौन माया को मरीच मृग,
साखे हैं पुरान सो, प्रमान सो हदीस के.

सिंहन के छौने युग-पौरुष प्रचंड दण्ड,
'जश्न' के मुहर्रम में चांद उगे ईद के.

छंद १६.

बांको यह कौतुक अहेरी युग शक्तिनाथ,
सागर की प्यास उठी चार बूँद प्यासे में.

द्विशत जवान चढ़े पंद्रह सहस्र दस्यु,
दीपत प्रकाश पूत काल के कुहासे में.

विद्युत से वेगमान, चंचल चपल चक्र,
धाय धाय मर्दि मारैं गांस गांस फांसे में.

नेजन की नोक पार, खांडन के घाट पार,
'जश्न' के बराती जुड़े मौत जनवासे में.

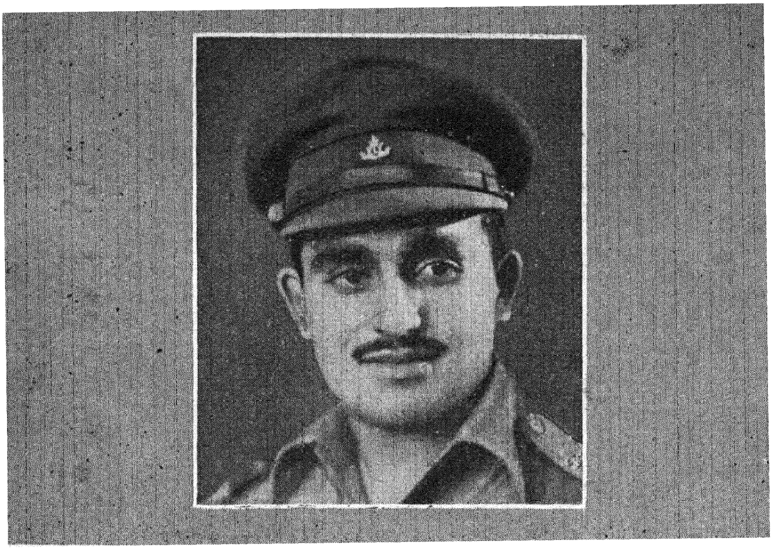

छंद २०.

अमर हैं सोमनाथ, रक्षक अमरनाथ,
भारत को भानु चढ़यो शीश पै खदोत के.

आई जो चुनौती, सगनौती भई यौवन की,
ठौर ठौर फूट कढ़े तेज पुंज ओज के.

सागर की आग जगी, सागर संहारिबे को,
रंच में गुमान के प्रमान होत लोथ के.

दोजख के फाटक जहादी पड़ैं लौट लौट,
'जश्न' के बराती जो घराती हुये मौत के.

छंद २१.

देखत दुधारे शत्रु भागत गुहारे हारे,
भारत के छौनन को कोप्यो खून पानी जब.

भागे दइमारे भयमारे मूढ़ मारें गहि,
काल के अखाड़े हाय रत्तक है कौन रब!

भूधर पै लोथन के शृंग से उठाये देत,
काल को कलेउ देन, जुटत कृपानी जब.

बुद्धि बल विक्रम गरूर मर्दि डारो सब,
भारत भवानी दस्यु-दाहिनी रिसानी जब.

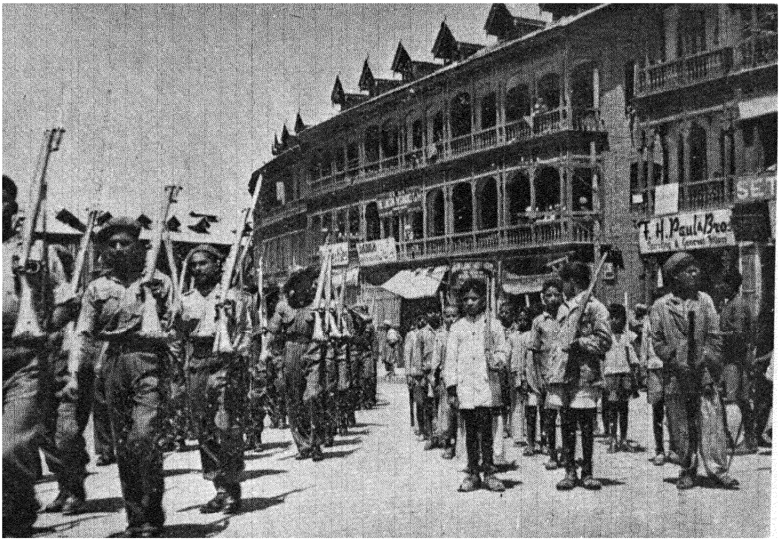

छंद २२.

झूठे कीन्हें वादे सो अधर्मी पंचमांगियों के,
फतवे मिटाये झूठे काजी शेख मुल्ला के.

हिंदुन मुसलमान, गीता व कुरान साखी,
भैंटे जात शत्रु छौने ईश्वर व अल्ला के.

नर नरसिंह भये नारी भईं शक्ति पुंज,
पिंडी लौं धड़क जात, स्वप्न से ही हल्ला के.

कौल मर्द साधे और कांधे भिड़े कांधे बढ़,
जूझे मर्दजादे जो जवान अबदुल्ला के.

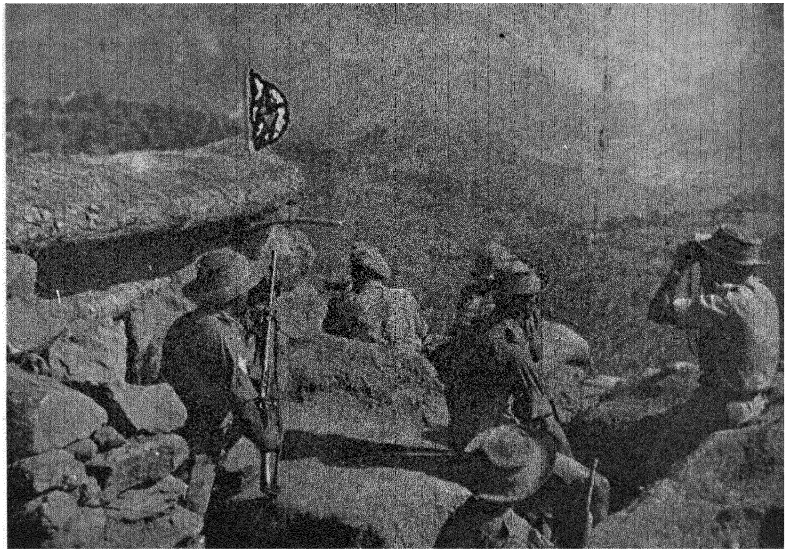

छंद २३.

शत्रु ने गुमान करो जीतैं नवशेरा पुनि,
चाह नरमेध उठी खूनी शमशीर की.

शकुनी के पांसे, रण झांसन सो जीत जांय,
चाहना दुशासन की लाज हरैं चीर की.

काल के अखाड़े महावीर ललकारे रिपु,
खेत में पछार दीं शरारतें शरीर की.

घूमि घूमि पौन-पूत ढाहत हैं दस्यु कोट,
लोहित घटान में छटायें बलबीर की.

छंद २४.

पौरुष निशान अड़े भारत के प्राणवान,
जाके दोई हाथ सोई कूदे रण ठान ठान.

करनल कमांडवान, सैपर, सिपाही सब,
हठ हूक टूटैं डट डांटैं धम धूमधान.

कड़क कड़क धूम, धड़क धड़क धूम,
फड़क फड़क पठनैटे कटें घमसान.

एक एक ज्वान सवा लाख को प्रमान भयो,
शेरा नव-शेरा जब कूद पड़े ज्वान ज्वान.

छंद २५.

समर गुमानी गुथे गरुड़ झपट झट्ट,
काल के पताके लहरायें मृत्यु मेला में.

घेरो नवशेरा शत्रु छायो दल बादल सो,
लपट फुहारैं तोप छोड़ें रंगरेला में.

शीशन के कंदुक, सो आंतन के हार सजे,
भेजन को भोज रचो, काल के कमेला में.

भारत भवानी सिंहवाहिनी रिसानी जबै,
दस्युन की लाज बची मौत के तबेला में.

छंद २६.

शोणित जलधि घोर डूबत जहादी जूथ,
बूड़त जहाज दस्यु जोर शहजोर का.

सूरन के क्रोध की प्रचंड शक्ति कौंध उठी,
किम्मत सिरानो रिपु हिम्मत मरोर का.

तामिल कमायूं मरहठे न हटाये हटैं,
डोगर, महार, रजपूत, सिक्ख, गोरखा.

ढकनि ढकेल मारैं जाहिल पठान वंश,
फक्क फारैं हिम्मत, मरोर तोड़ैं मोरचा.

छंद २७.

खेत नवशेरा भीर-भीरन अभीरन में,
एक न जहादी भव-बंधन बंधो रहो.

चिक्कर हुकारें, हहकारैं दट-डाटन में,
होशन हवास रिपु रंध्रन रुंधो रहो.

भारत सुहागन को मंगल मुकुट मौर,
सांगा जिमि मंदर पुरंदर सधो रहो.

बांको यदुनाथ वच्च गोलिन बिंधो रहो,
छाती रिपु छेद छेद छातिन छिदो रहो.

छंद २८.

सपक सपाक सप्प भौंकत कृपाण वीर,
एक हू सिकंदर को पूत ठहरावै ना.

कट पठनैंते अधफारे धमकैंते गिरें,
दुआ न सलाम तड़ामाशे कहि आवै ना.

स्याह स्याह नागिन के, जारे, मर्दि मारे जब,
शीश दे पलावैं, पै कसौटी कस भावै ना.

कालीदह पैठ नाग नाथैं जब चक्रपाणि,
कालिया-यवन कोऊ जीतो बचि पावै ना.

छंद २६.

आमिष के धोकेबाज, पाहन पै टूटे आय,
चोंच हू गंवाय भागें, लाड़ले गुमानी के.

गोलिन सो छेद, गर्जि भिड़त विकट वीर,
झाड़ देत शीश फोड़ मान अभिमानी के.

गुथत पड़त हठि, उठत लड़त पुनि,
शोणित की कीच करें काम घमसानी के.

किर्च पै चढ़ाये भव घाट के उतारैं पार,
धाय धाय ध्वजाधारी भारत भवानी के.

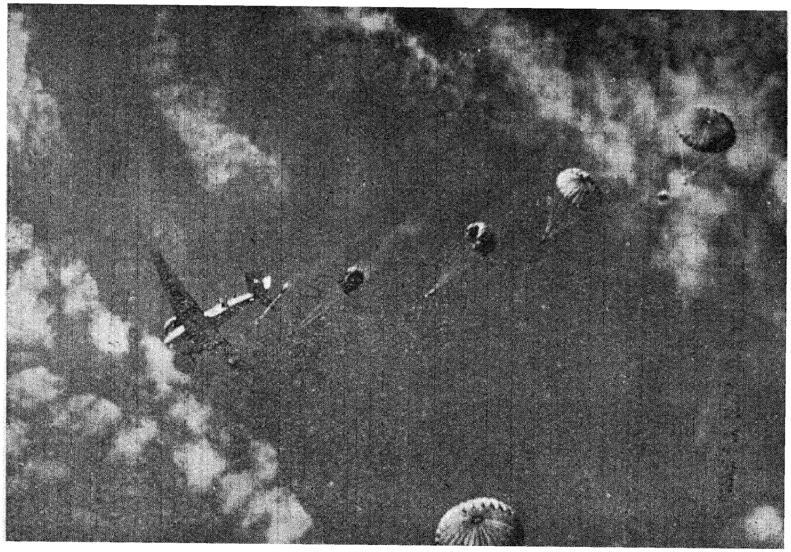

छंद ३०.

ठसक धसक मारैं, धसक मसक मारैं,
मसक कसक मारैं, मारैं ऊंच नीच में.

डगर कगर मारैं, कगर कंगर मारैं,
कंगर कहर मारैं, काल दहलीज में.

कहर हहर मारैं, हहर घहर मारैं,
घहर फहर मारैं, मारैं रण रीझ में.

चारों ओर मारैं, मार मारैं करैं मारा-मार,
खोर खोर मारैं दइमारे दल कीच में.

छंद ३१.

रोवत अधीर पीर, भागत वजीर मीर,
धड़कै पलन्द्री और पिंडी कंप छतियां.

हालत कटक, घबरावत अटक खान,
घर घर भेज दीन्ह महाकाल पतियां.

नाचैं पशुपाल भूत प्रेत को कुटुम्ब पाय,
चैन दिन दस्यु नांहि, नींदा नांहिं रतियां.

हाथन में नेजा नहिं, देहन कलेजा नहिं,
मूंछन में तेजा नहिं, भेजा नांहि मतियां.

छंद ३२.

रक्त मुठभेड़ा पैठ, डूबो रिपु बेड़ा वेग,
एक न खबीसो रहे ठाढ़ो अभिमान में.

दपटि उखाड़ैं दल, पटक पछाड़ैं खल,
तड़ तड़कावैं हाड़ हाड़ घमसान में.

सामुहै मरण परिपाटी कहं दस्यु दल,
स्वांत के जुलाहों और दीग तरखान में.

कीचक से मींच मोर युद्ध के अखारे भींच,
रूह बे-नियाज की अवाज आसमान में.

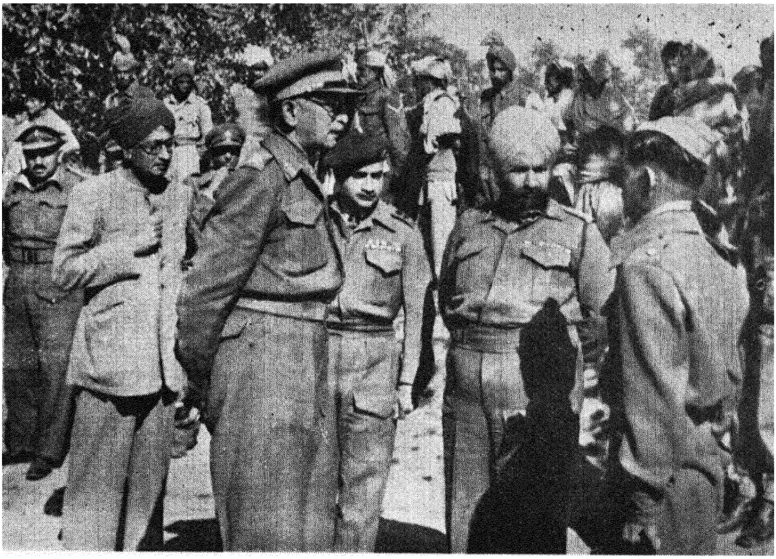

छंद ३२.

धरि धर मारैं खट खटक पछाड़ैं शठ,
राग ना पराग ना जहादी फुलवंत में.

हौंसन पराने, खम हिम्मत हिराने रिपु,
कबर समाने जल ज्वालन ज्वलंत में.

शोणित नहाई सजी विजय वधूटी भली,
मान प्रभुताई दर्प, कीरत कलंत में.

आशिश करिप्पा, प्रण पाले वीर ज्वान ज्वान,
रण-उसमान के मुहूर्त कुलवंत में.

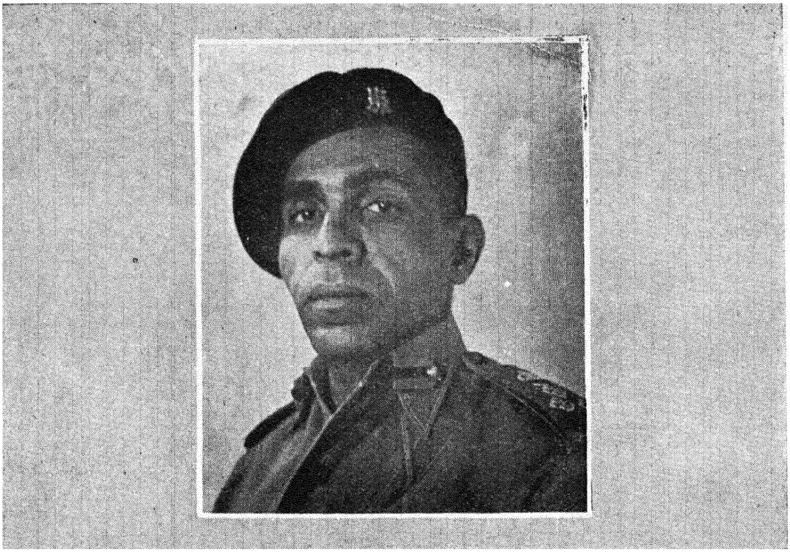

छंद ३४.

धन्य! उसमान शूर सैनिक महान धन्य!
ऋन जो उतारा भारती के पय पान का.

पौरुष स्वयंवर में, मृत्यु वरमाला जीत,
मान राखो गीता ग्रंथ इंजिल कुरान का.

दूलह शहीद मौर बांधो जो महान वीर,
चंदा लौं चढ़ो है वच्च देश अभिमान का.

अंबर में जब लौं पयोद गन गाजैं गाजैं,
कीरत कलाप हाजी गाजी उसमान का.

छंद ३५.

चालिस हजार दीन रकत-अनाथ संग,
भारत सरोषो पद रोपो गढ़ पूंछ में.

बरस बितायो एक कुमुक अभाव बीच,
जूझत हठीले अड़ विकट विरूझ में.

लांघ गिरि शृंग बल ढाढ़स दें पौन-पूत,
बंक बल आयो नहिं, कौल मजबूत में.

रिपु के गरूर के सरूर पानी पानी कर,
मूंछ नवशेरा में, उखाड़ी पूंछ पूंछ में.

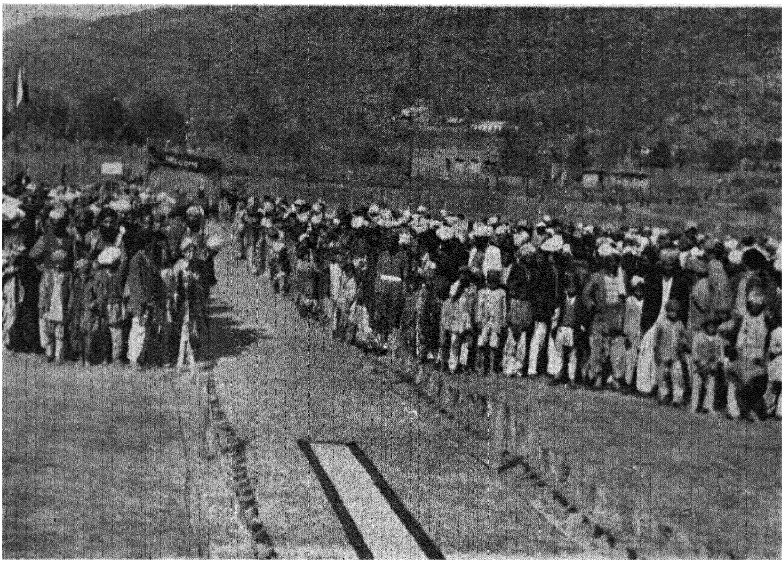

छंद ३६.

पाय के उनींदे सिंह छौने कशमीर प्रांत,
छाये दल-टिड्डे श्वान जंबुक जहाद के.

लिपट विकट कटकाई आई, घेरी पूंछ,
वारि हीन अन्न हीन अभय, विषाद के.

लूट लूट खेत लावैं, छीन छीन नीर लावैं,
पार नहिं पावैं दस्यु धीर प्रहलाद के.

भारत सकोपो पद ज्वानन ने रोको धन्य!
पूंछ न हिलाई हिले, कोप मेघनाद के.

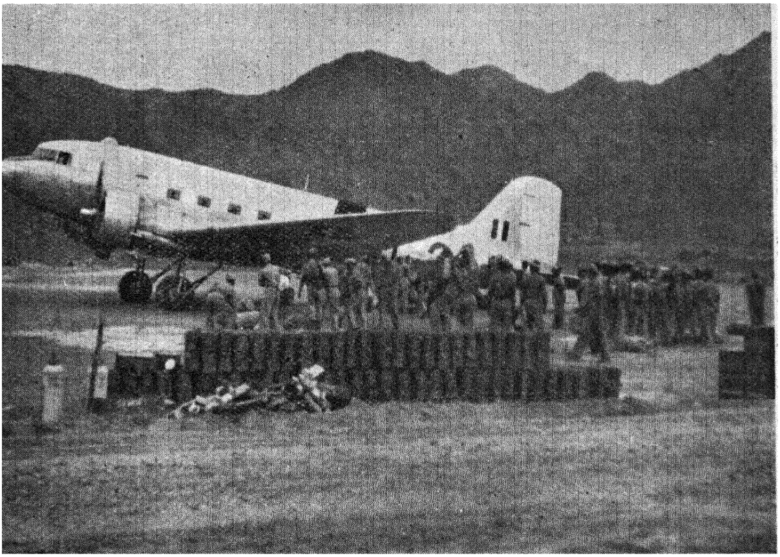

छंद २७.

पूंछ हनूमान भांति बांधी मेंड़ पूंछ जब,
कोप की कृपाण शत्रु रुधिर लपेटो रहो.

भूलत चंगेज लंग, व्याकुल जिहादी नाग,
ऐसो जंग ज्वानन को अगन चपेटो रहो.

जेई चहैं, तेई गहैं, तोपन के कोप दहैं,
दस्युन अराति अर्रराने अर्ररेटो रहो.

सामुहै न कोई सिकंदर को बेटो रहो,
ठाढ़ो नहिं खेत न जहादी पठनैतो रहो.

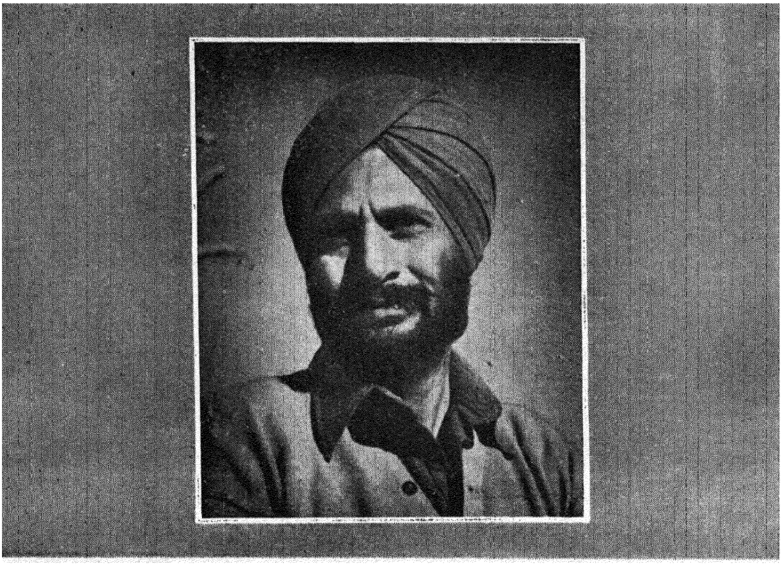

छंद ३८.

दस्यु दल आग वर्षि, प्रलै को हरायें चहैं,
रंच न डिगानी सूझ बूझ अनबूझ की.

सिंहन के छौंन डटे कंदर शिखर चापि,
घोर घटाटोप ज्यों उदोत जोत दूज की.

बादर से गाज गाज, विद्युत से कौंध कौंध,
शोणित की कीच में उगावें लाज मूंछ की.

'प्रीतम' कहानी, यदुनाथ की प्रतीती यह,
पूंछ हनूमान ऐंड़ बांधी मेंड़ पूंछ की.

छंद ३९.

बार बार दौड़ैं तोप मोटर व हाजर ले,
लंपट लुटेरे बदनैते कुल-व्याध के.

मुट्ठी भर ज्वान आन भारत संभारें धीर,
यौवन उजारें मुक्त जीवन अगाध के,

चपट चमेट देत, झपट झमेट देत,
कपट समेट देत जन्नत जहाद के.

लाग न लगाई लगे, आग न लगाई लगे,
पूंछ न बुझाई बुझे, मेघ-मेघनाद के.

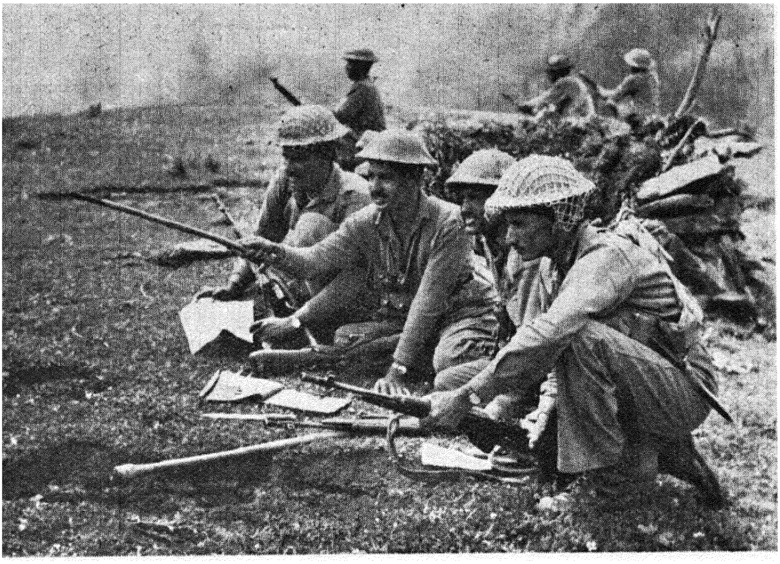

छंद ४०.

पंद्रह हजार दस्यु जूझत मुसल्लह दंभ,
बाढ़ी अहिफेन ज्वाल मेव काल-क्रोध के.

सगुन कृशानु भानु ऊंगो दल बादर में,
खांडन खंडोये खल टांडे अवरोध के.

हहरि हहर टूटे, कहरि कहर टूटे,
फहरि फहर टूटे, भारती की गोद के.

मूंछ बल ठाढ़ी रही, पूंछ बल ठाढ़ी रही,
मूंछ न बुझाई बुझी, प्रलय पयोधि के.

छंद ४१.

मिहिर प्रभंजन के साढ़े बारा सेरी गाजी,
दस्यु दल द्वार बाजें मौत के नगाड़े हैं.

भारत के पौरुष की पौद उंगी पूंछ भूमि,
बाल वृद्ध नारी, जुड़े युद्ध के अखाड़े हैं.

ताक ताक घात करें, दबट दबोचैं शत्रु,
लोथ पै उठाये पूंछ सिंह से दहाड़े हैं.

खेत में पछाड़े, बाट बाट में पछाड़े, घाटी—
—घाटी में पछाड़े, शृंग शृंग पै पछाड़े हैं.

छंद ४२.

उठत पछाड़े कोऊ, बैठत पछाड़े कोऊ,
आवत पछाड़े कोउ, भागत रकाब पै.

होशन पछाड़े, बदहोशन पछाड़े कोउ,
कोसन पछाड़े कोउ कोउ कड़काव पै.

तोपन पछाड़े, कोप कोपन पछाड़े कोउ,
माटर पछाड़े कोउ घाट गड़काब पै.

हद्दन पछाड़े, अनहद्दन पछाड़े रिपु,
मेंड़ ऐंड़ राखी मूंछ, मूंछन पै ताव दै.

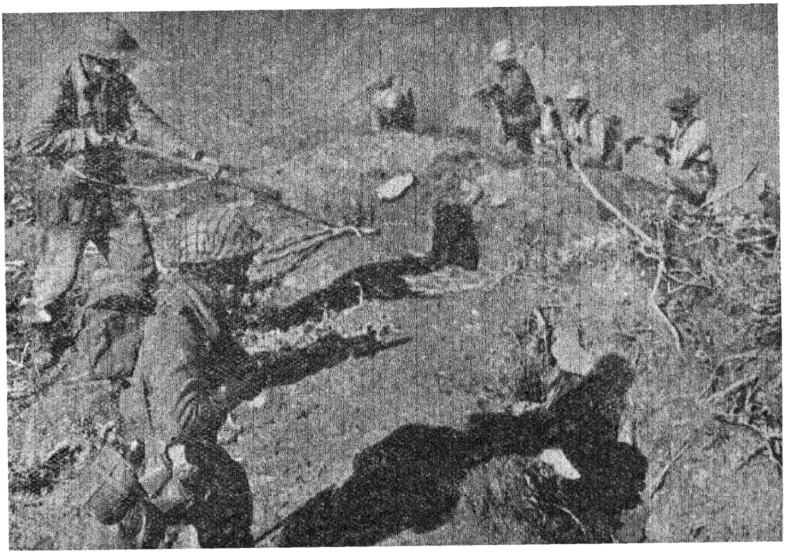

छंद ४३.

अचल चुनौती बलिवेदीमयी यज्ञशाला,
कंदर कंगूरों गिरि श्रृंगन पै जा रची.

आहुति हुंकार हांक, खड़ग कृशानु बढ़्यो,
गुड़ड़ तड़ड़ गुम्म, चेत चंडिका नची.

दपट दपट्टि शैल, शैल पै रगेदें दस्यु,
धूल धूम धूसर में मारामार जो मची.

लाज पठनैंते तजें, जन्नत जहादी तजैं,
मीर तजैं मोरचा औं' तोप तजें तोपची.

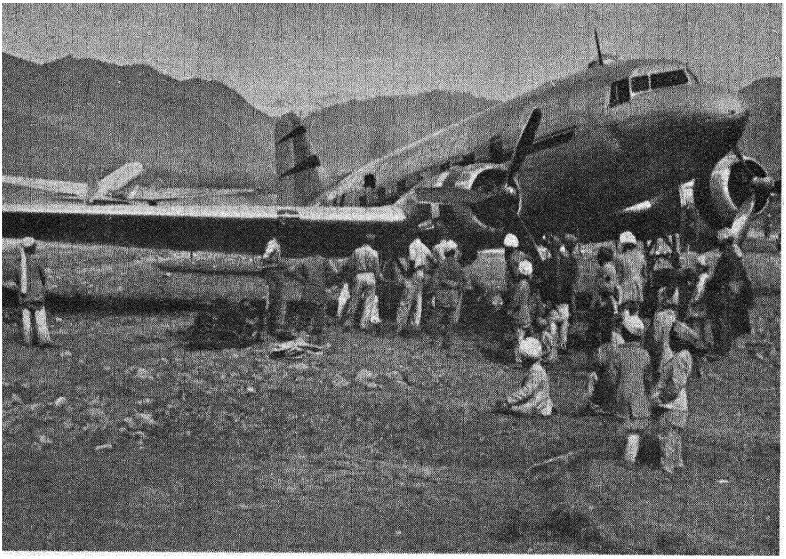

छंद ४४.

शत्रु दल आहत पुकारे बाट घाट हाट,
गति, मति, द्युति गई बेबस बिहाल की.

मौतन के ठाठ, कालकूटन के अट्टहास,
नाचें रणचंडी हुलसावने कपालकी.

भारत प्रताप भानु चढ़्यो कशमीर भूमि,
छाती फार फेंकी जातुधानी छलचाल की

संगर-मसोसे बदहोंसे बदनेते फिरें,
पूंछ पै चढ़ाई पहुनाई महाकाल की.

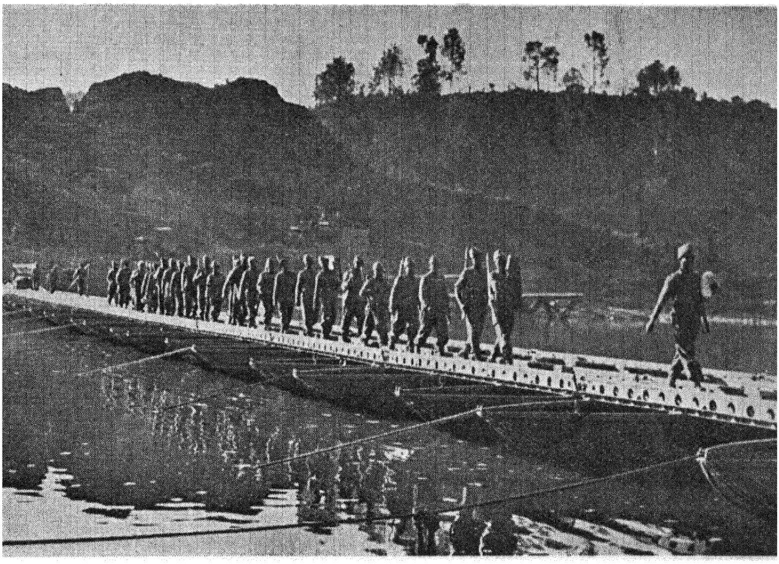

छंद ४५.

ठिठुर ठिठुर जात आंतन के दांत जहं,
देश के खिलाड़ी बढ़े देश कृष्ण गंगा में.

कोर पथरैनी कजरैनी के कंगूरे कूद,
मौतन के झूले, पथ खांचें गिरि शृंगा में.

खोज खोज कंदर में बीजुरी से कौंध गिरें,
व्याल जाल काट काट डारें कृष्ण गंगा में.

कालिका की हाट खोल, झेकयो है जहादी दैत्य,
लोथन पै लोथ यों अचंभा लौं अचंभा में.

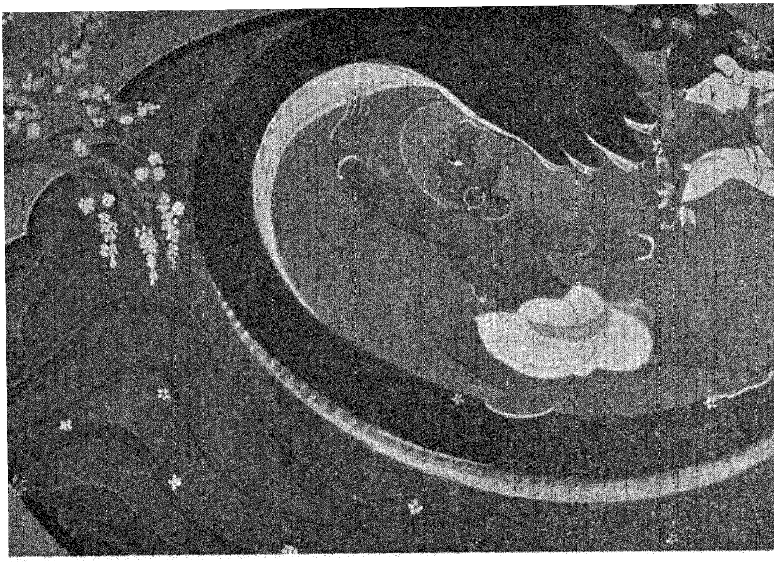

छंद ४६.

क्रुद्ध जुरयो शैलन के युद्ध वंश भागीरथ,
भागत जिहादी कृष्ण गंगा में परत धाय.

तैरत थकत पुनि डुबक डुबक हत,
विषम भुजगवत केतिक बहे ही जांय.

हिंद के कन्हैया फन पकड़ निचोड़ें विष,
बर्फ की टंगार ललकार दे लड़े ही जांय.

एक चरण पार इतै एक चरण पार उतै,
कालीदह पैठ नाग नाथत बढ़े ही जांय.

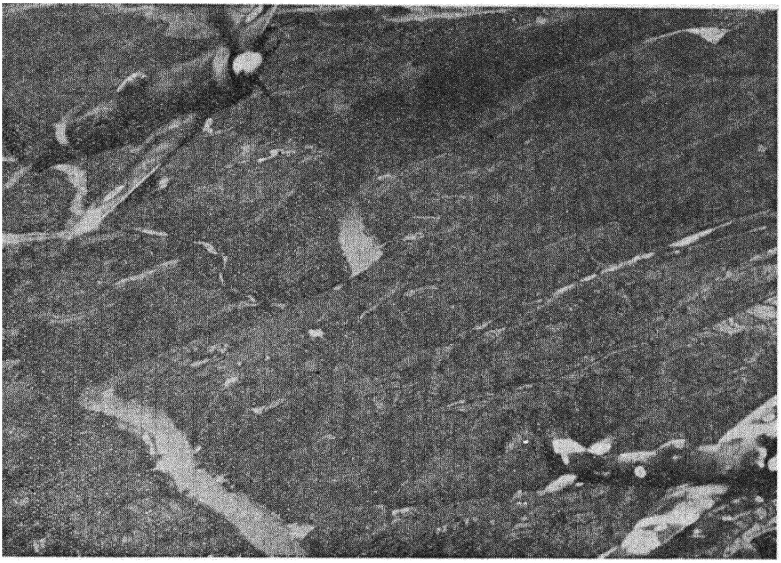

छंद ४७.

खुकरी से तेज वक्र, बल्लम से नोकदार,
कंगर कंगारे कृष्ण गंगा तट ठांव ठांव.

भारत के सिंह शैल खेतन में कोप तहं,
बीनि बीनि मारें खल मींसें दल दांव दांव—

काटत लवन्ना, डज रौंद देत दस्युदल,
खट्ट खट्ट खींचें, धर चट्टें धम धूमधाम.

कूदे बच पाये नहिं बूड़े बच पाये रिपु,
विनय-चिंघाड़ैं टेक त्राहिमाम् त्राहिमाम्.

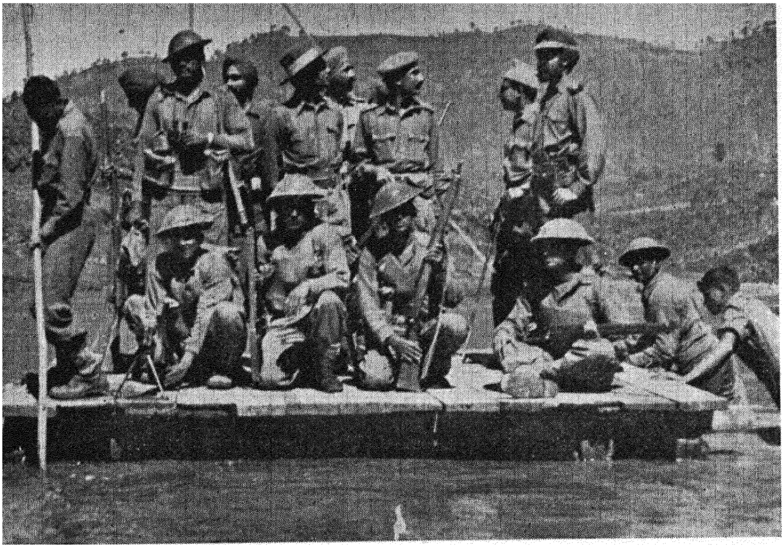

छंद ४८.

कंदर निवासी रिपु, दीख्यो जो असंख्य हिम,
श्रृंग की चढ़ाई चढ़ रात के पहर में.

आगे हिम पाछे हिम दांय बांयें छाई हिम,
रेंग रग बढ़ें वीर, हिम के कहर में.

लांघत पहार तलवार धार शीत सेज,
उछट उछट हिम सिंधु की लहर में.

दबक दबोचो शत्रु किर्च की नुकीली धार,
देह त्याग भागें दस्यु हल्ला के हहर में.

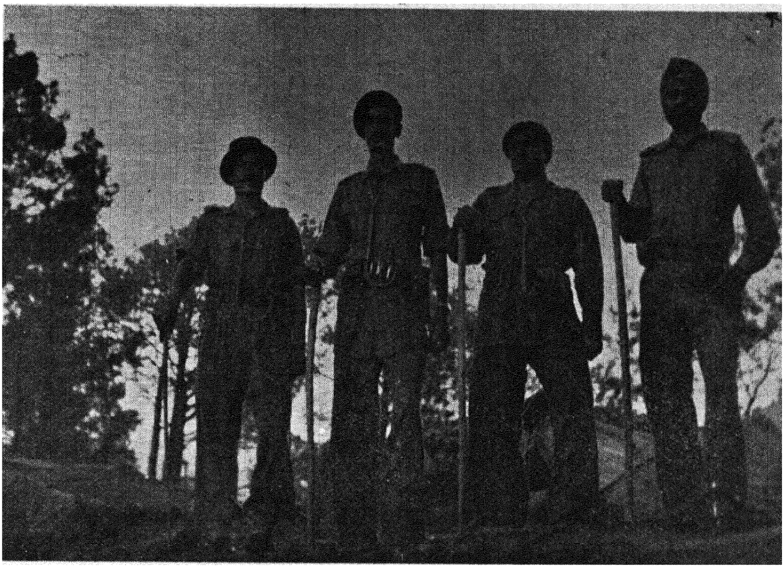

छंद ४६.

भारत जुझारे विकरारे रन कूंदे जब,
विद्युत से चीर धंसें शत्रु की कमान में.

झटक उमेंठे खट खटक चमेंटें कट,
गुंथ गुंथ जावें खैंच भींचें मयदान में.

शीशन सो शीश डाट छातिन में लात देंय,
उठन न पावें धर मारहि चटान में.

सांस न समाये रिपु सके न पराय धाय,
ऐसे झर जांय जैसे पात बरहान में.

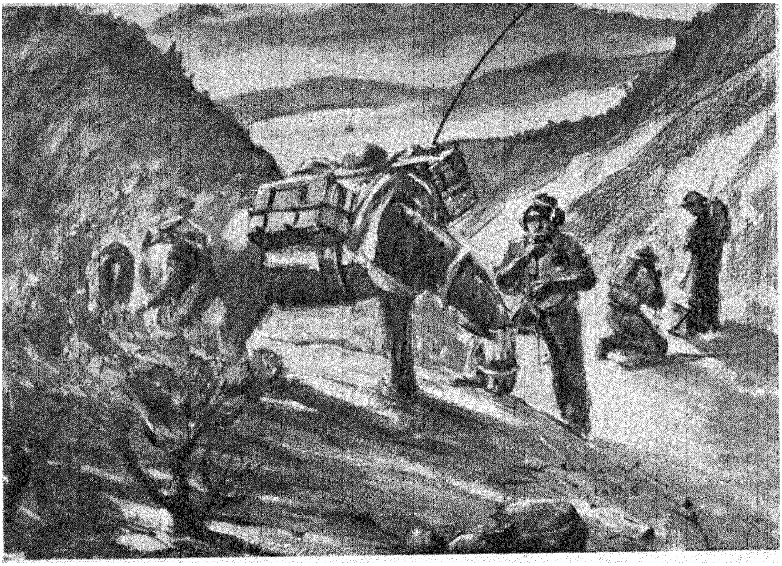

छंद ५०.

सामुहै दहाड़ रण रोपत प्रचंड शूर,
जगन जगावें पथ नेजे बल तेज के.

श्वांस सकपाने ओंठ ओंठ पपड़ाने भीरु,
जन्नत जहाद होड़ छोड़ें परवेज के.

दांत लौं मुसल्लह तऊ फेंक फेंक कुल्ला भगें,
भागत उपाहने कलाम-कौल तेज के.

घेर घेर काटो पुनि, बेर बेर काटो पुनि
फेर फेर काटो रनखेत में गुरेज के.

छंद ५१.

पौरुष मतंग की अनंगना चिंघाड़ रोष,
जूझत जवान धीर यौवन अकाल के.

रौंदत कुलच्छ क्रूर, धमक धमाक धम,
घालत हैं घाट घाट बूंटन उछाल के.

धमक धमैकें धांय-धांय धूम धौंसन से,
झपक झपाके कचकाने फन व्याल के.

एक बार बार-बार, बारहा हजार बार,
कटक झटक खेत काटें टिथवाल के.

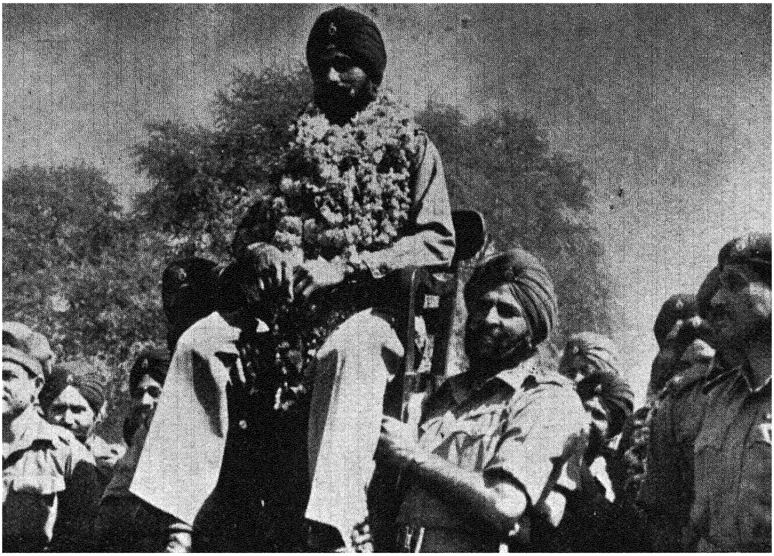

छंद ५२.

रच्छक करम सिंह, पावन परम वीर,
कूरन कटक कट्‌ट काटत कमाल में.

खंड खंड खांडे कर, रुंड मुंड बांडे कर,
लोथे उतरायें गर्म शोणित तलाब में.

श्रृंगन रगेद खेद, घाटन चमौध पैद,
नेजन हुलेक छेद, भींच भींच ढाल में.

लोथन की कीच कीच, जन्नत की रीझ सीझ,
धूम मर्दिमारी पठनैती टिथवाल में.

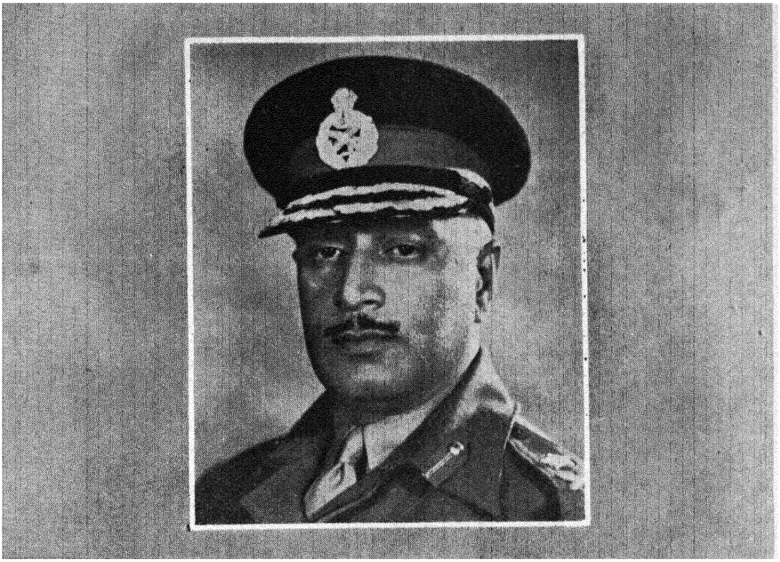

छंद ५३

कुटिल कुचाली दस्यु दानव से धाये भूम,
प्रज्ञ बुद्ध देश, दल-बादल के दाप सों.

खबर थिमैया सुनी फड़क प्रचारे बाहु,
रोषित कृशानु कढ़े खिंचे भौंह चाप सों.

होय न रजौरी भांति शत्रुन की पैठ लेह,
पैंज पै बचाऊं देश क्रूरता कलाप सों.

काल को हंकारों, महाकाल को प्रचारों, विधि--
--वाम को पछारों, पौन-पूत के प्रताप सों.

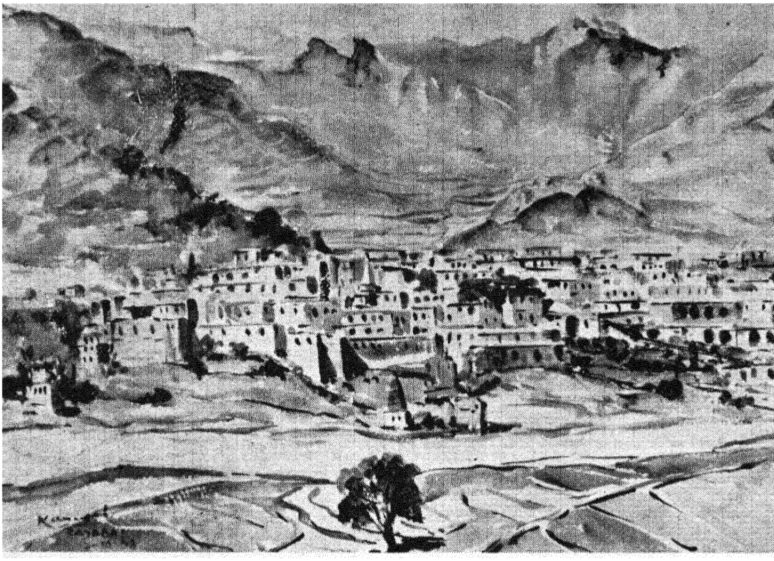

छंद ५४.

हठ के हमीर वीर, दस्यु दल चीर चीर,
बांको कियो साको, जंग जौहर मरोर में.

केसर से प्राण सींच, केसर के बानन में,
काल से दहाड़ शत्रु रौंदे झकझोर में.

मंदर कंगूर आग संगर सरूर आग,
आग से बुझायें आग जंग बरजोर में.

शस्त्रन भिदे सो भानुमंडल को भेद गये,
लाज राखी देश की रजौरी के चितौर में.

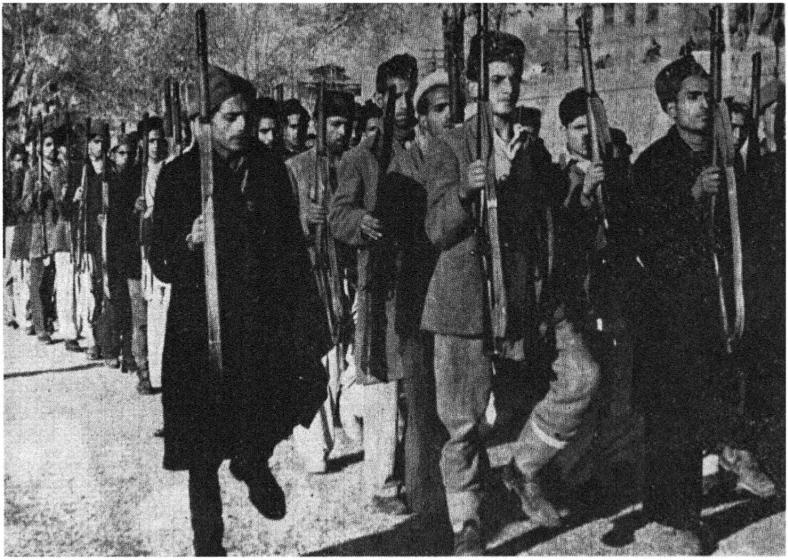

छंद ५५.

कांप मेघ नादन से धायो चढ़ दस्यु वंश,
शोणित प्रहर कढ़ आये अहिमौरी के.

केसर की पाग बांध कूंदे रन पूत पूत,
खांडन निमूलें खल टांडे शहजोरी के.

जौहर दिखायें तेज तेग शमशीरन में,
जौहर अंगारन में धीर बलिमौरी के.

धन्य वीर बादल औ' धन्य वीर गोरा जूझ,
आंकुर चितौड़ उठे माटिन रजौरी के.

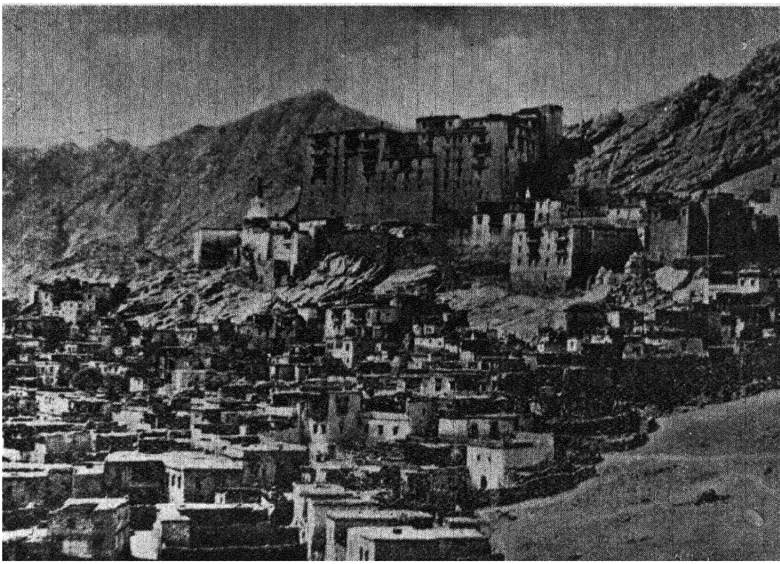

छंद ५६.

और वह लेह जहं राजत विदेह लोग,
ऊंचे वह देस ऊंचे महल अटारी हैं.

प्रकृति नटी ने गिरि शृंखला संवारे कोट,
सभ्यता सराप जहं एक न दुखारी हैं.

सेवक तथागत के मानव पुनीत जहं,
गेह गेह नेह भव्य भारत पुजारी हैं.

शांति उजियारी जहं अचल अहिंसा नभ,
एक ओर लेह दूजी ओर त्रिपुरारी हैं.

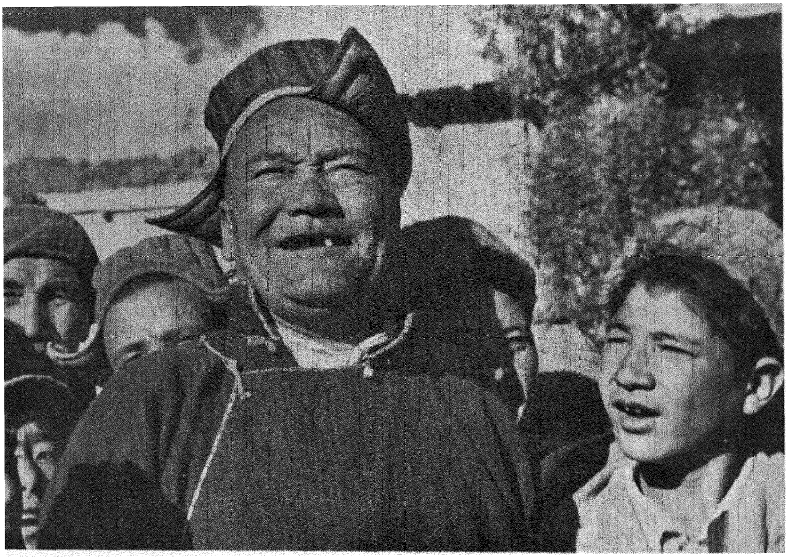

छंद ५७.

सुरभि सनातन की चंद चांदनी सी लेह,
यौवन पुरातन की अचल सुरम्यता.

कलुष विहीन, खल हीन, मल हीन नर,
धरणि तथागत की पूजित-पवित्रता.

ममता पिराने हिय, नेहन जुराने जिय,
मन हरियाले व लतानें हरीं नव्यता.

मनुज मनुज बीच तहं भेद जाने कौन,
देव में मनुष्य सो मनुष्यन में देवता.

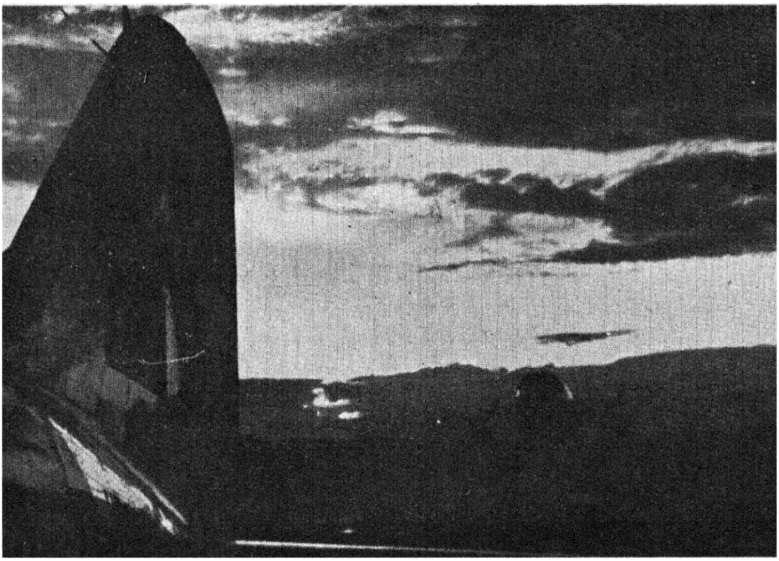

छंद ५८.

सोचत रजौरी भांति, होय न विध्वंस लेह,
क्रूरता-सहोदर चढ़े हैं दुष्ट जातुधान.

हिंद के उजारे शक्तिदूत चले सिंह पूत,
तेवर चढ़ाये औ' चढ़ाये देह नेह प्रान.

पौरुष पराक्रम के सैनिक महान जय,
जगत निहारें जकें, देव लोक ज्ञान-ध्यान.

पाटी मेट दीन्ह, विधि आंक के लिलार लेख,
बोल हनुमान जय बोल उड़े वायुयान.

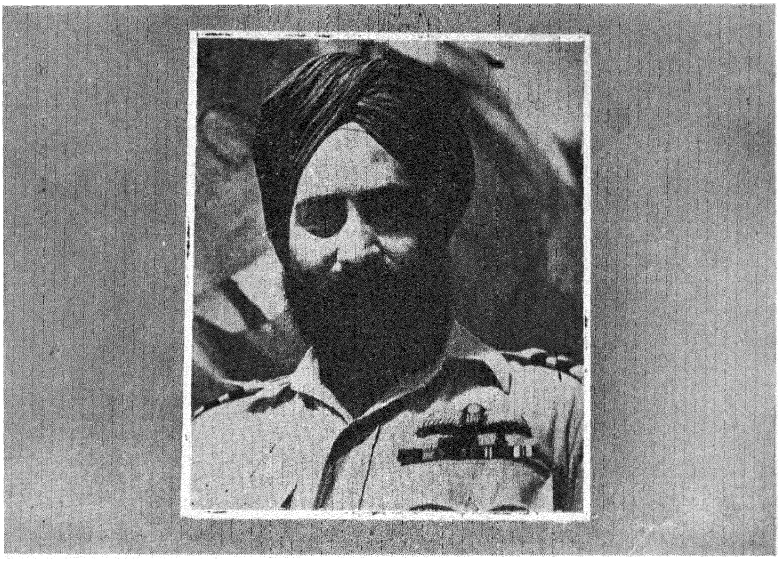

छंद ५६.

मिहिर गुरू की लांघ जांऊ मैं प्रचण्ड गिरि,
तोड़ डारों दांत देखूं कौन लाल माई का.

गावत अकाल गीत, त्याग जग रीत प्रीत,
लीन्ह जगजीत कौल बांका मरदाई का.

काकपिट बैठ यह सोचत मिहिर सिंह,
पथ नहिं जान्यो लेह मारग हवाई का.

कैसे दीनबंधु नाम लेत हैं मुसल्लह उफ,
बोलत हैं हल्ला काम करत नसाई का.

छंद ६०.

नाम लेत अल्ला और बोलत हैं हल्ला उफ़,
बांचत थिमैया खेल बांके सूत्रधार के.

साँई बिन जाने यह धरणी बुढ़ानी, जग-
-जीवन बुढ़ाने पल नखत बहार के.

एकै भगवान यीशु अल्ला अरु साहब सो,
वादक ही एक सब एकै स्वर तार के.

मानव सलोने बीच भेद कहां आया फिर,
जंगम खिलौने एक आवे के कुम्हार के.

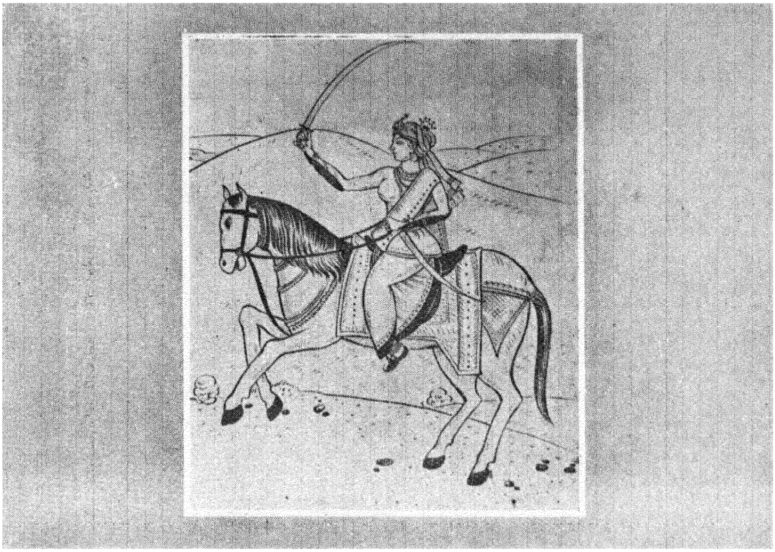

छंद ६१.

गिरत खिलौने कछु, लड़त खिलौने कछु,
हेर फेर माटी मिल जाती फेर माटी में.

मरण हिंडोले सब झूलत सनातन से,
कौन धंस पायो कल्पवृक्षन की घाटी में.

मक्कर फंसो है मोह-मत्सर फंसो है जग,
व्यूह जकड़ाने नर माया अरकाटी में.

कैसो इंद्रजाल कौतुकी ने गढ़ डारो यह,
माटी को मिलत प्रान, प्रान अंत माटी में.

छंद ६२.

माया और शिव एक, खेल पै अनेक रांचें,
सिंधु व तरंग ज्यों प्रसाद एक कत्त दो.

प्रकृति पुरुष जैसे एक राग वीणा द्वय,
पुष्प व पराग ज्यों प्रमाद एक लत्त दो.

सर औ' सरोज प्रान, गावत हैं एक गान,
जैसे बट बीज एक तत्व हैं गवात्त दो.

मन और प्राण जाने जीवन के एक गीत,
जीवन व मृत्यु एक चंद्रमा के पत्त दो.

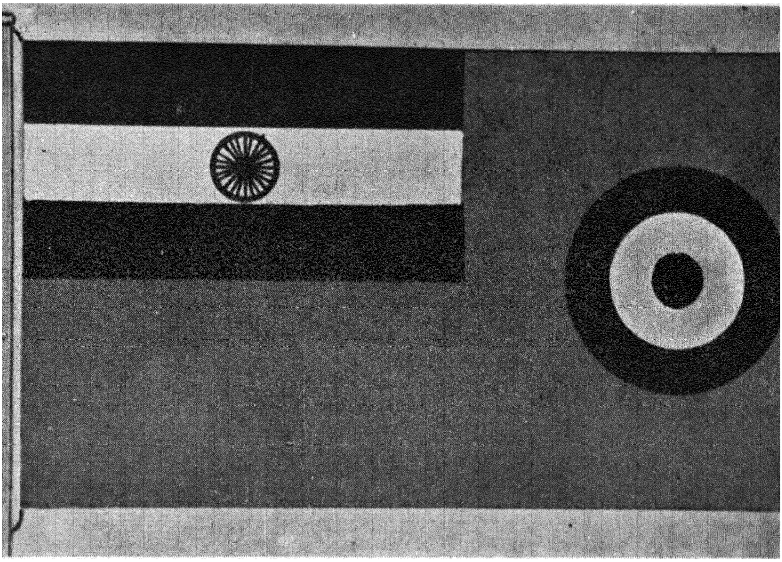

छंद ६३.

सोचत थिमैया पुनि जांचत मिहिर सिंह,
कीरत अमर देह जीवन विनाशवान.

पाहुन है मरण महोत्सव का जीव यह,
जीवन सुहावन को अंत एक मृत्युगान.

युग तैं परंपरा रही है यह भारत की,
यश की दिवाली जोत प्रानन के दीपदान.

झुक के बचाये शीश नृपति हिमाचल ने,
मेंड़ दाब दाब लेत इंद्र की अकास यान.

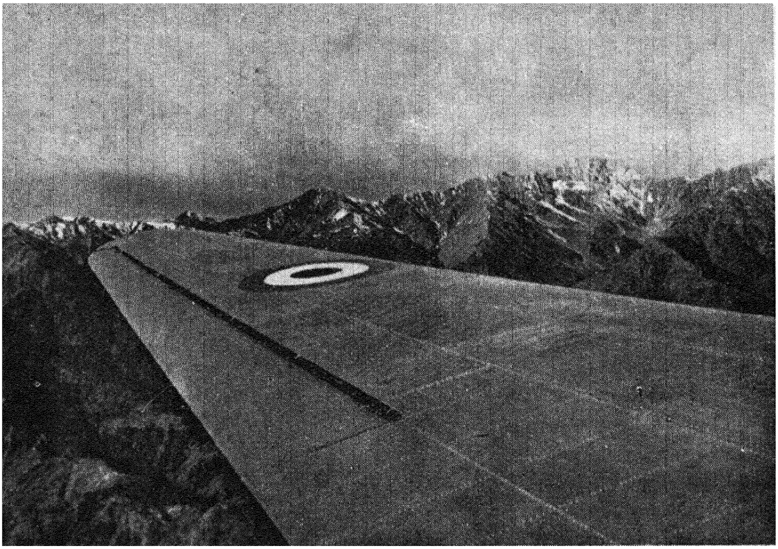

छंद ६४.

भरर्भरर् चीर अंचल अकास यान,
चढ़त बढ़त जात रोर काल अट्टहास.

धावत हैं मेघ, झकझोरत हैं वायु पथ,
प्रकृति नहीं है थिर थिरकत चंद्रहास.

उठत उठत गिरें, गिरत गिरत उठें,
खेलत खिलाड़ी मृत्यु जीवन के हास लास.

बदल बदल विधि लिखत लिलार लेख,
वर्तमान जीत्यो इन कीन्हों भवितव्य दास.

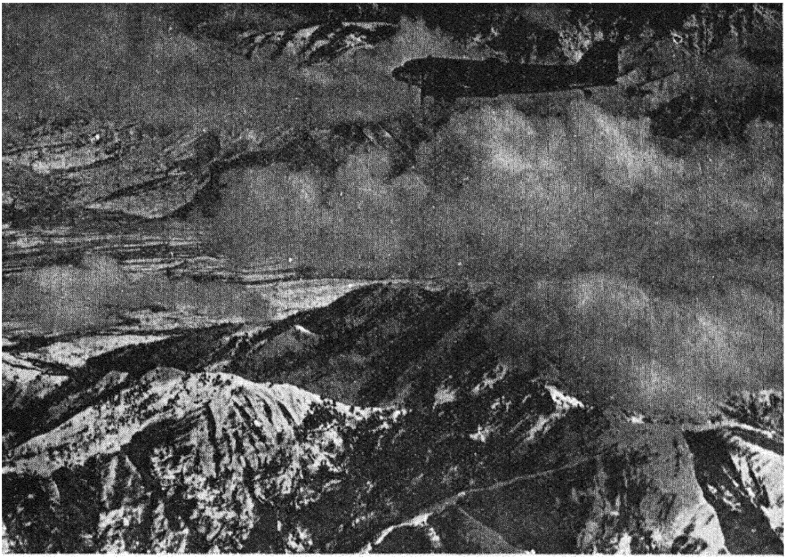

छंद ६५.

ऊंचो फेर ऊंचो जात फारत जहाज नभ,
हूक कूक हूकन हहार हहाकार की.

हिम बरहान में बिलाने बलवान भानु,
औचक हिरानी अंधगनी गह पार की.

पूंछत हैं शंकर प्रलंकर चढ़ो ये कौन,
खांडन की धार कौन प्रीतत अंगार की.

जेहि ओर जायें तिहि ओर पथ खांच देंहि,
चूम चूम लेत लाज अंबर पहार की.

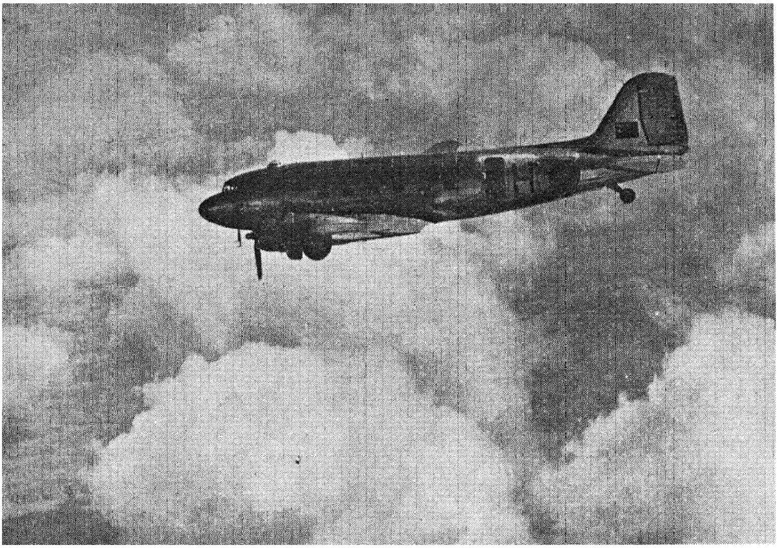

छंद ६६.

बर्फ बरसात गिरि शृंग शृंग बर्फ बसे,
वर्फ के पहाड़ बहै हवा बरफारी है.

दामिनी दमंक चीर चीर के बिछावै पथ,
भैरव भुजंग काल रात अंधियारी है.

बाइस हजार फीट उड़न दहाड़ यान,
कांपत अकाश गिरि शृंखला पुकारी है.

भारत से टूटे पौन-पूत कैधों महाप्राण,
वासव को वज्र, शेषशायी की सवारी है.

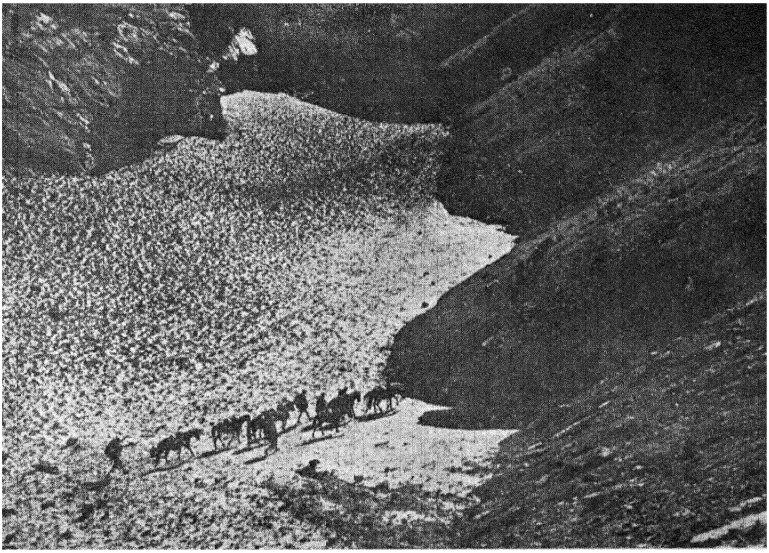

छंद ६७.

धड़क पहाड़ हाड़ धाड़त धड़ंत धाड़,
धक्कर धक्कर धूम धूमत धिमानियां.

बरफ बतीसी फाड़ छांड़त अवाक मुख,
लोच पथरैनी खोर चूमत विमानियां.

छीन छीन लेत कौर काल को अकाल यान,
दीपत दिपत दीप दीपन से साइयां.

झोंकन झंझोर झूम रोरत मरोर यान,
कांपत निचाई घबरावत उंचाइयां.

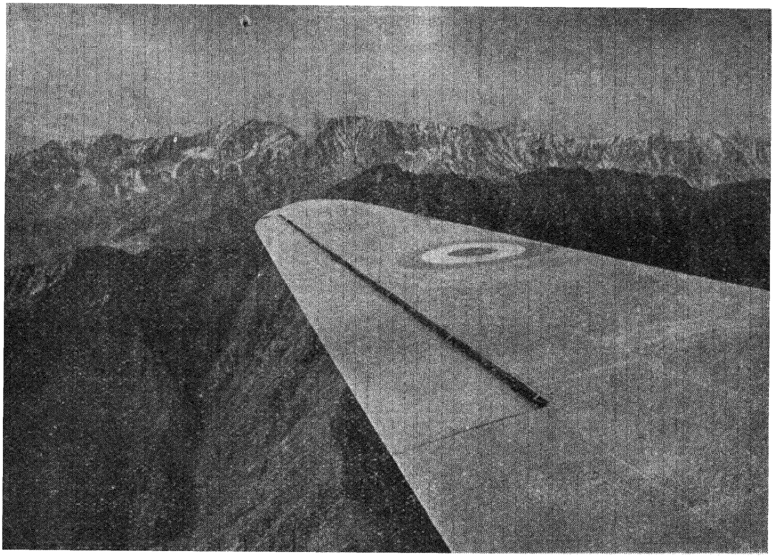

छंद ६८.

हिम अध उरध बिदिस दिस सेत सेत,
मानो मंडरानो पुण्य पूत धूम यज्ञ होम.

शीत शैल कंप ज्वाल जाल सी जरावे दांत,
भींच चक्र खावे, घर्र घर्र धातु रोम रोम.

शृंखला बिसारे, शृंग घाटिन बिसारे बढ़े,
काट काटि चाबे जात उज्जल तिमिर तोम.

भारत के विश्वकर्म प्रलय ववंडर से,
जहां पग धारें, फार डारत विशाल व्योम.

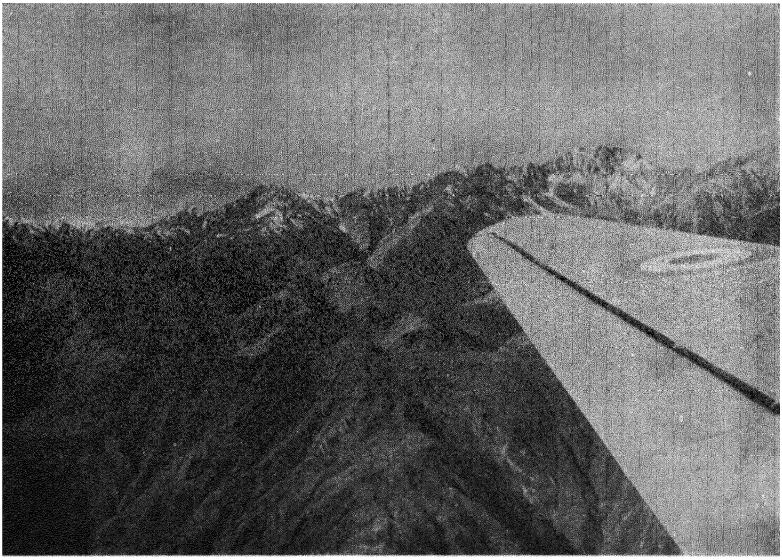

छंद ६९.

घुरर घुरर घूमि धाय चलो वायुयान,
मत्त सिंह कोपै शत्रु सिंधुर चिंघाड़े से.

बढ़त चढ़त जात लड़त कढ़त जात,
रौंद रौंद छांड़ि छांड़ बर्फ के अंधाड़े से.

मौत को विघोष काल-कंठ हिम प्लावन में,
गूंज गूंज उठें मानो जीत के नगाड़े से.

पूज के पवन-पूत मारुत के दूत लाये,
काल की कलाई बांध काल के अखाड़े से.

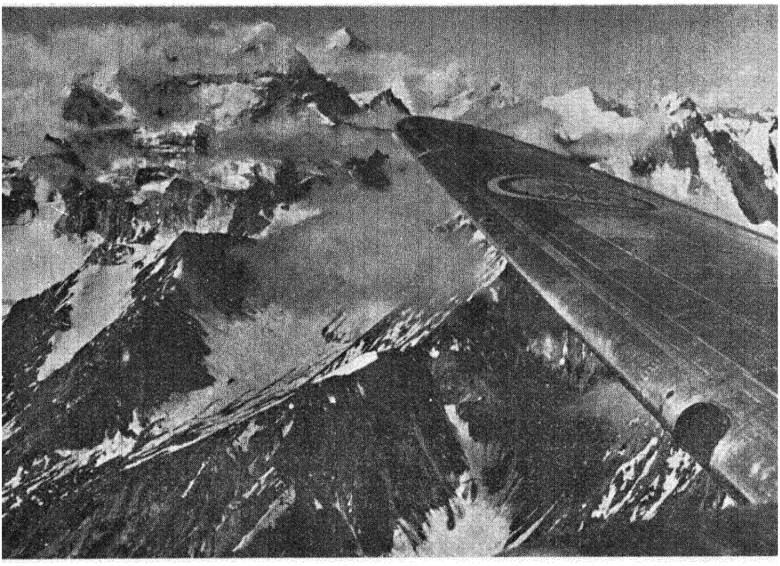

छंद ५०.

छूवन चला है यह कौन त्रिपुरारि देश,
कौन लांघ आया यह भीर भरी वादियां ?

कौन देवदूत यह पालक तथागत के,
जीवन-विदेह यह कौन वीरबानियां ?

आयो तम छेदन प्रतीत कौन वज्र-पुंज,
जकत पुकारें बैन औंघड़ सुदानियां—

भैया जी गणेश जू को गोदी में उठाव गौरि,
और घर बीच रानी बांध लेहु नादिया.

छंद ७१. Hindi Library

गिरिजा न मानें पट खोल खोल विश्वनाथ,
देखत तमाशो गिरि राज के शहर में.

कबहुं दिखानो श्वेत पुच्छल सो वायुयान,
कबहुं हिरानो बरहान के कुहर में.

कतहुं छिपानो ओट कतहुं उड़ानो लौट,
आयो कहं धायो नहिं सूझत कहर में.

शिव की झटक बांह गिरिजा पुकारें—'नाथ—,
अंबर में मेघ, यान मेघ के भंवर में.'

छंद ७२.

गिरत चढ़त मेघ-कहर भंवर बीच,
कढ़त दुरत होत तिल के प्रमान है.

शैलजा विलोक्यो, उर दया को उदधि उठो,
नाथ राखो वेग मृत्यु-दोलन पै यान है.

कालकूट-धारी शंभु हुलस विहंस कहैं,
तोरि डारो शंका, नभचारी महाग्रान है.

काल को खिलैया, उमा हिंद को विमान यह,
संकर संजीवन सहित हनुमान है.

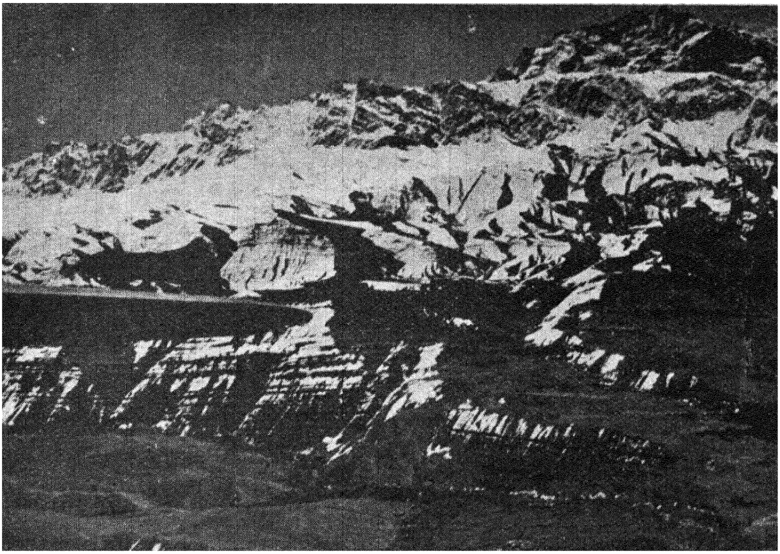

छंद ७३.

सेवक तथागत के काल के अकाल नित,
सोई हनुमान सोई कीरत सुरेश की.

भारती मिहिर सिंह लांघत पयोधि-गिरि,
जागत जवानी यश पौरुष अशेष की.

कांपै महि भाल दिग पाल युग कल्प वर्ष,
छाती धड़कानी पल विपल निमेष की.

मौत न हटाई हटै, जिंदगी हटाई हटै,
आंख न हटाई हटै गिरजा गणेश की.

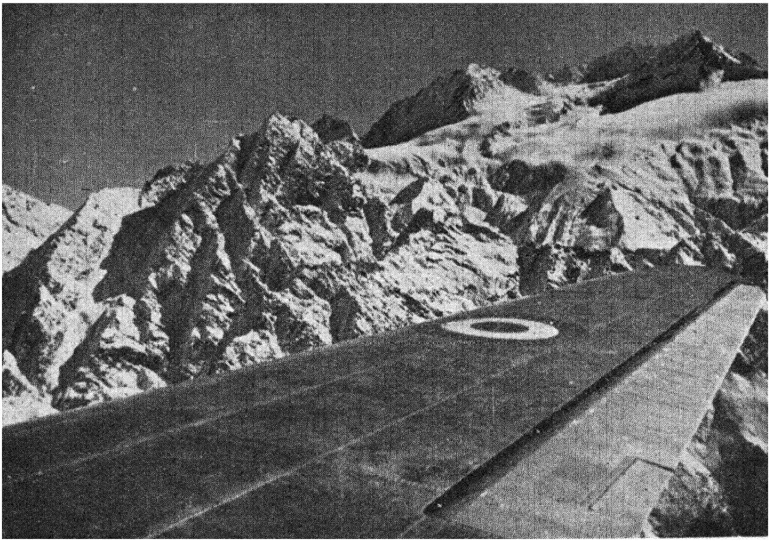

छंद ७४.

प्रीति के चरण चाप अक्षय मरण मुग्ध,
जीवन सनाथ कर यौवन को मूर्तमान.

गुंफित बवंडर को माथत मथानी भांति,
अटल अमोघ काल कीलन को रामबान.

चौंकत उतंग शैल शृंग शृंग कांप उठें,
अचल हिमाचल को चीर बढ़े कीर्तिवान.

घरर घरर घर्र घूमत प्रवत्त चक्र,
फारत समीर सिंधु कौंध कौंध वायुयान.

छंद ७५. Hindi Library

शीत कंप कंपन में, वारिद दुरंतन में,
सऱऱ सऱऱ सर्र फाड़ैं पथ भारती.

कड़क कड़न्त कड़ धड़ड़ धड़न्त धड़,
तड़ड़ तड़ड़ धाड़ धाड़त महारथी.

पल में पलक ओट, तिल में झलक ओट,
छन में अमरनाथ चूमें अमरावती.

वीरन के प्राण हंस गिरजा संजोयें हिय,
अंबर दिखायें राह भोले शिव सारथी.

छंद ७६.

खड़ड़ अड़ड़ खड़ टूटैं गिरि शृंग शृंग,
रगड़ हिमाचल को कूंद जात हनुमान.

अनिप अकंपन के जीवन जनम टेक,
भूत से भविष्य छीन, जीत लेत वर्तमान.

अर्र्र् अर्र्र् अर्र, फर्र्र् फर्र्र् फर्र,
तर्र्र् तर्र्र् तर्र, व्योम व्योम कंपमान.

खर्र्र् खर्र्र् खर्र, भर्र्र् भर्र्र् भर्र,
सर्र्र् सर्र्र् सर्र, शैल शैल वायुयान.

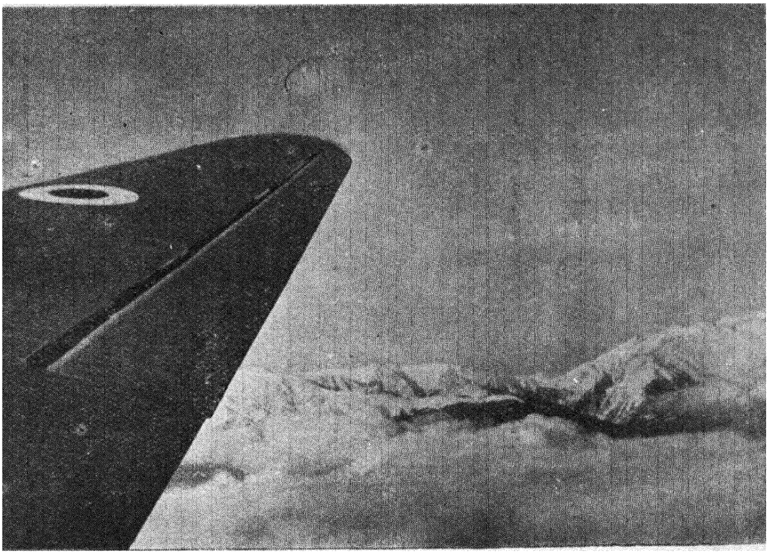

छंद ७७.

रौंदत प्रभंजन को, मेघ हिम प्लावन को,
गिरिन के शृंग शृंग छांड़े हत डांड़े से.

गिरत उठत उड़, उड़त-गिरत उठ,
उड़त उड़त जात अंधड़ अंधाड़े से.

चढ़त कढ़त जात, अड़त बढ़त जात,
जूझत लड़त जात काल पथ गाढ़े से.

ध्यान मीत पूज जै जननी जनमभूमि,
काल बांध लाये कालकूट के अखाड़े से.

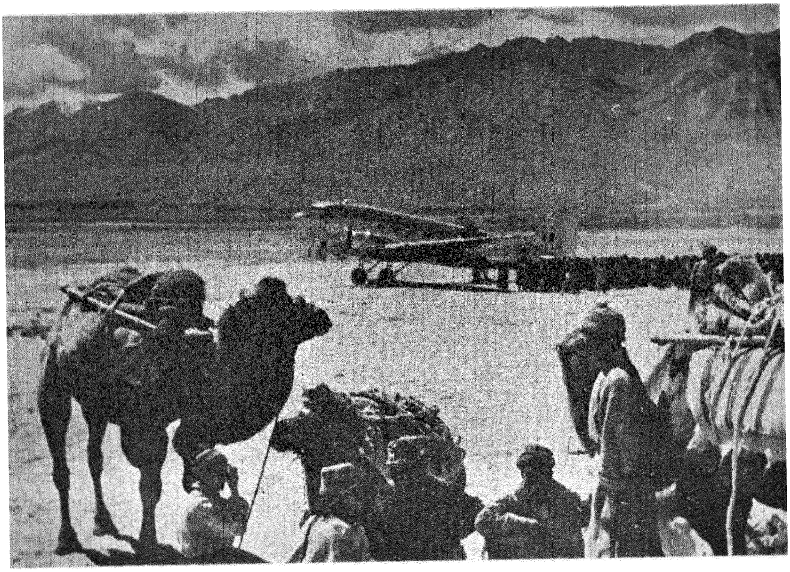

छंद ७८.

कोउ न एयर फील्ड सोचत मिहिर सिंह,
मानव हिरानो मृत्यु जीवन के भेद में.

एक मात्र सत्य गुरु रच्छक अकाल रूप,
मातु पद प्रीत धन्य मानव की देह में.

पौरुष स्वयंवर के आंचल को मर्म यही,
जीवन सुहाग बसै यौवन अदेह में.

विश्व प्राण भारत के पारथ अखंड जय,
बोल जय हिंद वीर कूद पड़ो लेह में.

छंद ७६.

और उत लेह आयो भारत विमान लख,
धरणि प्रबुद्ध बुद्ध रोम रोम पुलकी.

कलश सिंगारें जयकारें नभ मंडल में,
तिलक चढ़ावें यश गावें गीत हुलसी.

कौतुक खिलाड़ी चण सरस सप्राण करीं
लतिका लदाखन की आग नाग भुलसीं.

फूलैं न समात जलजात ज्यों प्रभात भैंट,
सिय पाये राम जैसे राम पायें तुलसी.

छंद ८०.

भागत मिली न गैल भागे बदनैते भीरु,
फौजन पै फौज चढ़ आवत अकासिया.

सोचत जवान, ऐंठ भूलो है गुमान अब,
नाहक पठान यह लागत मिरासिया.

सहस सहस बाहु रोको है कटक दस्यु,
ऐसो पढ़ मारो सिद्ध जोगिया तिरासिया.

भर भर जांय बही मुंशी चित्रगुप्त जू की,
रोकैं नाहिं लेखनी सो छांड़ें नहिं हाशिया.

छंद ८१.

टूटे वज्र भाँति चौंध, शत्रु के निरभ्र नभ,
प्रान ले हथेली धाये कहर-गहिर में.

दुर्गम अदीख राह, काल बटमार तहं,
विजय दिवाने खेले मृत्यु के हहर में.

मूंड खेत छांड़े बदनैते हिम खेतन में,
बोरत जहादी कोप सिंधु की लहर में.

काटत कटक क्रुद्ध कौंधत ठसक ठाठ,
राखे खोल खाते काल आठ हू पहर में.

छंद ८२.

Hindi Library

सन्न् सन्न् भौंक मारत मशीन गन,
दन्न् दन्न् गोले धाकैं दहकानी के.

घन्न् घन्न् चालै, हौजर गनों की मार,
माटर धन्न् धक धानैं धूमधानी के.

अर्र् अर्र् किरचानैं भक भूक चालीं,
कढ़े हैं गुबार कछु नेजा कछु पानी के.

खोये पत पानी के, धोये पत पानी के,
धरणि पताल बचें डूबें बिन पानी के.

छंद ८३.

Hindi Seminar Library
OSM... ...S.TI

मीड़ि डारे पैठ मौत घाट में जहादी जूथ,
रौंदी झकझोर शूर आन बान पानी की.

दीन्हों जो रजेन्द्र पंथ सोम उसमान राय,
उज्वल परंपरा प्रकाशित निशानी की.

बरफ पहाड़न पै भारत की टैंक सुन,
छाती दरकानी छन शत्रु दहकानी की.

मीन जलहीन जिमि खग पंखहीन जिमि,
फारे गये जोश जारी हिम्मत जवानी की.

छंद ८४.

अगम शिखर चढ़ें, टैंक की घहर घोर,
काल को लगन हठहट्टन को बांच देत.

हिम को न मानें न हिमाद्रि सनमानें शूर,
कठिन कृतांत मार्ग खेल रेख खांच देत.

अकथ कहानी नल नील को पुराने सेतु,
वीर तुंगराज के जवान नयो बांध देत.

उनके छुवे से गिरि बूड़े न समुद्र बीच,
इनके छुवे से गिरि शृंग पंथ छांड़ देत.

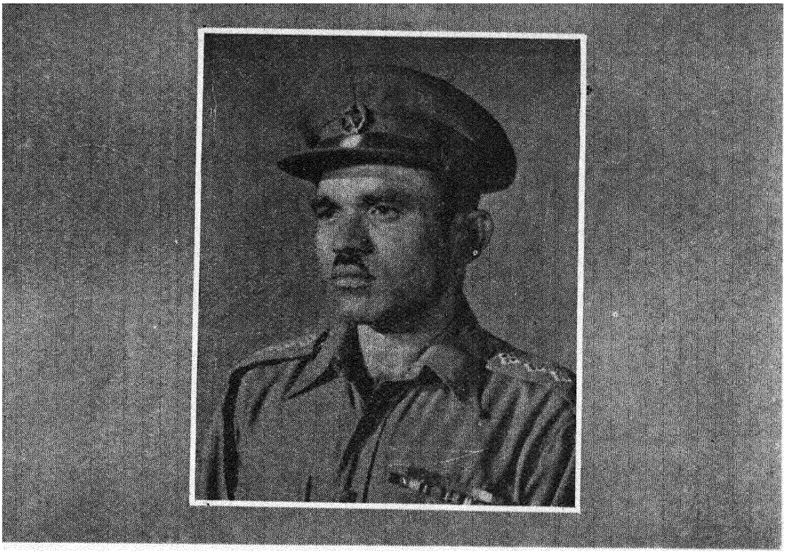

छंद ८५.

टैंकन की भीति को निवारे कौन वारे प्राण,
पंथ जाल व्याल, रिपु छद्म काल खेत में.

डग डग मौत की दहाड़ ले सुरंग सोवे,
शीश हाथ वीर बढ़ो काल कमनैत में.

पौरुष स्वदेश रघुराने हठ राखो रन,
मृत्यु मुख डारो हाथ चेतन अचेत में.

उड़ उड़ जात रंग खेत में सुरंगन के,
मौत को पछाड़ टैंक तारे रन खेत में.

छंद ८६.

दच्छिण में लांघयो, सोई उत्तर में रामबन,
अंबर से आग आग गाजत हैं पौन-पूत.

हिम के अगम्य शृंग, यौवन-उतंग-केतु,
खांचत भविष्य लीक शोणित से काल कूट.

प्रान सूत सूतन पै, मान अनहूतन के,
जोम रन हांकैं मदरासी सिख राजपूत.

टैंकन अंगार ज्वाल, बर्फन दमार लाल,
हिम के दुधारन पै कूंद जात अग्निपूत.

छंद ८७.

Hindi

अचल अमावस घुंघटवा में चंद मुख,
रानी पटरानी घाट घाटिन में जोजिला.

वायु के दुधारे जहं काटत हैं अंग अंग,
कोऊ न टिकानो जहं जीवन को घोंसला.

प्राण सकपायें घबरायें जहं श्वास श्वास,
साहस लौं ज्ञान जहं छातिन में हौंसला.

हिम की अटारी ठगी ऐंठी सी कटार भांति,
सहज रिसानी, खिसयानी, नाम जोजिला.

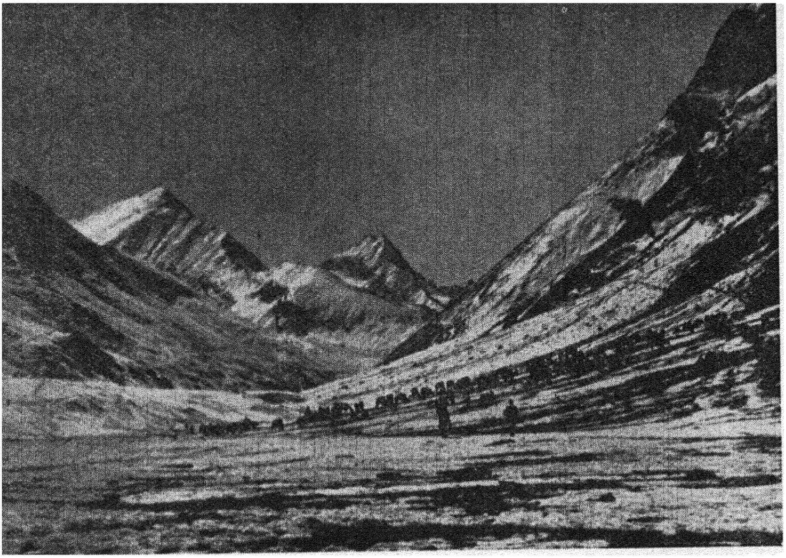

छंद ८८.

अखिल अखंड हिम, प्रबल प्रचंड हिम,
जहं लौं दिखाये हिम हेममयी जोजिला.

मीलन लौं उंची, कोस कोसन भृकुटि वक्र,
कंपित कुपित, अट्टहास नाम जोजिला.

कहर घहर घोर, हहर सरर शोर,
गान तान वारी मानो प्रलय की कोकिला.

धरणि प्रबोधी बुद्ध द्वार विकराल डटी,
रावन अशीशी लंक पालिका सी जोजिला.

छंद ८६.

टैंक घाराघार गूंजी, जोजिला चिंघाड़ी चौंक,
भारत जुझारन ने बोलो बढ़ हल्ला रे.

काल कमनैतों की दुहाई फिरी बैरिन में,
माँगैं प्राण भीख सो पसार पाग पल्ला रे.

बरफ नसेनी चढ़ें, चोटी बरफैनी चढ़ें,
देखत ठगे से दस्यु परम मुसल्ला रे.

कूदैं हिमधार शूर धावैं हिम आरन पै,
तैरें हिम सावन में धौंसन धड़ल्ला रे.

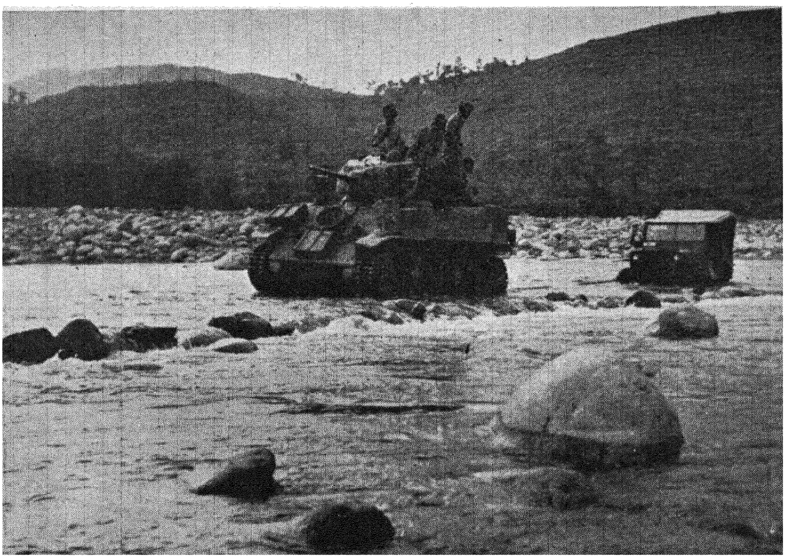

छंद ६०.

चढ़त हरावल जो हिंद राव रावल के,
धक धधकाना खरभाना दल क्रूर का.

गरब गसीले टैंक टैंकन में सिंह पूत,
मार-धाड़ काढ़ैं प्राण दस्यु मगरूर का.

ऐंठी पठनेटी व उमेठो हठ-हेठी कस,
धरि धरि मूसो आब पानी कोह नूर का.

अंधक पुकारें रिपु खोर खोर खंदक में,
जल्वागर आयो फिर टैंकन में तूर का.

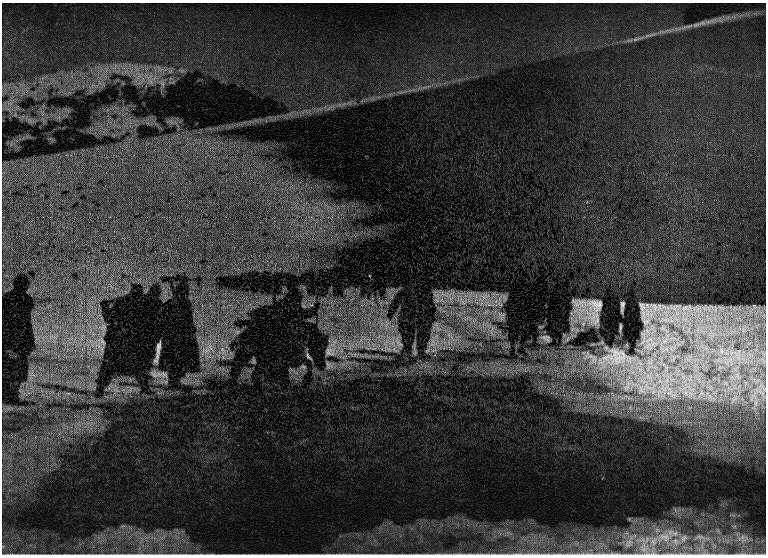

छंद ६१.

हिम में हिमंचल के कौंध कौंध लौह पूत,
काटत कटक शठ भागत भड़क जात.

झपट लपट सब कपट डपट देत,
रुस्तम दरिन्दे रन छोड़त छड़क जात.

हिम्मत बड़ाई, अकड़ाई, धड़ चूर चूर,
लोथें पठनट्टीं, फड़ फड़क लुढ़क जात.

गूंथत पलोथत चमौथत जो खेत खेत,
मूंड टूट जात, धड़ भागत अकड़ जात.

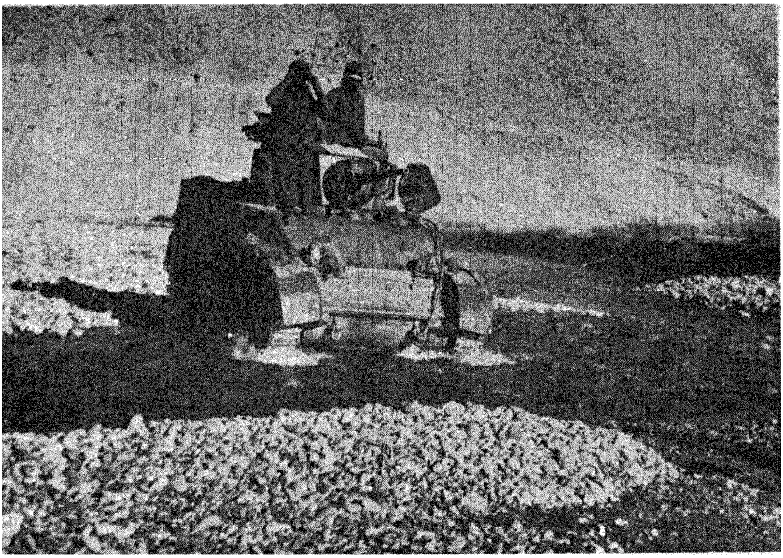

छंद ६२.

जोजिला विदारी चढ़ धाये जो वचन सिंह,
भागैं दिग-अंबरा जहाद के अज़ीज बे.

टैंकन की चंडिका प्रकोपी जब लाल लाल,
आग हिम सागर में लागी बूझ बूझ के.

हीर मरदाने अड़, गोड़ मोड़ खानैं रिपु,
कटक पछाड़ें दलवट्टैं दल मींज के.

टैंकन की आग जीभ, सोखत है शत्रु रक्त,
धड़क धमाके निरबीजैं रक्त बीज के.

छंद ६३.

दुर्द्धर चटानन में, खोह ऊह पोहन में,
शोणित की कीचन, डुबायें द्वार द्वारपाल.

लोहू के तिलक को मुहूर्त वर लौह प्राण,
कूदें धर मूदें, हिम खंदक में मीर यार.

खंडित खिलौने भांति टूटत गिरत दस्यु,
मारकाट तोपन धुआंनधार अंधकार.

भाला जिमि कुंजर के मस्तक के आर पार,
जोजिला चिंघाड़ फाड़ टैंक भई आरपार.

छंद ६४.

धंस धंस जात टंक हिमन गलाव कीच,
हिम की चटानें अर र रानीं अर र रावतीं.

कुलिस कठोर बर्फ-मेघन के कोप-कोप,
फाड़ैं, बिनजाने पथ, छातिन दरारतीं.

घूंघट अमावस उघारे जब टंकन ने,
माननि कुमारी हहरानी घबरावती.

हिय धड़कानी, हाड़ हाड़ कड़कानी वपु,
भौंसर पछाड़ खाय जोजिला चिंघाड़ती.

छंद ६५.

भैंटे वर बाहु जब रक्षक वचन सिंह,
जन्नत जहादिन के वंश न कड़ी रही.

धरणि तथागत में, आये मन भावन के,
जीवन जवानी बेल बाढ़ति बढ़ी रही.

सिय जयमालन बिकानो जिमि शंभु धनु,
नेह लरिकाई ध्रुव राम की अड़ी रही.

भामिनी बड़ी रही, सो लाज लौं गड़ी रही,
सोलह सिंगार सेत जोजिला पड़ी रही.

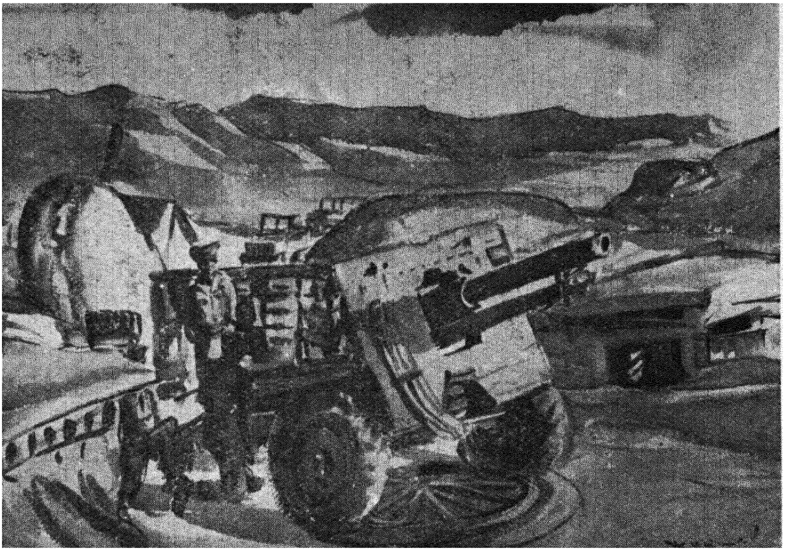

छंद १६.

बरफ पहाड़न की बरफ चटानन में,
टैंकन सवार ज्वान बूझैं ठकगत के.

उत्तर न छांड़े, प्रति-उत्तर न छांड़े छन,
खेदत बगती-रिपु जन्नत जहाद के.

गोलिन पै गोले दहकाने धधकाने धम,
गूंजत पहाड़ धाड़, नाद सिंह नाद के.

विजय वधूटी वर मेलति विजय माल,
रक्षक अमरनाथ, कौल शक्तिनाथ के.

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. D

छंद ६९

ताड़क प्रताड़ें, मधुकैटभ पछाड़ें धीर,
शोणित फुहार के उजारे मधुमास में.

हिम्मत हिराने हहराने, हत, हूत, हूण,
रोपै नहिं पैर एक-एको रण रास में.

हिम में हिमंचल में जोतित अमर सिंह,
गुरु की असीस के उतंग अट्टहास में.

कुटिल कुचाली तीन लोक हू बचेंगे नाहिं,
सत्य गुरु नानक की बानी फिर ड्रास में.

छंद ६८.

रक्तन के कुंड कुंड प्रेतनी अलाप गीत,
प्रेतन प्रभात पात प्रीत नव बेध से.

संगर पनारन में जन्नत के सब्ज बाग,
हिम्मत पराग रिपु कांपत कुरेद से.

लोथिन के कुंजन में बैरिन की कूक हूक,
बाटन पलाश रक्त मज्जन नवेद से.

शोणित सरोवर में मूढ़न की मूंड़ मूंड़,
भेजे कढ़ि आये फूल कमल सफेद से.

छंद ६६.

दावत अदावत की भागत जगत छांड़,
दस्युन जहाज शेष नाहिं राख-राखरी.

पावक-पवित्र धन्य भाग कशमीर भूमि,
जन्नत जहादिन की पांखिन न आंखरी.

फेर जनमेजय रचायो नाग-आग मख,
एक हू विभीषण ना, एक मीर जाफरी.

भारत सुहागिन के यौवन अमर धन्य,
बांधो बलि भांति क्रूर रावन को कांखरी.

छंद १००.

दारुन दलन दल दीन्ह छीन कीन्ह रिपु,
विकट जुझार बीच जूझ जुद्ध बंका के.

धारत न धीर, दस्यु भागत अधीर पीर,
छाती लौं समाय नांहि फेरे श्वांस हंपा के.

भाग भाग खेत सो छिपाने गिरि कंदर में,
बात कढ़ आवै न पसीने हड़कंपा के.

हिम्मत सिरानी, झूठी जन्नत जहाद जानी,
बाग के गुलाब न, लदाखी फूल चंपा के.

छंद १०१.

शत्रु के गुमान के निशान के निशान नाहिं,
नाम व निशान नाहिं शान-ठकुराई के.

जन्नत जहादी चिचयावैं धाड़ मार मार,
एक न हिसाबी रहे कपट कमाई के.

उड़त हवाई मुख, देखत हवाई उफ,
भागत हवाई रिपु, रौंदन हवाई के.

ताजी भई कीरत प्रतापी भूमि भारत की,
नाम लहरायैं फिर साहब गुसाईं के.

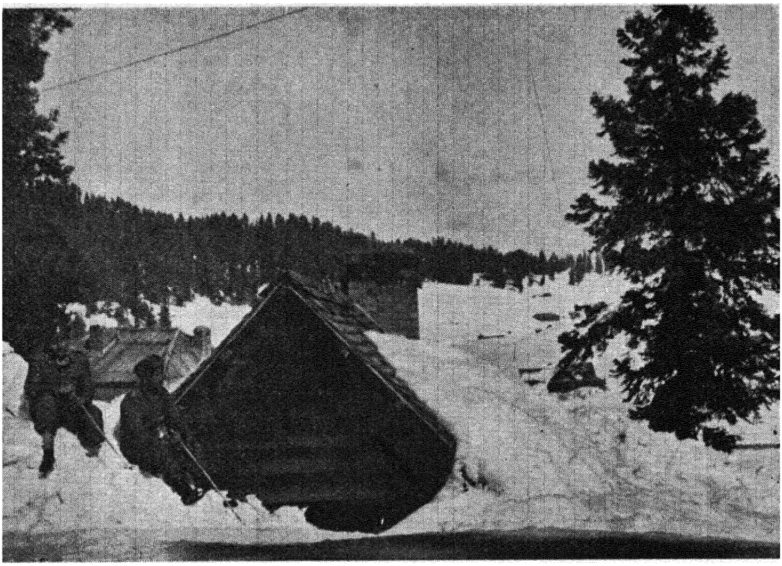

छंद १०२.

आहुति प्रचण्ड प्राण, मोर्चन पै ज्वान ज्वान,
श्रृंगन उतंगन में वीर रन पारधी.

दस्यु की दमारन को माटिन में मैट मैट,
मेघ-मेघनादिन बिदारें पूत मारुती.

गांधी पहलौटन के बांकुरे अजर नेह,
जीवन के राजसूय यौवन महारथी.

आंचल सुहाग शीश भैंटत चरण अंब,
लाल मुंड मालन सिंगारी मातु भारती.

छंद १०३.

मरद के कौल राखे, पौरुष के मोल राखे,
नाम अनमोल राखे भारत भरत के.

लाज अबलान राखी, धाक अरु शान राखी,
सूरज से फारे दुख बादर विपत के.

आगे राखे कदम, छदम सब भेदि डारे,
कीरत निशान सब देखत जगत के.

रकम भरी है सब मूल ब्याज सूदन लौं,
शेष न हिसाब राखे पानी और पत के.

छंद १०४.

अमर रहेंगे जो रचे हैं नये कुरुक्षेत्र,
अमर रहेगी कीर्ति पौरुष निशान की.

अमर उड़ी की चिरकाल लौं अमर बेल,
अमर जवानी नवशेरा रन ठान की.

अमर रहेंगे रन संगर अमरनाथ,
अमर कहानी लेह वायु अभियान की.

अमर रहेंगे टिथवाल के अभय केतु
अमर रहेगी पूंछ, बांधी हनुमान की.

छंद १०५.

अमर सुहाग फूल मातु को रजेन्द्र सिंह,
भावन भुअन कीर्ति राय छबिमान की.

हंसत हथेली शीश भैंटो जय सोमनाथ,
धन्य यदुनाथ, जय सैनिक महान की.

धरम करम सिंह, राखे रघु-राने रण,
प्रीतम प्रताप मूर्ति अंगद सुजान की.

मानक मिहिर सिंह, बानक वचन सिंह,
अच्चर अशेष गति वीर उसमान की.

छंद १०६.

गर्व फहरायो यश भारती विजय केतु,
कीरत कमान मान-आन करिअापा की.

पाय के असीस मातु, काल सिंधु बांध लीन्ह,
जीवन ज्वलंत शान बान करिआपा की.

साहस सहासन में वज्र सो दधीच पूत,
पौरुष-प्रताप-प्राण रीत करिआपा की.

अचल रहेगी हिम अंचल में शंकर सी,
जननी जनम भूमि प्रीत करिआपा की.

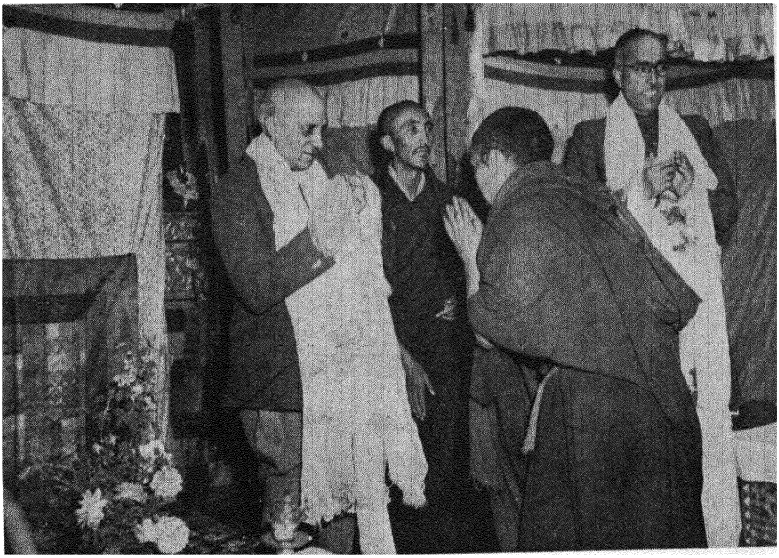

छंद १०७.

Hindi ... Library

धन्य कशमीरी औ' मिताई धन्य भारत की,
धन्य तरुणाई कूदी आग प्रतिशोध में.

धन्य भूमि भारत ये पुरुष पुरातन की,
स्वर्णिम निकाई धन्य पौरुष अबोध में.

धन्य बाल लीला शिशु क्रीड़ा नवभारत की,
राखी मातु आश अभिलाषन प्रबोध में.

शंकर की मिहिर तथागत के पुण्य बल,
मुक्ति बोध छायो धन्य देश मुक्ति-बोध में.

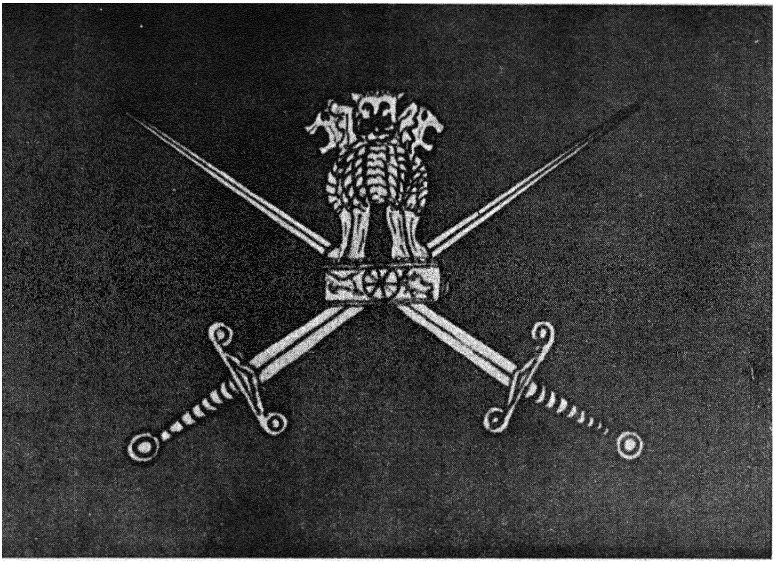

छंद १०८.

धाये बलिभीरन में अंचल हिमंचल में,
मालव कलिंग और केरल के लाड़ले.

उत्तर प्रदेश कुर्ग तामिल व आंध्र देश,
असम मनीपुर के, कोचिन के श्यामले.

हैदर-दकिन, मलबार, मरुदेशिन के,
पूत पंजआबिन के, गोरख के रावरे.

जुगन सनेह मातु, भारत के राजसूय,
कश्यप के मीर जुड़ि आये रण बांकुरे.

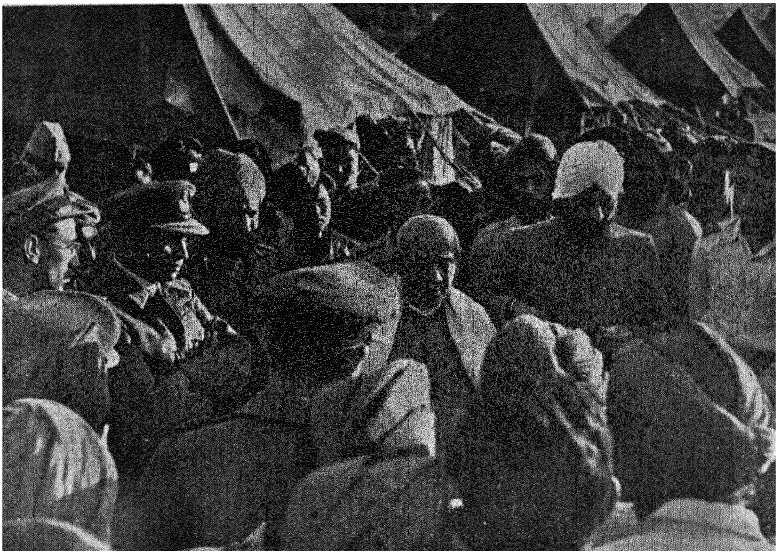

छंद १०६.

कश्यप को मीर सोई, भारत को हीर सोई,
प्रांत कशमीर सोई औघड़ अघट का.

जाके शिल-घाटिन में बानी परतीतैं सिंह,
गीता सरसावैं हिय यौवन सुभट का.

इंजिल की साख मेंड़ बांधी रनधीरन ने,
आयत कुरान गांठ राखो कौल हठ का.

गुरु ग्रंथ साहब पधारे तीर्थ तीर्थन के,
कश्यप के मीर खुली मुक्ति की त्रिपटिका.

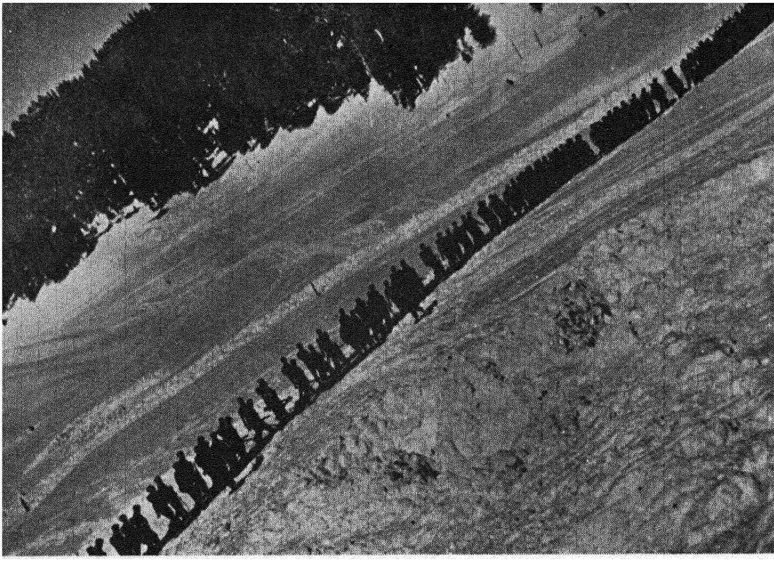

छंद ११०.

जननी जनम भूमि, अंबा जय पुण्य भूमि,
जुगन प्रतापी कीर्ति-चंद्रिका सुहावे जो.

उत्तर अमरनाथ, दक्खिन जगन्नाथ,
शाश्वत सनाथ अर्घ्य अर्चना पुरावै जो.

पूरव में ब्रह्मपुत्र, पच्छिम में सिंधु सिंधु,
अजर विदेह देह, पूर्णिमा जगावे जो.

जाके कण माटिन की धूर धूल शीश फूल,
मस्तक उठावे वही मस्तक चढ़ावे जो.

छंद १११.

तापन प्रताप देत, ज्वार को अगस्त्य देत,
पावक को इंद्र, देत यौवन बसंत को.

मेघन को वज्र और वज्रन को हाड़ देत,
हाड़न को प्राण देत, सौरभ दिगंत को.

प्राणन को मान और मानन को बान देत,
बान बलिदान देत, जीवन ज्वलंत को.

भारती भरत वरदायनी सनेह मूर्ति,
देहन सिंगार देत, नेहन अनंत को.

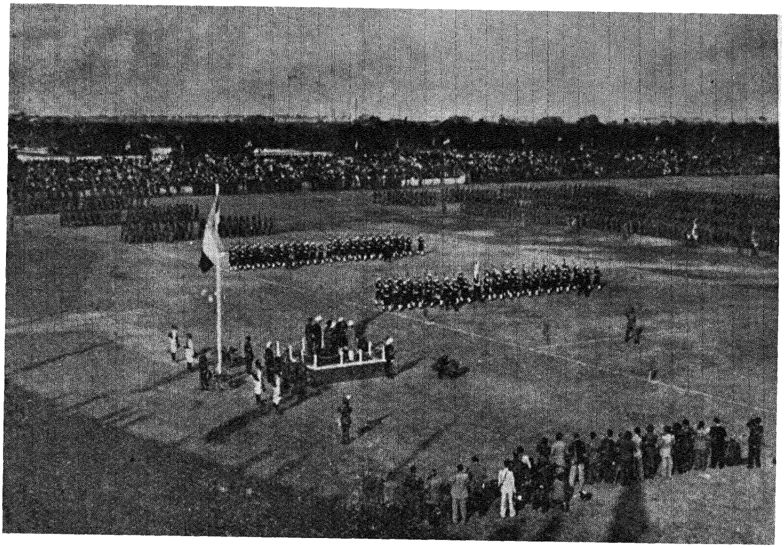

छंद ११२.

भारत के पूत प्रण, मेंटें विधि-आंक बंक,
देहन सनाथ जो बिकाने प्रन गर्व में.

जीवन सनाथ जिन पाये पद मातु नेह,
यौवन सनाथ हुलसाने बलि पर्व में.

पातक नसावन सहीदन रकत-गंग,
सोई ईश भक्ति सोई शक्ति देश धर्म में.

राम कृष्ण गांधी बुध ललित युगान युग,
भेद सूर्य मंडल विराजत हैं स्वर्ग में.